गीता की विश्वव्यापी प्रतिष्ठा

डॉ. हरवंशलाल ओबराय

स्वामी संवित् सुबोधगिरि

डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र

खण्ड 1 : राष्ट्रीय समस्याएं और इतिहास

खण्ड 2 : महापुरुष : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

खण्ड 3 : धर्म-दर्शन-संस्कृति-उत्सव-विज्ञान एवं मनोविज्ञान

खण्ड 4 : वेदान्त दर्शन की वैज्ञानिकता

खण्ड 5 : गीता दर्शन की सार्वभौमिकता

प्रकाशक एवं वितरक :
स्वामी संवित् सुबोधगिरि
श्री नृसिंह भवन
संन्यास आश्रम, भक्तानन्द
शिव मन्दिर
भीनासर 334403
बीकानेर (राजस्थान)
मो. : 09413769139

अन्य पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री सुशील कुमार ताम्बी
प्रज्ञा साधना आध्यात्मिक पुस्तक केन्द्र
A/3 आर्य नगर
एन.के. पब्लिक स्कूल के पास
मुरलीपुरा, जयपुर 302039
फोन : 0141-2233765
मो. : 09829547773

ज्ञान गंगा प्रकाशन
पाथेय भवन,
बी-19, न्यू कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 0141-2371563

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
आप्टे भवन, केशव कुंज, झण्डेवाला
नई दिल्ली 110055
फोन : 011-23675667

जागृति प्रकाशन
श्री कृष्णानन्द सागर
एफ-109, सेक्टर-27, नोएडा 201301
दूरभाष : 0120-2538101
मो. : 09871143768

ISBN 978-81-929055-1-8

प्रथम संस्करण : 2013 ई.
परिवर्धित संस्करण : 2016 ई.

प्रतियां : 1100

मूल्य : अस्सी रुपये मात्र

आवरण : गौरी शंकर आचार्य

मुद्रक :
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

GEETA KEE VISHVVAYAPEE PRATISHTHA : Dr. Harbans Lal Oberai
(Hindi) Edited by Swami Samvit Subodhgiri ₹ 80

प्रकाशकीय

गीता दिव्य आध्यात्मिक संगीत है जिसे साक्षात् भगवान् श्री कृष्ण ने गीत के माधुर्य के साथ गाया है। यह एक दार्शनिक गीत है जिसमें देशीय, कालीय एवं कर्मकाण्डीय तत्त्व न होने से तथा इसके वैचारिक जादू ने न केवल भारतीय मनीषा को वरन् विश्व मनीषा को अपने जन्म लग्न से आज तक आकृष्ट करता आ रहा शाश्वत एवं पूर्ण दर्शन है। इसकी तुलना निर्मल हीरे से की जा सकती है। हीरे से प्रकाश पाने के लिए उसे तराशना पड़ता है। गीता को कर्मयोग की दृष्टि से देखेंगे तो कर्मयोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। ध्यानयोग की दृष्टि से देखेंगे तो ध्यानयोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। भक्तियोग की दृष्टि से देखेंगे तो भक्तियोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। ज्ञानयोग की दृष्टि से देखेंगे तो ज्ञानयोग का पूर्ण प्रकाश मिलेगा। आध्यात्मिक दृष्टि से देखेंगे तो गीता जैसा कोई ग्रंथ नहीं मिलेगा। अवतारी महापुरुषों की दृष्टि से देखेंगे तो भगवान् कृष्ण जैसा कोई व्यक्तित्व नहीं मिलेगा। देश के राष्ट्रीय जागरण व राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम में गीता का अविस्मरणीय योगदान है। भारत के प्रायः सभी स्वातन्त्र्य सेनानियों का यह नित्य पठनीय ग्रंथ रहा है। अहिंसा व हिंसा उभय पथ के समर्थक राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम के पथिकों का प्रेरणास्रोत गीता रही है। महात्मा गाँधी के लिए गीता शान्ति व शक्ति प्रदायनी माता थी। सुभाष बोस की भी गीता में अपार श्रद्धा थी। गीता केवल राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम को ही प्रेरणा देने वाला ग्रंथ नहीं है, इसने अन्तराष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम, अन्तरराष्ट्रीय मैत्री भाव व विश्व-शान्ति को भी सम्बल प्रदान किया है। आज जाने-अनजाने में राष्ट्र एवं विश्व जिन समस्याओं से घिर गया है, उससे उबारने की क्षमता किसी ग्रन्थ में है तो वह भगवद्गीता में है, भगवान् कृष्ण में है। अमरीका का प्रसिद्ध दार्शनिक इमर्सन कहता है—जीव और जगत् की कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसका समाधान गीता के पास न हो। और सचमुच में न केवल आध्यात्मिक, दार्शनिक, धार्मिक, नैतिक जगत् में वरन् जीवन के हर व्यावहारिक क्षेत्र में चाहे वह व्यावसायिक जगत् हो, औद्योगिक जगत् हो, प्रबंधकीय जगत् हो, चिकित्सा जगत् हो, अपराध शमन जगत् हो, खेल जगत् हो, वैज्ञानिक जगत् हो, पर्यावरणीय जगत् हो, युद्ध क्षेत्र हो, शिक्षा जगत् हो इन सभी क्षेत्रों में गीता का सफल प्रयोग हो रहा है। इन सब क्षेत्रों की सफलता में गीता का विशिष्ट अवदान है।

इसमें प्रायः आधी सामग्री डॉ. हरवंशलाल ओबरायजी की है। और आधी सामग्री यत्र-तत्र से संकलित की है और विभिन्न महारुपुरुषों एवं संतों के सान्निध्य में स्वाध्याय, सत्संग का परिणाम है। परिवर्धित संस्करण में सामग्री बढ़ गई हैं। इससे यह पुस्तक और अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

परम पूज्य गुरुदेव स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज के आशीर्वाद एवं सांखला प्रिटर्स के सौहार्द पूर्ण प्रिटिंग कार्य में सहयोग से प्रकाशित हो रही है।

शिवाकांक्षी

—स्वामी संवित् सुबोधगिरि
सम्पादक व संकलनकर्ता
मो. 09413769139

अनुक्रम

भगवान् श्रीकृष्ण का विश्वव्यापी व्यक्तित्व

भगवान् श्रीकृष्ण से अधिक व्यापक एवं सर्वतोमुखी व्यक्तित्व विश्व के इतिहास में सम्भवत: कोई नहीं हुआ होगा। लोक और परलोक, आदर्श एवं यथार्थ, कर्म एवं ज्ञान, प्रवृत्ति एवं निवृत्ति, शक्ति और शील, लीला और मर्यादा, यज्ञ एवं युद्ध, वैभव एवं विरक्ति, राजनीति एवं ब्रह्मज्ञान—सभी में वे चरमोत्कर्ष पर प्रतिष्ठित अलौकिक महाविभूति हैं।

यानी भगवान् श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना अनन्तमुखी है कि यह कहना कठिन है कि वे क्या नहीं थे। योग-योगेश्वर, ज्ञानदाता, सिद्ध, साधक, मित्र, सारथि, रक्षक, राष्ट्रनिर्माता, आदर्श कर्मयोगी, आदर्श प्रेमी, आदर्श शासक, सफल राजनीतिज्ञ, शूर शिरोमणि, मानवता के गौरव, लोकनायक, लोक शिक्षक—वे सभी कुछ थे। पिछले 5000 वर्षों की गंभीर गवेषणा के पश्चात् भी अभी तक उनके बहुरंगी जीवन की अनेक-अनेक अज्ञात दिशायें खोजनी शेष हैं।

भगवान् कृष्ण का व्यक्तित्व इतना मोहक एवं हृदयस्पर्शी रहा है कि अनेक मुसलमान भक्त यथा रसखान, रहीम, बीबी चाँद, उस्मान, नजीर, मुर्तजा अली, ख्वाजा दिल मुहम्मद, रैहाना तैय्यब जी, अनेक सिक्ख गुरुओं एवं अनेक पश्चिमी ईसाई भक्तों एवं संतों ने भी उन्हें एवं उनकी गीता को अलौकिक काव्य पुष्पांजलियां चढ़ाकर पूजा है।

इंडोनेशिया का मुस्लिम नागरिक भी आज तक श्रीकृष्ण भगवान् की मनीषा एवं भीम, अर्जुन के बल-पौरुष की सौगंध खाता है। थाई देश, कम्बोडिया, लवदेश एवं मलाया आदि में असंख्य श्रीकृष्ण मंदिर विद्यमान हैं। नारा (जापान) में मुरली मनोहर श्रीकृष्ण की मूर्ति, आर्मेनिया के प्राचीन कृष्ण मंदिर, मंगोल भाषा में प्रचलित कृष्ण काव्य, अरब में हजरत मुहम्मद के चाचा श्री अबुल हिक्म द्वारा राम-कृष्ण की भूमि (भारत) की वंदना। ईरान, इराक, मिस्र, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, अमेरीका आदि में गीता भक्तों की अलौकिक परम्परा, अणु बम के आविष्कारक डॉ. राबर्ट ओपनहीमर की गीता भक्ति तथा आधुनिक काल में सारे पश्चिमी देशों में कृष्ण भावनामृत संघ (हरे कृष्ण आंदोलन) के माध्यम से सहस्राविधि विदेशियों की श्रीकृष्ण भक्ति एवं अमेरीका में न्यू वृंदावन एवं नवीनपुरी नगरी की स्थापना भगवान् कृष्ण के विश्वव्यापी व्यक्तित्व को स्पष्ट करते हैं।

गीता का विश्वव्यापी प्रभाव

स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविंद से निःसृत, श्रीमद्भगवद्गीता के वैचारिक जादू ने प्राचीनकाल से लेकर आधुनिककाल (यानी आज) तक के समग्र विश्व के मनीषियों को प्रभावित किया है।

मिस्र के पिरामिड—ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र के प्राचीनतम पिरामिडों में शव (ममी) को सुरक्षित रखने के लिए भारतीय मलमल के कपड़े और भारतीय वृक्ष सागवान की लकड़ी का प्रयोग तो होता ही था। आत्मा की अमरता के लिए लिखित गीता में जो श्लोक है—

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। 2/20, गीता

इसका इजिप्सियन भाषा में अनुवाद मिस्र के राजा के पिरामिड के ऊपर सागवान की लकड़ी पर लिखा हुआ पाया गया है।

वेदमूर्ति पंडित श्री दामोदरपाद सातलेवकरजी ने लिखा है—मिस्र देश के पिरामिड में एक लकड़ी की मूर्ति मिली है। इस मूर्ति पर गीता के—

जीवभूतः सनातनः। 15/7, गीता

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः। 15/8, गीता

इस श्लोक का शब्दशः अनुवाद मिला है। इस मूर्ति के साथ जो वस्तुएं उस कब्र में मिली वे भारतीय वस्तुएं थी। (देखो अमरीकन नेशनल ज्योग्राफिकल मेगजीन, अक्टूबर 1941 का अंक)। जीव दूसरा जन्म लेता है, यह पुनर्जन्मवाद मिस्रवासियों के तत्त्वज्ञान में नहीं था। इसलिए मुर्दे को सुखाकर रख देते थे। ऐसे देश की कब्र में भारतीय वस्तुओं के साथ भारतीय विचार, गीता का ही विचार मिलना एक आश्चर्यजनक बात है। यह अनुवाद गीता के श्लोक का ही है, ऐसा वचन दूसरी जगह नहीं है।

यह कब्र विक्रमादित्य से पूर्व तीन सहस्र वर्षों के समय की है।

गीता का राजकीय तत्त्वालोचन, पृष्ठ-6 (7)

यूनान पर गीता का प्रभाव

जिस यूनान को यूरोप अपने विचारों की जननी मानता है वह स्वयं भारत से प्रभावित एवं प्रेरित रहा है। यूनानी दार्शनिकों ने भारतीय दर्शन के प्रभाव के उपरान्त यूनानी दर्शन में आत्मा की अमरता का उल्लेख किया। उसके पहले यूनानी भाषा में आत्मा शब्द नहीं था। यूनानी दर्शन में आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म सिद्धान्त आदि की चर्चा सर्वप्रथम पाइथोगोरस में मिलती है। उसके पूर्व के यूनानी दार्शनिक थेलीज जल को, अनेक्जीमीनर अग्नि को, ऐनेग्जिमिनस वायु को परम तत्त्व के रूप में मानते थे। वे सभी जड़वादी थे।

पाइथोगोरस (550 ई. पूर्व) भारतीय दर्शनधारा से इतना अधिक प्रभावित है कि उसे भारतीय परम्परा में पृथ्वी गुरु कहा जाता है। कुछ लोगों का अनुमान है कि वह भारत की यात्रा पर आया। किन्तु यह निश्चित है कि वह ईरान तक आया था। जहां उस काल में आर्य राजा कुरू (Cyres) साइरस का शासन था और अनेक आर्य ब्राह्मण वहां प्रचाररत थे। यह भूलना नहीं चाहिए कि उस समय तक न ईसा का जन्म हुआ न मुहम्मद का। इसलिए उस काल के पारसी जाति के आर्य होने के साथ-साथ धर्म से भी आर्य थे। ईरान का प्राचीन नाम आर्यान देश था। आर्यावर्त्त और आर्यान की परम्परा एवं पूजा-पद्धति, विश्वास, भाषा एवं जीवन-पद्धति सभी समान थी। अत: पारसी विद्वानों के सम्पर्क में आने का अर्थ भारतीय आर्य विद्वानों के सम्पर्क में आना ही था।

पाइथोगोरस का आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म का सिद्धान्त निश्चित रूप से भारत की ही देन है। संस्कृत का आत्मा शब्द पाली में अत्ता हो गया है। भगवान् बुद्ध की वाणी है—

अत्ताहि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परोसिया।
अत्तना हि सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं।।

अर्थात् आत्मा ही आत्मा का नाथ है, आत्मा के सिवा अन्य नाथ कैसे हो सकता है? अपने आपको अच्छी प्रकार वश में कर लेने पर मनुष्य दुर्लभ नाथ को प्राप्त करता है। यह अत्ता शब्द ही यूनानी भाषा में अतो हो गया है। इससे ग्रीक और लैटिन भाषा में Auto शब्द बना है। इसका अर्थ भी Self आत्मा ही है। जैसे Automatic स्वचालित, Autonomous आत्मनामी, Automobile अपने आप चलने वाली गाड़ी। आत्मा के लिए दूसरा शब्द है—स्व। इससे ग्रीक एवं लैटिन भाषा में शब्द बना है Suicide (स्वसूद यानी स्वयं को मारना) संस्कृत में मधुसूदन का अर्थ मधुदैत्य को मारने वाला, अरिसूदन का अर्थ शत्रुओं को मारने वाला। ग्रीक एवं लैटिन में Couseui का अर्थ है अपना कारण आप

अर्थात् Auto-Self स्वयंभू। इस प्रकार भारत ने यूनान एवं रोम को केवल आत्मा सम्बन्धी विचार ही नहीं दिए बल्कि आत्मा के लिए शब्द भी दिए जो उनके अपने शब्द भण्डार में नहीं थे।

सुकरात के मानस पर भारतीय प्रभाव

युजेबीस (Eusebius) नामक विद्वान् ने अरस्तू द्वारा प्लेटो दर्शन पर लिखित ग्रंथ का उद्धरण दिया है जिसमें यह वर्णन है कि एक भारतीय दार्शनिक एथेंस नगर में आया और सुकरात से दार्शनिक शास्त्रार्थ किया। जब सुकरात ने यह कहा कि दर्शन मानव जीवन के विषय में जिज्ञासा करता है। इस पर भारतीय दार्शनिक मुस्कराया और उत्तर दिया—कोई भी मानव जीवन और उसकी समस्याओं के विषय में तब तक नहीं जान सकता जब तक दैवीय-तत्त्वों के बारे में न जान ले। इससे भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। अलौकिक को जानने के पश्चात् ही लौकिक के रहस्य खुलते हैं। सुकरात इस भारतीय विचारक से बड़ा प्रभावित हुआ। सुकरात भारत के ऋषियों के समान निष्काम एवं निर्लोभ-वृत्ति से जीकर यूनान के युवकों को विवेक से ज्ञान प्राप्त करने की शिक्षा देता था। उसका कथन था Know Thyself, Knowledge is Power. (अपने-आपको जानो, ज्ञान ही शक्ति है।) यह उपनिषदों के आत्मानं विद्धि का ही अनुवाद है। अपनी विवेकपूर्ण दार्शनिक मान्यताओं के लिए बलिदान होने वाला सत्यवीर सुकरात संसार के सभी विवेकशील लोगों के लिए एक महान् आदर्श बन गया।

प्लेटो

सुकरात का योग्यतम शिष्य प्लेटो था। सुकरात के लिखित विचार प्रायः नहीं मिलते। उसके विचारों को लिखित रूप में प्लेटो ने ही अमर बना दिया। वास्तव में प्लेटो का दर्शन मूलतः सुकरात का ही दर्शन है। जिस प्रकार विवेकानन्द का दर्शन उनके गुरु श्रीरामकृष्ण परमहंस का ही दर्शन है।

प्लेटो (427 ई. पूर्व से 347 ई. पूर्व) पाइथोगोरियन विचारधारा का प्रशंसक था। यह माना जाता है कि वह एशिया के देशों की सांस्कृतिक यात्रा पर आया था। वह ईरान तथा सम्भवतः भारत की यात्रा पर आया था। उसका यह मत कि आत्मा जड़ प्रकृति के बंधन में पड़कर अपने आपको भूल जाता है और इससे मुक्ति ही आनन्द प्राप्ति का एकमात्र उपाय है—सांख्यदर्शन के विचार से मिलता-जुलता है। हॉपकिन्स (Hopkins) नामक लेखक का कथन है कि प्लेटो सांख्य विचारधारा से परिपूर्ण है जो उसने पाइथोगोरस के माध्यम से प्राप्त कर उस पर अपना तार्किक चिन्तन किया होगा।

कठोपनिषद् में कहा है—

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रगहमेव च।। (1/3/3)
इंद्रियाणि हयानाहुर् विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर् मनीषिणः।। (1/3/4)

आत्मा को तुम रथी जानो। शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि जानो और मन को लगाम। मनीषी (यानी ज्ञानी) इन्द्रियों को घोड़े बतलाते हैं (और) विषयों को चरागाह। आत्मा के इन्द्रिय और मन से युक्त होने पर उसे भोक्ता कहते हैं।

प्लेटो ने भी रथ और घोड़े की यही उपमा शरीर-इन्द्रिय और आत्मा के वर्णन में प्रयोग की है। यह निश्चय ही भारतीय दर्शन का ही प्रभाव है। अर्विक (Urwick) का विश्वास था कि प्लेटो ने Republic में जो कुछ कहा वह मात्र भारतीय विचारों का पुनर्कथन है।

प्लेटो ने आदर्श समाज को रक्षक, सैनिक और कामगार में विभाजित कर भारतीय वर्ण-व्यवस्था को ही दूसरे शब्दों में प्रस्तुत किया है। Republic के सातवें अध्याय में प्लेटो दृश्यमान जगत् की असत्यता और सत्य की अदृश्यता को समझाने के लिए एक गुफा की उपमा देता है, जिसमें प्रकाश पीछे की ओर से आ रहा है और हमारा मुख दीवार की ओर है। जिस पर हमारी अपनी ही छाया पड़ रही है तथा जिसे हम सच समझकर उसकी ओर लपकते हैं, किन्तु वह सारा दृश्य मिथ्या ही निकलता है। इस प्रकार माया को छाया और सत्य को प्रकाश के रूप में प्रस्तुत करना वैदांतिक विचार है। व्यक्त जगत् अव्यक्त सत्य की ही छाया है। जगत् की सब वस्तुएं प्रारम्भ में अव्यक्त रहती हैं, मध्यकाल में व्यक्त होती हैं और अंत में पुनः अव्यक्त में ही लय हो जाती है—यह गीता का कथन है। व्यक्त वस्तुओं की पहचान के लिए कोई नाम और रूप कल्पित किया जाता है। वह नाम-रूप इन्द्रियगोचर होने के कारण सत् प्रतीत होता है। किन्तु सत् का कभी नाश या लोप नहीं होना चाहिए। असत् सदा टिकता नहीं और सत् कभी मिटता नहीं।

नासतो विद्यते भावो—गीता की इसी कसौटी के आधार पर नाम-रूपात्मक जगत् दिखाई देते हुए भी, इन्द्रियगोचर होते हुए भी अन्ततोगत्वा सत् नहीं प्रमाणित होता। जो दिखाई देते हुए भी वास्तव में न हो उसे ही गीता ने माया तथा शंकराचार्य ने प्रतिभासित कहा है। जगत् भास रहा है किन्तु है नहीं। स्वप्न का संसार भासते हुए भी वास्तविक नहीं। मरुभूमि का जल और रज्जु में सर्प, जल में बिन्दु, लहर, तरंग, वाष्प, नदी, तालाब, सिंधु भासते हुए भी सत् नहीं। क्योंकि उनकी सत्ता त्रिकालाबाधित नहीं है। सत् भासने का कारण भी यही है कि वे भासते समय हमारी सत्ता से कुछ अंश लेकर, नाम-रूप का आवरण ओढ़कर भासने लगते हैं।

यदि रस्सी और अंधेरा न हो तो सर्प की भ्रान्ति कैसे हो? सारी जादूगरी जादूगर पर टिकी हुई है। सारे जल के विकार जल पर ही टिके हुए हैं। किन्तु नाम-रूप के आवरण से वे जल तत्त्व को ढककर जल की क्षणिक प्रतिभासिक सत्ता से ही सत् जैसे दिखाई देते हैं। कबीर ने भी माया की छाया के साथ उपमा दी है—

माया छाया एक सी विरला जाने कोय।
भक्ता के पीछे फिरे सम्मुख भागे सोय।

प्लेटो ने भारतीय दर्शन के इस तत्त्व को ऐसी ही सुन्दर उपमा से समझाया। गुफा के द्वार पर सूर्य का प्रकाश या यज्ञ-अग्नि का प्रकाश है। हमारे हाथ संसार की भोग-विलास की हथकड़ी से बंधे हुए हैं। पीछे के प्रकाश से हमें अपनी ही छाया सामने दीवार पर पड़ती दिखाई देती है। पीछे मुड़कर देखने में असमर्थ हम छाया को ही सत् मानकर उसकी ओर लपकते हैं पर हाथ कुछ नहीं लगता। प्लेटो ने इस यूनानी कथा को भी प्रतीकात्मक रूप से स्वीकार किया है कि ज्यूज (Zeus) नामक देवता द्वारा Phanes को निगल जाने के पश्चात् एक संसार-रूपी विशाल अण्डा हुआ जिसमें सारी सृष्टि प्रकट हुई। यह मनुस्मृति में वर्णित हिरण्यगर्भ रूपी एक सुनहले अण्डे (ब्रह्माण्ड) का ही वर्णन है जिसमें से ब्रह्मा और सारी सृष्टि उत्पन्न हुई।

रोलिनसन (Rawlinson) नामक इतिहासकार का कथन है कि ये समानताएं इतनी अधिक निकट और मिलती-जुलती हैं कि उन्हें एक आकस्मिक घटना कहकर टाला नहीं जा सकता। प्लेटो की भाषा और उपनिषदों में कभी-कभी विस्मयकारी समानता दिखाई देती है। गार्वे का यह कथन बहुत सच है कि यूनानी विचार जगत् ईरान के माध्यम से भारतीय विचारधारा से प्रभावित हुआ और सांख्य और वेदांत के दर्शन भारत से ही यूनान में पहुंचे।

प्लेटो ने काव्यात्मक प्रतिभा के साथ अपने विचारों को बड़े रोचक वार्तालाप में प्रकट किया। लानाकूपर (Lana Cooper) के मत में वार्तालाप शैली नाटक के बाद यूनानी प्रतिभा द्वारा आविष्कृत सबसे श्रेष्ठ साहित्यिक शैली है। वास्तव में प्लेटो से बहुत पहले काव्यात्मक वार्तालाप शैली में आध्यात्मिक रहस्यों को प्रकट करने की परम्परा भारत में प्रतिष्ठित हुई थी। स्वयं वेद ही काव्यमय आध्यात्मिक-ग्रंथ है। उपनिषद् एवं गीता में काव्यात्मक वार्तालाप में आध्यात्मिक तत्त्वों का निदर्शन है। गीता में काव्य-संगीत, कथोपकथन के साथ-साथ नाटकीय तत्त्व भी हैं। इसलिए प्लेटो अपनी आध्यात्मिक कविताओं व काव्यात्मक कथोपकथन शैली के लिए भारत के ही ऋणी हैं।

उपनिषद् में नारद एवं सनत्कुमार का रोचक संवाद है जिसमें देवर्षि नारद पांच वर्ष के ब्रह्मज्ञानी बालक सनत्कुमार से प्रार्थना करते हैं कि उन्होंने सब विद्याएं प्राप्त

कर ली हैं फिर भी उन्हें शान्ति नहीं मिली। नारदजी अपनी सारी विद्याएं गिनाते हैं। इस पर सनत्कुमार पूछते हैं नारदजी से कि आपने सब कुछ जान लिया तो जानने वाले को भी जाना कि नहीं? इस प्रकार नारदजी को अपनी भूल का भान होता है। सनत्कुमारजी बताते हैं दृश्य का सारा ज्ञान अपरा-विद्या (छोटी विद्या) है। इससे ऊपर पराविद्या है जिसमें द्रष्टा का ज्ञान, ज्ञाता का ज्ञान प्राप्त होता है। हूबहू ऐसा ही सम्वाद प्लेटो तथा उनके शिष्य अरस्तू के बीच हुआ। अरस्तू ने सब विज्ञानों का अध्ययन करने के पश्चात् फिजिक्स पर अध्ययन करके पूछा कि मैंने पदार्थ और ऊर्जा का पूरा अध्ययन कर लिया है। फिर भी मुझे लगता है कि बहुत कुछ छूट गया है। तब प्लेटो मुस्कराकर कहता है कि फिजिक्स के अध्ययन से ऊपर एक अन्य विद्या है जिसका नाम Metaphysics है। Physics से लौकिक शक्ति प्राप्त होती है और Metaphysics से आध्यात्मिक-शान्ति। यह स्पष्ट ही अपराविद्या-पराविद्या का भेद, दृश्य और द्रष्टा का भेद, जगत् और जगदीश्वर का भेद है।

अरस्तू

प्लेटो का शिष्य अरस्तू एक महान् मेधावी एवं ज्ञान की सब विधाओं में प्रवेश रखने वाला सर्वस्पर्शी, प्रतिभासम्पन्न महापुरुष था। उसकी Politics ने आधुनिक राजनीति दर्शन की नींव रखी। उसकी Politics में दुखांत नाटकों की एकता के प्रथम बीज मिलते हैं। उसका On the Soul विषय का निबंध आधुनिक मनोविज्ञान की नींव बन गया। वह प्रथम मार्गदर्शक जीव-वैज्ञानिक भी था। वह विचारों के सम्बन्ध और साहचर्य के सिद्धान्त का भी द्रष्टा था। वह अनेक विज्ञानों का प्रथम वैज्ञानिक तथा अनेक विचारों का प्रथम विचारक माना जाता है। प्लेटो स्वयं उसे अपने विद्यालय की प्रतिभा Intellect of School मानता था और विचार जगत् उसे Father of all Sciences मानता है।

मेकेदोनिया के राजा फिलिप ने अपने होनहार पुत्र सिकन्दर को अरस्तू के पास शिक्षा के लिए समर्पित किया। उसने अरस्तू के जन्म के नगर Stargirite का पुनर्निर्माण करा दिया। सिकन्दर कहता था—'मेरे पिता ने मुझे जन्म दिया पर गुरु अरस्तू ने मुझे जीवन को योग्यतापूर्वक जीना सिखाया। मेरे पिता मुझे स्वर्ग से धरती पर लाए, गुरु ने पुनः स्वर्ग प्राप्ति का रास्ता बताया।' इस गुरु-भक्ति में भारतीय परम्परा की ही छाप है। सिकन्दर ने अपने गुरु को गुरुदक्षिणा में धन-सम्पत्ति के अतिरिक्त अत्यन्त अमूल्य ग्रंथों की पाण्डुलिपियां भी भेंट कीं जो उसे अपने शासन एवं दिग्विजय के काल में प्राप्त हुई। सिकन्दर ने अपने गुरु की जीव-वैज्ञानिक खोजों के काल में एक हजार व्यक्ति सहयोग के लिए दिए, जो पशु-पक्षियों और जलचरों की आदतों का अध्ययन कर अरस्तू के वैज्ञानिक विषय-लेखन में सहयोग करते थे।

अरस्तू स्वयं पश्चिम का महानतम विचारक एवं वैज्ञानिक होते हुए भी भारतीय ज्ञान के लिए ललक रखता था। मेकरिनल नामक प्रसिद्ध लेखक ने सिकन्दर के आक्रमणों पर एक पुस्तक लिखी। मैगस्थनीज नामक इतिहासकार ने अपने ग्रंथ Indica में उसका उद्धरण देते हुए लिखा है कि सिकन्दर जब भारत पर आक्रमण के लिए निकला तब उसके गुरु अरस्तू ने उसे आदेश दिया कि वह भारत से लौटते समय उसके लिए दो उपहार लेकर आये—एक गीता और दूसरा भारत का श्रेष्ठ संत। सिकन्दर जब भारत से लौटने लगा तब उसने ओनियोक्रोटस नामक अपने प्रतिनिधि को एक भारतीय संत को ढूंढ़कर साथ ले चलने के लिए भेजा। एक संत तो साथ चल पड़ा परन्तु दूसरे ने जिसका नाम डेंडीमीज था, लिखा है—साथ चलने के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ। डेंडीमीज का भारतीय नाम दण्डी स्वामी हो सकता है। सिकन्दर के दूत ने कहा, 'जूपीटर का पुत्र आपको धन से मालामाल कर देगा। भारतीय संत ने हंसकर उत्तर दिया—'हमारे रहने के लिए शस्य श्यामला भारत है, पहनने के लिए वल्कल वस्त्र, पीने के लिए गंगाजल, खाने के लिए पावभर आटा बहुत है। हम आत्मधन के धनी हैं। वह आध्यात्मिक दृष्टि से दरिद्र सिकन्दर हमें क्या दे सकता है!'

सेना के अधिकारी पसोपेश में पड़ गये सम्राट् सिकन्दर महान् के निमंत्रण को आज तक किसी ने अस्वीकार करने का साहस नहीं किया था। उन्हें चिन्ता हुई कि वे लौटकर क्या उत्तर देंगे! सिकन्दर ने चलते समय यह भी कह दिया था कि संन्यासी से जोर-जबरदस्ती न की जाए। उन लोगों ने बहुत अनुनय-विनय किया, परन्तु महात्माजी नहीं गये।

सिकन्दर ने सोचा कि गुरु की बात परखने का अच्छा मौका है। उसने आदेश की प्रतिक्षा में खड़े अधिकारियों से गम्भीरतापूर्वक इतना ही कहा कि वह स्वयं ही जायेगा।

अगले दिन वह सैकड़ों घोड़े, हाथियों तथा सैनिकों के साथ सन्त की पर्णकुटी पर पहुँचा। जाड़े के दिन थे, तेज ठण्डी हवा चल रही थी। वैसे भी पंजाब की सर्दी कड़ी होती है। उसने देखा—वे सिर्फ लंगोटी लगाये ध्यान बैठे हैं। वह आगे बढ़ा और अपने सेनापतियों के साथ निकट जाकर खड़ा हो गया, तो भी महात्माजी का ध्यान न टूटा। उनके चेहरे पर ऐसी आभा दिखाई पड़ी कि विश्वविजेता सिकन्दर आत्मविस्मृत-सा उन्हें देखता रहा। कुछ देर बाद समाधि भंग हुई। भेंट में लाये हुए फल-फूल, शाल-दुशाले, रत्न आदि सोने के थालों में सजाकर उनके सामने रख दिये गये।

महात्माजी ने कहा—'भाई, मुझे वृक्षों से सर्वदा ईश्वर के दिये ताजे फल मिल जाते हैं। पीने के लिए माता रावी दूध के समान स्वच्छ जल दे देती हैं। दिन में

भगवान सूर्य गरमी पहुँचा देते हैं और रात में कुटी में जाकर बल्कल ओढ़ लेता हूँ। फिर भला, मुझे इन चीजों की क्या आवश्यकता?'

सिकन्दर बोला—'इतनी ठण्डी हवा चल रही है और आपके शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं, हम पाँच-पाँच गर्म कपड़े पहने हुए हैं, तो भी सर्दी लग रही है।' महात्माजी का उत्तर था—'राजन्, यह तो अभ्यास की बात है। जैसे, तुम्हारी नाक और मुँह को ठण्ड सहने का अभ्यास हो गया, वही बात मेरे सारे शरीर पर लागू होती है।'

सिकन्दर घुटने टेककर उनके पास बैठ गया। वह कहने लगा—'महाराज मैंने इतने सारे देश जीते, मेरे पास अपार धन है और असंख्य दास-दासियां हैं; तो भी, न जाने क्यों मेरे मन में अशान्ति बनी रहती है, और अधिक पाने की लालसा मिटती नहीं।' महात्माजी ने उसके ललाट की ओर देखते हुए कहा—'युवक सम्राट्! जिसकी तृष्णा नहीं मिटी, वह चाहे कितना ही धनी हो, मन से भिक्षुक ही होता है, यह बात तुम पर भी लागू होती है। अपनी महत्त्वाकांक्षा के आवेश में तुमने इस छोटी-सी आयु में कितनी महिलाओं को विधवा किया, बच्चों को अनाथ बनाया, नगर तथा गांव उजाड़ दिये, मगर अतृप्त ही रहे। अब भी तुम्हारे मन में इसी प्रकार की भूल करने की प्रबल इच्छा है। परन्तु यह सब किस लिए? ये सारे धन-दौलत, फौज-हथियार तुम्हारे काम नहीं आयेंगे। जीवन की अवधि को एक पल भी नहीं बढ़ा पायेंगे।'

सिकन्दर के साथी आश्चर्य कर रहे थे कि जिसके सामने बड़े-से-बड़े पराक्रमी योद्धा, राजा और सम्राट् सिर झुकाते रहे, वही आज एक मामूली फकीर के सामने हाथ बाँधे कह रहा है कि मेरा भविष्य क्या है, इसे बताने की कृपा करें?

महात्माजी थोड़ी देर मौन रहे। फिर उन्होंने कहा, 'लगता है तुम जीवन की उपलब्धियों की सीमा परा आ गये हो। इस समय तुम्हारी आयु 33 वर्ष की है। आज से 120 दिन बाद तुम्हारा ऐहिक जीवन समाप्त हो जायेगा। दुर्योग से तुम अपने परिवार से भी नहीं मिल सकोगे, क्योंकि तुम्हारी मृत्यु रास्ते में एक गांव में होगी। जीवन के इस थोड़े से समय को यदि भगवद्-भजन और अच्छे कामों में लगा सको, तो तुम्हें शान्ति मिलेगी। आज तक जोर-जुल्म कर बहुतों से लिया, अब जरूरतमन्दों और दीन-दुखियों को देने का आयोजन करो। इसी में तुम्हारा कल्याण है। यह शाश्वत सत्य है कि धन और धरती किसी के साथ जाती नहीं। मनुष्य जैसे खाली हाथ आया है, वैसे ही संसार से चला जाता है।'

महात्माजी का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि सिकन्दर महान् पूर्वी भारत के अपने विजय-अभिमान को बीच में छोड़ वहीं से वापस लौट गया। उसके मन में एक भय-सा छा गया था कि महात्माजी के बताये हुए दिन उसकी मृत्यु हो जायेगी।

कहते हैं कि आखिरी दिनों में उसके मनोभावों में परिवर्तन आया था। वह पहले जैसा नहीं रह गया, जिसकी भृकुटी मात्र से बड़े-बड़े सेनापति और राजा आतंकित हो उठते थे।

प्रसिद्ध है कि बेबीलोन के एक गांव में अपनी मृत्यु के दिन सम्राट् ने सभी दरबारियों एवं सेनानायकों को बुलाकर आदेश दिया—मृत्यु के बाद सभी जवाहरात, आभूषण, हाथी, घोड़े, रथ और मेरी निजी तलवार मेरे शव के पास सजा देना। ध्यान रहे, दोनों हाथ चादर से बाहर निकले रहें कि ताकि लोग देख सके कि विश्वविजेता सम्राट् अपना सारा वैभव पृथ्वी पर छोड़कर खाली हाथों जा रहा है।

ईसा के मानस पर गीता का स्पष्ट प्रभाव—यह छह बिन्दुओं से दर्शाया जा सकता है—

(क) ईसा के पूर्व मध्यपूर्व के देशों में भारतीय प्रचारक।

(ख) ईसा के देश में भारतीय आर्यों का शासन।

(ग) क्या ईसा स्वयं भारत में शिक्षा पाने आये?

(घ) क्या ईसा का स्वर्गवास भारत में ही हुआ?

(ङ) ईसा के जीवन पर कृष्ण का प्रभाव और ईसा के संदेश पर गीता की छाप।

(च) ईसा के जीवन पर बुद्ध का प्रभाव और ईसा के दर्शन पर बौद्ध धर्म की छाप।

यह कम लोगों को ज्ञात है कि ईसा से दो शताब्दी पूर्व यूफ्रेटीज नदी के ऊपरी तट पर वान-झील के पश्चिम में एक हिन्दू उपनिवेश था, जिसमें हिन्दू मन्दिर बने हुए थे, जिनमें एक कृष्ण का मंदिर भी था। चौथी शताब्दी में सेंट ग्रेगरी ने अपने अनुयायियों की सहायता से हिन्दू उपनिवेश को पराजित करके हिन्दू-मन्दिरों को गिरवा दिया था। इसका उल्लेख आर.सी. मजूमदार ने India's contribution to world thought and culture नामक अपनी पुस्तक की भूमिका में किया है। उस पुस्तक में जो स्वामी विवेकानन्द की शती में प्रकाशित हुई।

मध्यपूर्व में गीता के अवतार सिद्धान्त का प्रभाव

महात्मा ईसा का नाम जीसस जो धीरे-धीरे यीशु, ईसा आदि रूढ़ हो गया। क्राइस्ट उनका नाम न होकर Title उपनाम या उपाधि नाम था।

कृष्ण से कृष्टो शब्द बना।

कृष्ण और ईसा के चरित्र एवं उपदेशों में समानता

ईसाई पादरियों द्वारा गीता को बाइबिल के Sermon of mount के बाद का, उससे प्रभावित बतलाना। गीता और बाइबिल में समानता। लोकमान्य तिलक का पादरी लारेन्सर को उत्तर।

जो प्राचीन होगा वही नवीन को प्रभावित करेगा।

कृष्ण एवं गीता की प्राचीनता ईसा एवं बाइबिल से निर्विवाद है।

ईसा युग के चार शताब्दी पूर्व सेल्युकस का ग्रीक राजदूत मैगस्थनीज भारत आया था एवं महाराजा चन्द्रगुप्त के दरबार में रहा। उसके अभिलेखों में पुरायुगीन भारत में कृष्ण की उपासना से सम्बन्धित अधिकतम ऐतिहासिक प्रामाणिक तथ्य उद्घाटित हुए हैं। मैगस्थनीज ने कृष्ण को भारतीय हरक्युलस कहा। उसका कथन है कि शारीरिक एवं आत्मिक शक्ति में कृष्ण सर्वश्रेष्ठ मानव थे। उन्होंने सम्पूर्ण संसार से दुष्कर्म का नामोनिशान मिटा अनेक नगर स्थापित किए एवं उनकी मृत्यु होने पर उन्हें दैवी सम्मान प्रदान किया गया। मैगस्थनीज ने कृष्ण के जन्म स्थान मथुरा नगर का उल्लेख किया।

गीता तत्त्वचिन्तन में अभेदानन्दजी के लेख से, पृष्ठ 284

मैगस्थनीज का कहना है कि डायोनिसियस से चन्द्रगुप्त तक 153 पीढ़ियां हो चुकी हैं और डायोनिसियस से 15 पीढ़ी बाद हिरक्लीज हुआ। इसका अर्थ यह हुआ कि चन्द्रगुप्त से 153-15=138 पीढ़ी पूर्व हिरक्लीज अर्थात् श्रीकृष्ण हुए। 138 पीढ़ियों में कितना समय गुजरा? ऐतिहासिक लोग प्राचीन वंशों की गणना करते हुए एक पीढ़ी को 20 वर्ष का समय देते हैं। इस प्रकार चन्द्रगुप्त से 138×20=2,760 वर्ष पूर्व हिरक्लीज यानी श्रीकृष्ण हुए। चन्द्रगुप्त का क्या काल है? चन्द्रगुप्त का काल ईसा से 312 वर्ष पूर्व माना जाता है। ऐसी हालत में हिरक्लीज अर्थात् श्रीकृष्ण ईसा से 2,760+312= 3,072 वर्ष पूर्व हुए। आजकल ईस्वी सन् 2012 चल रहा है इसलिए श्रीकृष्ण आज से 3072+2012= 5084 वर्ष पूर्व हुए। यही गीता का काल है।

वही, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, पृष्ठ 317

ईसा के सन्देश पर भारतीयता की छाप—आचार्य नरदेव शास्त्री लिखते हैं—मैंने बाइबिल को कई बार आद्योपान्त पढ़ा है। उसमें कैसे-कैसे भावपूर्ण सुन्दर उपदेश हैं, वे उपनिषदों के सार हैं, ऐसा प्रतीत होता है।

ईसाई धर्म में जो ईसा पर ईमान लाने की बात कही गई है वह विशुद्ध भारत की है। वह भगवान् कृष्ण की उक्ति की ही पुनरुक्ति है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। 18/66, गीता

नजरथ का वह महान् पैगम्बर पूछता है—'जब स्वर्ग तुम्हारे अन्तर में विराजमान है तो उसे ढूंढ़ने को अन्यत्र कहां जा रहे हैं।'

एक और स्थान पर अध्यात्मवादियों की भांति ईसा कहते हैं—उन वस्तुओं से मत डरो जो शरीर को मारने वाली हैं, उससे बढ़कर और कुछ नहीं कर सकती।

डा. लारिन्सर गीता के जर्मन अनुवाद की पुस्तक में गीता और बाइबिल के भावों में साम्य दिखलाते हैं, उदाहरणार्थ—

ईसा भी भगवान् कृष्ण की भांति उस साधना का उपदेश देते हुए कहते हैं—'उस दिन तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि मैं अपने पिता में वर्तमान हूं। तुम मुझ में वर्तमान हो व मैं तुम में वर्तमान हूं। क्या तुम्हें याद है?'

येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि। 4/35, गीता

एक अन्य स्थान पर ईसा कहते हैं—'जो मुझे प्यार करता है वह मेरे पिता का प्यारा होगा और उसे प्यार करेगा।'

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः। 7/17, गीता

वेदान्त का प्रभाव

अपनी महान् वाणी से ईसा ने जगत् में घोषणा की, 'दुनिया के लोगो! इस बात को भलीभांति जान लो कि स्वर्ग का राज्य तुम्हारे अभ्यन्तर में अवस्थित है, मैं और मेरा पिता अभिन्न हैं। साहस कर खड़े हो जाओ और घोषणा करो कि मैं केवल ईश्वर तुल्य ही नहीं स्वयं ईश्वर हूं। अपने हृदय में मुझे प्रतीति हो गई है कि मैं और मेरा पिता एक और अभिन्न हैं।'

सुविज्ञ पाठक इसमें भगवान् शंकराचार्य के जीवो ब्रह्मैव नापरः तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि, सोऽहम् की प्रतिध्वनि स्पष्ट सुन सकते हैं।

ईसा पर भारत के योगियों का भी प्रभाव था जिसकी झलक बाइबिल में दिखाई देती है। डॉ. पाल ब्रनटन ने अपनी पुस्तक Hidden Teaching Beyond yoga. P. 55 में इस प्रकार लिखा है—

इन्जील (न्यू टेस्टामेंट) के खण्डों के ध्यानपूर्वक अनुशीलन, अध्ययन से यह प्रकट होता है कि यद्यपि उनमें अधिकांश को सरलता से निम्नलिखित श्रेणी तक शुद्ध मजहबी विषय के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है तथापि उनमें होकर उच्च श्रेणी के रहस्यवाद की भी एक हलकी-सी धारा लगातार प्रवाहित हो रही है। स्वर्गिक राज्य तुम्हारे भीतर है। (इस वाक्य का) तनिक-सा भी सम्बन्ध शासकीय मजहब से

नहीं है और यह पूर्णतया योगियों तथा रहस्यवादियों के अनुभव की ओर संकेत करता है। (उद्धृत-परमेश्वर पुत्र ईसा—ले. जगदीश्वर प्रसाद, वानप्रस्थ, पृष्ठ 60)

बौद्ध धर्म का प्रभाव

लोकमान्य तिलक के मतानुसार महात्मा ईसा पर बौद्ध धर्म का भी पर्याप्त प्रभाव है—ईसा से 2000 वर्ष पूर्व एशिया, एसीन नामक संन्यासियों का पंथ यहूदियों के देश में था। वे अहिंसा तथा ब्रह्मचर्य का पालन करते थे और मद्य-मांस से दूर रहा करते थे। उनका प्रधान मठ मृत समुद्र के पश्चिमी किनारे एंगदी में था। स्वयं ईसा ने इनका मान्यतापूर्वक वर्णन किया है। ईसा ने स्वयं भी सम्भवतः इसी धर्म की दीक्षा ली।

दत्त साहब ने अपने इतिहास में बौद्ध और ईसाई धर्म की अद्‌भुत समानता के अनेक उदाहरण दिए हैं।

ईसाई धर्म में अहिंसा, जीवदया, करुणा, मैत्री, प्रेम और सेवा जैसे महान् नैतिक आदर्श सीधे बौद्धधर्म से उधार लिए हुए हैं।

इस प्रकार महात्मा ईसा और उनके ईसाई धर्म पर भारत एवं भारतीयता की छाप इतनी गहरी है कि सहज ही मैथिलीशरण गुप्त के मुख से निकल पड़ता है—

था हिन्दुओं का शिष्य ईसा यह पता भी चला
ईसाईयों का धर्म भी है, बौद्ध सांचे में ढला।

रामकृष्ण मिशन के स्वामी प्रभवानन्दजी ने इस विषय पर स्वतंत्र रूप से शोध कर पुस्तक लिखी है—The Sermon on the mount according to vedanta जिसमें स्पष्ट रूप से बाइबिल पर गीता और वेदान्त का प्रभाव दिखलाया है।

अरब पर भारतीय प्रभाव—इस्लाम से पूर्व अरब के मानस पर हिन्दू संस्कृति ने अपनी महान् छाप छोड़ी है।

अरब में इस्लाम के उदय के पूर्व अनेक भारतीय (विशेषकर ब्राह्मण) बड़ी संख्या में रहते थे। मक्केश्वर महादेव की पूजा करते थे। स्वयं हजरत मुहम्मद के चाचा अबुल हिक्म की भारत एवं शिव की स्तुति में लिखी हुई कविताएं प्राप्त हुई हैं। वहां की प्राचीन कविताओं में विक्रमादित्य, वेद, भगवान् कृष्ण, वेदव्यास और भारत की स्तुतियां भी मिलती हैं।

अरब में आज से लगभग 3000 वर्ष पूर्व आकाश से गिरने वाले तारे के गर्म लावे से एक अर्ध-गोलाकार शिवलिंग बन गया था। उसकी पूजा खजूर की पत्तियों एवं आबेजमजम के पानी से होती थी। पुजारी कुरैशी कहलाते थे। हजरत मुहम्मद स्वयं कुरैशी थे किन्तु अशिक्षित थे। मिर्गी के दौरे पड़ते थे। एक अनपढ़ ऊंट चराने वाले थे।

केन्द्रीय पिंड के चारों ओर 360 देवता थे। इसमें नवग्रह, दुर्गा देवी की मूर्तियां थी, बोधिसत्व की मूर्तियां थी, बुद्ध की मूर्तियां थी। मैक्समूलर का कहना है बुद्ध शब्द से अरबी का बुत शब्द बना हुआ है।

हजरत मुहम्मद साहब का मंदिर के पंडाओं से विरोध होने पर सब मूर्तियां तोड़ दी गई। किन्तु बड़े संगे-अस्वद की मूर्ति को तोड़ नहीं पाए वरन् उसे चूमा। खजूर की पत्तियों एवं आबेजमजम के पानी से इनकी पूजा (ईडा) की। और आज भी हज यात्रा में प्रकारान्तर से शिव अर्चना ही करते हैं और अरबी भाषा पर संस्कृत का प्रभाव अभी भी इन शब्दों में देखा सकता है—

मखः (यज्ञ)	से मक्का
अश्वेत (काला)	संगे-अस्वद (काला पत्थर)
नमाष्ट	नमाज
ईडागृह	से ईदगाह
शिवरात्रि (शिव की बरात वाली रात्रि)	शबे बारात (शबे=रात्रि)
गंगाजल	आबेजमजम (मक्का का वह पानी का स्रोत जिसके जल में कीड़े नहीं पड़ते)।
बिल्व पत्र	खजूर की पत्तियों से पूजना
तीर्थयात्रा में पवित्र, नया वस्त्र धोती पहनना	हज में नए सफेद वस्त्र बिना सिले हुए धोती (बिना लांग) एवं चद्दर
तीर्थ में सिर मुण्डन	हज में सिर मुण्डन
तीर्थ में मन्दिर की परिक्रमा	काबा के मन्दिर की परिक्रमा
उपवास	उपवास, रोजा
शंकर के मस्तक पर शशिकला	नया चन्द्रमा अरब एवं मुस्लिम देशों का ध्वज चिह्न
दो प्रकार के शिव पूजन	असुर भाव से शिव पूजन के कारण
(1) सात्विक भाव शंकराचार्य, मार्कण्डेय—सोमवार पवित्र	असुर गुरु शुक्राचार्य के शुक्रवार की विशेष जुमा
(2) आसुरी भाव—रावण, त्रिपुरासुर, भस्मासुर, शुक्राचार्य	समूह की नमाज पवित्र शुक्रवार

अरब में बसे हुए एक ब्राह्मण परिवार में ही एक महान् ज्योतिष हुआ जिसका नाम यवनाचार्य प्रसिद्ध है और जिसका भारतीय ज्योतिष-ग्रंथों में उल्लेख है।

मुहम्मद पैगम्बर—भारत से मुझे दिव्य सुगंधि मिलती है।

स्वयं अरब नाम पर संस्कृत भाषा का प्रभाव है। अरब अच्छे नस्ल के घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था। इसी आधार पर 'अर्ब' से अरब नाम पड़ गया।

कुरान पर गीता का स्पष्ट प्रभाव पड़ा जिसे सुन्दरलाल ने 'गीता और कुरान' पुस्तक में दर्शाया है। सूफियों की वाणी में गीता की गूंज है।

वेद एवं गीता में प्रतिपादित प्रणव (ओमकार) ॐ विश्वव्यापी स्वाभाविक दिव्य ध्वनि है। जो शंखनाद, प्रणव ध्वनि, योगियों के अनहद नाद से लेकर लैटिन भाषा के omni present omniscent, omnipotent शब्दों में भी सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान के पीछे के 'सर्व' का सूचक है। तथा ईसाई एवं इस्लामी प्रार्थना के अन्त में उच्चारित हिब्रू (यहूदी) शब्द आमीन में गूंज रहा है। अब इसरो के वैज्ञानिक पाण्डे भी स्वीकारने लगे हैं कि सूर्य की रश्मि में स्पष्ट तीन ध्वनियां 'अ+ऊ+म् सुनाई पड़ रही हैं। अतः हनुमानजी एवं याज्ञवल्क्य ऋषि ने सूर्य की उपासना से वेद ज्ञान प्राप्त किया यह पौराणिक नहीं ऐतिहासिक तथ्य है। सूर्य की रश्मियों में वेद ज्ञान निहित है। मेरे परम पूज्य गुरुदेव स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज कहते हैं सूर्य के केन्द्र में यजुर्वेद के मन्त्र हैं। परिधि में ऋग्वेद के मन्त्र हैं। इसकी रश्मियों में सामवेद के मन्त्र हैं। जिसका ऋषियों ने प्रत्यक्ष दर्शन किया है। हमारे सूर्य से निरन्तर वाइब्रेशनस् (vibrations) निकल रहे हैं। इसी कारण सूर्य को वेदात्मा भी कहा जाता है। वेद प्रकट होने से पूर्व (प्रणव) ओम रूप में था।

अलबेरूनी

महमूद गजनवी भारत में अपने साथ बुखारा के राजकुमार अलबेरूनी को कैद करके लाया था। अलबेरूनी का यहां के हिन्दू विद्वानों से गहरा लगाव था। उसने महमूद गजनवी की कैद में रह कर ही युद्धकाल में बड़ी कठिनाई से संस्कृत, ज्योतिष, गणित आदि पढ़ी। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारत' (जो तात्कालिक हिन्दुस्तान का चित्र है) में उसने भगवद्गीता के कई श्लोक उद्धृत किए हैं। उसने गीता को आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ी उच्चकोटि की पवित्र पुस्तक बताया।

जहां महमूद गजनवी जो सिर्फ इस देश को तबाह-बरबाद करने और लूटने में ही इस्लाम की सेवा समझता था, वहीं अलबेरूनी एक खोजी लेखक था जो महमूद गजनवी के साथ ही आया था। पर उसने यहां के एक बच्चे तक को न सताया वरन् जो कुछ वह अपने जीवन में सीख सकता था, उसकी शिक्षा ली और भारत पर पुस्तक लिख डाली।

रहीम ने अपने प्राण प्यारे मनमोहन की स्तुति में संस्कृत के सुन्दर सुस्वर गीत गाए हैं—

रत्नाकरस्तव गृहं, गृहिणी च पद्मा, किं देयमस्ति भवते जगदीश्वराय।
आभीर वामनयनाहृत मानसाय, दत्तं मनो, यदुपते कृपया गृहाण।।

अर्थात्, हे जगदीश्वर! आप क्षीरसागर रूपी रत्नों के भण्डार (रत्नाकर) में रहते हैं, सारे संसार की सुख-समृद्धि, धन धान्य की अधिष्ठात्री देवी, लक्ष्मी आपकी गृहिणी हैं। हे सृष्टि के स्वामी! मैं आपको क्या भेंट करूं? हाँ, आपके पास सबकुछ है किन्तु आपका मन व्रज की भोली-भाली पवित्रमना गोप-बालाओं ने चुरा लिया है। अतः हे भगवान्! मैं आप को अपना मन ही भेंट करता हूँ। हे यदुपते! कृपया इसे स्वीकार कीजिएगा, ठुकराइएगा मत। इसमें गीता के 12वें अध्याय के आठवें श्लोक की प्रतिध्वनि है। जिसमें भगवान् कृष्ण अर्जुन को मन-बुद्धि रूपी दो फूल समर्पित करने को कहते हैं।

एक अन्य पद्य में भक्त रहीम की मुक्ति के लिए प्रस्तुत की गई युक्ति, सारे भक्ति साहित्य में बेजोड़ है—

आनीता नटवन्मया तव पुरः, श्रीकृष्ण या भूमिका,
व्योमाकाशखखाम्बराब्धिवसवर, तव प्रीतये अद्यावधि।
प्रीतो यद्यसिः ताः कर्मक्ष्य भगवान्, तद वांछित देहि में,
नो चेद ब्रूहि कदापि मानय, पुनर्मामीहशीं भूमिकाम्।

अर्थात्, हे श्रीकृष्ण!, हे नटनागर! मैंने आजतक आप की प्रीति के लिए आप के दरबार में बहुरुपिया बनकर 84 लाख योनियों में 84 लाख रूप बना कर नाच किये हैं। यदि आप उनमें से एक को भी देख कर प्रसन्न हुए हैं तो मेरी मन-वांछित मुक्ति मुझे दे ही दो और यदि आपको एक भी नाच पसन्द नहीं आया तो स्वयं अपने मुंह से कह दीजिएगा कि 'आगे से मेरे दरबार में ऐसे रूप बना कर कभी मत आया करो' ताकि मैं तब भी आवागमन के चक्र से छूट जाऊँ। इसमें गीता का चरम तात्पर्य निहित है।

एक बार कविवर रहीम ने गोस्वामी तुलसीदासजी से पूछा—

काज करे संसार के मिलन चहत करतार।
कह रहीम कैसे निभे दो रथ एक सवार।।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने उत्तर दिया—

काज करे संसार के, प्रभु पर राखे टेक।
तुलसी यों निभ जाएंगे दो घोड़े रथ एक।।

लोक में भी प्रसिद्ध उक्ति है—

कर से कर्म करो विधि नाना। मन राखो जहां कृपा निधाना।।

इसी को गीता में कहा—

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। 8/7, गीता

हे अर्जुन! तू सब कालों में मेरा स्मरण करता हुआ युद्ध कर।

फैजी

मुगल काल में अकबर के आदेश से फैजी ने गीता का अनुवाद फारसी भाषा में किया। इसके पूर्व फिरोजशाह तुगलक ने गीता का अनुवाद फारसी में कराया था। फैजी का अनुवाद प्रसिद्ध है।

दाराशिकोह

उसने हिन्दू गुरुओं के चरणों में बैठकर उपनिषद्, गीता, रामायण का अध्ययन किया। दाराशिकोह जो औरंगजेब का बड़ा भाई था उसने इस किताब का नाम 'सेर अकबर' रखा और भूमिका में गीता की अद्भुत प्रशंसा करते हुए लिखा है गीता परम आनन्द का अमर स्रोत है। वह परम सत्य को पाने का पथ प्रदर्शक है। गीता हमें ब्रह्म का ज्ञान कराती है। यह वर्तमान और भविष्य के गहन रहस्यों को सरलता से समझाती है। इसके संकलनकर्ता (लेखक) महर्षि वेदव्यास थे।

औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा भी दाराशिकोह से प्रभावित हुई। जब औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा ने अपने ताऊ को नयी मस्ती और प्रसन्नता में देखा तो एक दिन बोली—अब्बा! यह आपके भीतर जो मस्ती और शांति आ गई है यह कैसे आ गई है। दाराशिकोह ने कहा, मेरे द्वारा उपनिषदों, गीता, रामायण का अध्ययन करने से। तब जेबुन्निसा कई दिन तक अपने विद्वान ताऊ से इस अमृत भरे ज्ञान को प्राप्त करती रही।

डॉ. मोहम्मद हाफिज सैयद

गीता के उपदेश बिना किसी भेदभाव के सबके लिए आवश्यक हैं। इस ग्रंथ पर अहिन्दुओं का उतना ही अधिकार है जितना किसी भारतीय अथवा हिन्दू कहलाने वाले का है।

अन्तिम मुगल बादशाह जफर स्वयं गीता से बहुत प्रभावित था। उसने गीता के 3/37 श्लोक का भाव पिरोते हुए कहा है—

जफर आदमी उसको न जानिएगा,
चाहे कितना हो इल्मो फहमे बका।
जिसे ऐश में यादे खुदा न रही,
जिसे तैश में खौफे खुदा न रहा।

अर्थात् कोई व्यक्ति कितना ही पढ़ा-लिखा विद्वान् क्यों न हो वह मनुष्य कहलाने योग्य भी नहीं है जिसे ऐश में (ऐश्वर्य में) ईश्वर की याद न रहे, जिसे तैश में (क्रोधावेश में) ईश्वर के दण्ड विधान का भय भी न रहे। ऐश्वर्य में भी अंधा होकर ईश्वर के प्रेम को भूल जाता है और क्रोधावेश में भी अंधा होकर ईश्वर के न्यायविधान को भूल जाता है।

सर मोहम्मद इकबाल (इस्लाम के विश्वकवि) कहते हैं कि मैंने भगवद्गीता को सर्वदा महानतम सम्मानयुक्त प्रशंसा की दृष्टि से देखा है।

1917 में **जिन्ना** ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा था—रामायण और महाभारत इस देश के राष्ट्रीय महाकाव्य हैं। इनको समझे बिना आप भारत से एकात्म नहीं हो सकते।

लाहौर के **ख्वाजा दिल मुहम्मद** ने गीता का उर्दू पद्य में अनुवाद करते हुए लिखा—

मुसीबत से सबको बचाती है गीता,
पाथमे सदाकत सुनाती है गीता।
जो गिरते हैं गलती से इस सर जमीं पर,
उठाकर फलक पर बिठाती है गीता।

वे अनुवाद के प्रारम्भ में लिखते हैं—सात सौ फूलों की माला गीता है। यह माला करोड़ों इनसानों के हाथों में पहुंच चुकी है लेकिन अभी तक इसकी ताजगी, नफासत, इसकी खुशबू में कोई फर्क नहीं आया।..... इस फूल की माला में अजीब खुशबू है और उस खुशबू में अजीब तासीर है। इस माला को पहनो तो दिल-दिमाग पर अमिट प्रभाव छा जाता है।

हजरत मौलना सय्यद हबीब साहब (सम्पादक, सियासत लाहौर) अपने उर्दू अखबार में जिसका नाम उन्होंने 'जुबैर हिन्द' रखा, लिखते हैं—हिन्दी में मैंने रामायण, महाभारत और असंख्य किताबों का अध्ययन किया, मगर जिस किताब ने मेरे दिल व दिमाग पर कब्जा कर लिया, जिसका नशा मुझे आज तक मालूम होता है, वह है श्रीमद्भगवद्गीता।

सन् 1941-42 की बात है। **डा. सैयद महमूद** जो उस समय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य थे तथा बाद में बिहार के मंत्री रहे। अपने विद्यार्थी काल की घटना बताते थे जब वे जर्मनी में कानून का अध्ययन करने गए थे। एक जर्मन प्रो. महोदय ने उन्हें विश्वविद्यालय के प्रांगण में रोककर गीता के विषय में कुछ सवाल पूछे। डा. महमूद भौचक्के रह गए और उन्होंने कहा—मैं एक मुसलमान हूं, मैंने गीता नहीं पढ़ी। वह प्रो. आश्चर्यचकित था। उसने कहा—इससे क्या फर्क पड़ता है। मैं एक ईसाई हूं, आप एक मुसलमान हो सकते हैं, यहूदी हो सकते हैं, अन्य कुछ भी हो सकते हैं, पर आपके पास गीता के रूप में आपके देश में एक खजाना है और आपने उसे नहीं पढ़ा। आप भारतीय कैसे कहला सकते हैं? आपको ये चीजें जाननी चाहिएं। यह आपकी राष्ट्रीय धरोहर है। यह किसी धर्म विशेष की धरोहर नहीं। डा. महमूद के लिए यह एक नया अनुभव था। उसके पहले किसी

ने ऐसा सुझाव नहीं दिया था। लेकिन उसके बाद उन्होंने गीता पढ़ी और वहां से लौटने पर इस घटना की चर्चा गांधीजी से की।

गांधीजी ने उन्हें सलाह दी थी कि जब भी कोई समझदार व्यक्ति आपसे मिल जाए तब इस बात की चर्चा आप जरूर कर दें।

कृष्णभक्त मुस्लिम बहन-रैहाना तैयबजी

गुजरात के मुस्लिम परिवार में जन्मी बहन रैहाना तैयबजी अब्बास तैयबजी की सुपुत्री हैं। भारतीयता से ओत-प्रोत मुस्लिम महिला हैं। गांधीजी की शिष्या हैं। वह गीता को विश्व का अद्वितीय शास्त्र मानती हैं। वह अपनी आत्मकथा में लिखती हैं—'सन् 1923 में मेरे जीवन में गीताजी प्रकट हुई। 'यंग इंडिया' में बापू द्वारा गीता की तारीफ पढ़ी। मैंने गीता को पढ़ा और उसे पढ़ते-पढ़ते मेरे दिल, दिमाग, मेरे समस्त प्राणों पर गोया बिजलियां गिरती चली गईं। मैं पागल हो गई। विह्वल हो गई। व्याकुल हो गई। मैंने लगातार उसे 20 बार पढ़ लिया पर हाथ से न रख सकी। रात को तकिये तले रखकर सोती। मेरी आँखों के सामने एक अद्‍भुत, सुन्दर, तेजोमय, आनन्दमय दुनिया गोया खुल गई। गीता के सात सौ श्लोकों में मुझे चौदह ब्रह्माण्डों के रहस्य नजर आने लगे। मेरे सभी सवालों के एकदम जवाब मिल गए। हर उलझन का सुलझाव मिल गया। हर अंधेरे का दीपक मिल गया। हर गुमराही में रहनुमा (मार्गदर्शक) मिल गया। गीता में मुझे सब कुछ मिल गया।'

मेरे परिवार वाले व अन्य कुछ मजहबी मुसलमान मुझे गीता पढ़ते देखकर, कृष्ण भक्ति के भजन गाते देखकर काफी क्रुद्ध होते थे। पर मैं विवश थी। और ये मेरे पूर्व जन्म के संस्कार ही मुझे यह सब करने को बाध्य करते थे।

रैहाना बहिन भारत भूमि को परम पावन व पुण्यभूमि मानती हैं। उनका कहना है—भारत धर्मप्राण योगियों का परम पवित्र देश है। अन्य पश्चिमी देश भोगियों के देश हैं। भारत की भूमि पर भगवान् के मंगलमय चरण पड़े हैं, इसकी पवित्र धरती पर स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने अवतार लेकर लीलाएं की हैं। त्याग एवं वैराग्य का यह केन्द्र रहा है। अतः यदि भोगी देश योगी भारत से प्रेरणा ग्रहण करें तो ठीक। किन्तु, आज तो उलटी गंगा बह रही है। जहां कभी पश्चिमी देश भारत को धर्म भूमि, योगियों का महान् पवित्र देश मानकर उससे शिक्षा ग्रहण करते थे। वहां आज हम भारतीय उलटे भोगी देशों को गुरु मानकर उनका अंधानुकरण करने में ही गौरव का अनुभव कर रहे हैं। भारत के अध:पतन का एक यही कारण है।

कृष्ण के मुस्लिम भक्त—सनम साहब

अजमेर की सुप्रसिद्ध कृष्ण लाइब्रेरी के संस्थापक मोहम्मद याकूब (सनम साहब) मुसलमान जाति में उत्पन्न हुए। वे उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत

आदि अनेक भाषाओं के महान् विद्वान् थे। उन्होंने भारतीय दर्शन व हिन्दू धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया और उनके हृदय में भारतीयता के प्रति अनुराग उत्पन्न होता गया। गीता एवं महाभारत ने उनके हृदय को विशेष रूप से प्रभावित किया। काशी जाकर श्रीमती एनी बेसेंट से भेंट की और उनके श्रीमुख से गीता तत्त्व को सुनकर वे भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति आकृष्ट हुए। 11 दिसम्बर, 1911 को उन्होंने संत श्री सरसमाधुरीशरणजी से श्रीकृष्ण भक्ति की दीक्षा ली और अपना समस्त जीवन कृष्ण भक्ति में लगा दिया। उन्हें काफिर की उपाधि से भी विभूषित किया गया। किन्तु वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक भारतीयता से ही सराबोर रहे। वे बहुत सुन्दर प्रवचन करते थे और ब्राह्मण भी उनके विद्वत्तापूर्ण भाषण को सुनकर झूम उठते थे। वे कहते हैं श्रीकृष्ण के तीन रूप हैं— (1) प्रेम, (2) जीवन और (3) आनन्द। प्रेम ही जीवन का विधान है। जीवन की सत्यता का आधार है। जीवन का मुख्य उद्देश्य आनन्द है। यह तीनों श्रीकृष्ण की निराकार विभूतियां हैं। सृष्टिमात्र में व्याप्त हैं।

भारत के **भूतपूर्व उपराष्ट्रपति स्व. श्री मोहम्मद करीम छागला** आजीवन गीता के गीत गाते रहे। उनकी हिन्दू धर्मग्रंथों में असीम आस्था थी। उन्हें वे राष्ट्रीय ग्रन्थ मानते थे। उनकी मान्यता थी कि प्रत्येक भारतवासी, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय का हो, हिन्दू है।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश महामहिम बेग साहब ने गीता का अध्ययन कर अपने विचार तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक विशेष नोट लिख, प्रेषित कर राय दी थी कि यह एक ऐसी अनमोल पुस्तक है जो सभी मजहब तो क्या मनुष्य मात्र के पढ़ने की जरूरी किताब है। इसका अध्ययन शिक्षण संस्थाओं में प्रारम्भ से लेकर कालेज तक अनिवार्य होना चाहिए। हकीकत तो यह है कि श्रीमद्भगवद्गीता भारत की सही पहचान है।

ईरान के मुस्लिम **संत मेहरबान शहरयार** (मेहर बाबा) ने कहा था कि गीता केवल हिन्दुओं के लिए नहीं है, यह तो मनुष्य मात्र के लिए है। धरती पर बसने वाली सभी जातियां गीता को जीवन में उतार लें तो सम्पूर्ण संसार प्रेममय बन जाए तथा सभी झगड़े-फसाद समूल नष्ट हो जाएं।

टर्की के प्रधानमंत्री—तुर्कीस्तान के प्रधानमंत्री मुसलमान हैं। गीता का नित्य पारायण करते हैं। पत्रकार पूछते हैं—आप गीता पढ़ते हैं क्या? हां पढ़ता हूं। उन्होंने कहा—यह कुफ्र की दुकान है। उन्होंने कहा—It gives me light consolation and solution how to solve and takle the problem. उसने कहा, इस्लाम से निकाल दिए जाएंगे। उन्होंने कहा मुल्ला-मौलवियों ने मुझे इस्लाम नहीं दिया। खुदा ने दिया है, ये कौन होते हैं मुझे इस्लाम से निकाल देंगे।

पर मैं गीता रोज पढ़ता हूं। यह मुझे जीवन की समस्याओं का समाधान देती है और इसलिए उन्होंने गीता के कुछ श्लोकों को To devlop and control the morality. आज तुर्की के अन्दर वह उनकी शिक्षा का हिस्सा है।

भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलामजी भी नियमित गीता का स्वाध्याय करते थे।

संस्कृत के मूर्धन्य विद्वान् तथा वर्ष 2001 में राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित **आचार्य हनीफखां** कहते हैं कि 'मेरा पंथ इस्लाम है किन्तु मेरा जीवन जीने का मार्ग श्रीमद्भगवद्गीता है।'

'श्रीमद्भगवद्गीता राष्ट्रीय एकता की जबरदस्त मिसाल है। वह जाति, सम्प्रदाय और राष्ट्र की सीमा से ऊपर है। गीता एक सिद्धान्त है, जीवनशैली है और सभी को इसे पढ़ना चाहिए।' ऐसा कहना है बिंत जेहरा रिज़वी का जिन्होंने 'गीता' का उर्दू में अनुवाद कर अपने खर्चे से हाल ही में प्रकाशित किया है।

इन्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण—महाभारत और रामायण हमारे राष्ट्रीय महाग्रंथ हैं।

इण्डोनेशिया के मुसलमान राम को अपना राष्ट्रीय महापुरुष National Hero मानते हैं। वे बड़ी श्रद्धा के साथ रामलीला खेलते हैं। इस पर पाकिस्तान के राजदूत ने कहा कि कुरान में रामलीला का आदेश कहां है? इस पर इंडोनेशिया के राजदूत ने कहा—We have not changed our history. We cannot change our blood.

यदि भारत के मुसलमान इंडोनेशिया की तरह होते तो देश का विभाजन नहीं होता। सिंध, आधा पंजाब भारत से अलग नहीं होता। संस्कृति की उपेक्षा से देश की हत्या हो जाती है। 99 प्रतिशत मुस्लिम में हिन्दू रक्त है। यदि वे भारत की संस्कृति के प्रति उदार और श्रद्धाशील होते तो देश की हत्या नहीं होती।

यदि मुसलमान पुनः भारतीय संस्कृति को मानने लग जाए तो पुनः अपनी मातृभूमि पा सकता है। जब 1400 साल बाद यहूदी अपनी मातृभूमि को वापस पा सकता है तो हम पुनः एक क्यों नहीं हो सकते। अवश्य एक होंगे, गयी हुई भूमि वापस प्राप्त करने का सबको स्वप्न देखना चाहिए।

आज प्रश्न उठता है भारत के मुसलमानों की समस्या का हल क्या है? क्या रहीम और रसखान ने मार्गदर्शन नहीं किया, उशाउल्ला खां ने मार्गदर्शन नहीं किया। ये मुसलमान रहते हुए भारतीय संस्कृति को अपना सकते हैं तो अन्य क्यों नहीं?

यदि आज पुनः रहीम, रसखान, उशाउल्ला खां के पदचिह्नों पर चलने का संकल्प ले सके तो वह दिन दूर नहीं है जब भारत पुनः अखण्ड होगा और भारत का भाग्य क्षितिज पुनः मुसकाने लगेगा।

आधुनिक यूरोप में गीता का सर्वप्रथम परिचय 1776 ई. में हुआ जब ईस्ट इंडिया कम्पनी के आदेश पर **सर विल्किन्स** ने गीता का अंग्रेजी अनुवाद किया। भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के अंग्रेज प्रशासकों ने अपनी न्यायिक एवं प्रशासनिक सुविधा के लिए गीता का अनुवाद कराया जिसने पूरे यूरोप के विचार जगत् में उथल-पुथल मचा दी। इसकी भूमिका में स्वयं गवर्नर जनरल वारेन हस्टिंग्स ने लिखा—'भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के ध्वस्त हो जाने के उपरान्त भी भारतीय दर्शन के अमर गायक पूजे जाते रहेंगे। वह पुनः कहता है गीता का उपदेश किसी भी जाति को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने में अद्वितीय है।

दो वर्ष बाद **फ्रेंच विद्वान् डुपरो** ने गीता का फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद किया। गीता का 700 श्लोक का छोटा-सा काव्य जिसने भोगवाद से पीड़ित पश्चिम की आत्मा को अत्यधिक शान्ति प्रदान की है। दार्शनिक श्लेगल इसको देखकर स्तम्भित हो गया। वह कहता है, 'यूरोप का सर्वोच्च दर्शन, उसका बौद्धिक अध्यात्मवाद जो यूनानी दार्शनिकों से प्रारम्भ हुआ, प्राच्य अध्यात्मवाद के अनन्त प्रकाश एवं प्रखर तेज के सम्मुख ऐसा प्रतीत होता है जैसे मध्याह्न के प्रखर सूर्य के दिव्य प्रकाश के भरपूर वेग के सम्मुख एक मन्द-सी चिनगारी हो जो धीरे-धीरे टिमटिमा रही है और किसी भी समय बुझ सकती है।' मैजिनी के जीवन पर इसके उपदेश का बहुत प्रभाव पड़ा। मृत्युशय्या पर पड़े हुए शोपनहार को गीता से इतना आत्मबल मिला कि वह स्वस्थ हो गया और उसे असीम शान्ति प्राप्त हुई।

जर्मन दार्शनिक शोपनहार तथा काण्ट, दोनों के दर्शन पर गीता के कर्तव्यवाद एवं निष्काम कर्मयोग की स्पष्ट छाप है। काण्ट भूगोल और Astronomy का शिक्षक था। वह कहता है मुझे भूगोल पढ़ाने के लिए भिन्न-भिन्न देशों की जानकारी करनी पड़ती थी। इसके साथ उन देशों का परिचय भी करना पड़ता था। इस तरह से मैं भारत से परिचित हुआ। मैं जैसे-जैसे उसका अध्ययन करता गया वैसे-वैसे उसके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती गई।.....मैंने उसके तत्त्व चिन्तन में रुचि ली। गीता और उपनिषदों का फ्रेंच भाषा में जो अनुवाद छपा मैंने उसे पढ़ा और उसको मैंने आजीवन स्मृत रखा।

काण्ट पर गीता का ऐसा रंग चढ़ा कि वह भूगोल और Astronomy छोड़कर दार्शनिक बन गया। उसके दर्शन पर गीता का पूरा प्रभाव है।

काण्ट नैतिकता की कसौटी देते हुए कहता है प्रत्येक कार्य करते हुए विचार रखो कि तुम Kingdom of ends के सदस्य हो। प्रत्येक मानव अपने-आपमें एक End उद्देश्य, लक्ष्य है। वह मात्र दूसरों के हित या स्वार्थपूर्ति का साधन मात्र नहीं है। यह संसार एक Kingdom of ends मानव जाति में एक लक्ष्य है। वह किसी अन्य की सुख-सुविधा के लिए साधन मात्र नहीं अतः अपने आपको जीवन

में एक उद्देश्य या लक्ष्य मानकर दूसरे मानव को भी अपने समान लक्ष्य मानकर हम सदा व्यवहार करें।

वह कहता है Moral laws without all ifs and but and condition. गीता के duty for the sake of duty का पूरा प्रभाव उसके नैतिक सिद्धान्त पर पड़ा।

	काण्ट	गीता
(1)	कर्तव्य कर्तव्य के लिए किसी फल की आकांक्षा से रहित।	**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।** 2/47, गीता
(2)	Nothing is good except the goodwill भाव संशुद्धि के अतिरिक्त विश्व में कोई वस्तु वरेण्य नहीं है।	**मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः। भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।।** 17/16, गीता
(3)	शुद्ध विवेक राग-द्वेष से मुक्त है। नैतिक सिद्धान्त देश, काल, परिस्थिति, भावना निरपेक्ष सिद्धान्त है।	**यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।** 12/17, गीता

महान् संगीतकार लुडविन वान बीथोवन—बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि महान् जर्मन संगीतज्ञ लुडविन बीथोवन भारतीय वेदान्त से प्रभावित थे। उन्होंने कालिदास कृत 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के अतिरिक्त उपनिषद् और भगवद्गीता का भी अध्ययन किया था। बीथोवन ने अपनी डेस्क पर श्रीकृष्ण के इस संदेश को जड़वाकर रख लिया था। संदेश यह था—'जो है वह मैं हूं। जो था वह मैं हूं और मैं ही हूं वह जो सदा रहेगा।'

कर्नल आल्काट ने एक ऐसे आदमी की कथा लिखी है जो भू-मर्ग की खान में कुछ पढ़ रहा था। वह अपने विश्राम का काल अध्ययन में लगा रहा था और आल्काट महाशय के पूछने पर उत्तर दिया—गीता पढ़ रहा हूं।

हेनरी थोरो और इमर्सन

अमेरीका के बहुत बड़े दार्शनिक थोरो, हम तो उसके दीवाने हैं। हमने उस पर Thesis लिखी है। हम उसकी भूमि पर होकर आए हैं। हमने उनके बारे में बहुत प्यार से पढ़ा है। हम समझते हैं कि थोरो के ऊपर हम निछावर हो जाएं। अमेरीका का दार्शनिक जो बोस्टन में रहने वाला था। यह बोस्टन में अपना घर

छोड़ करके वहां से 15-20 किलोमीटर दूर वोल्डेन नामक तालाब था, जंगल था, वहां आश्रम बनाकर रहता था। एक बार इमर्सन से मिलने को आया। इमर्सन उससे पत्राचार करता रहता था। थोरो पूछता है इस सप्ताह का सबसे बड़ा समाचार क्या है। इमर्सन कहता है सबसे अच्छी खबर यह है चार्ल्स विल्किन्स का अंग्रेजी गीता अनुवाद मेरी लाइब्रेरी में पहुंच चुका है। थोरो ने उस गीता को देखा और कहा—मैं अपने आश्रम में पढ़ने के लिए ले जाता हूं। इमर्सन ने कहा, मैंने लाइब्रेरी के लिए मंगाया है पढ़ने के लिए। थोरो ने कहा, गीता लाइब्रेरी में पढ़ने की वस्तु नहीं है। गीता आश्रम में पढ़ने की वस्तु है। तो मैं क्या करूंगा? तुम रोज मेरे पास आओ प्रात:काल ब्राह्ममुहूर्त में। रोज इमर्सन बोस्टन से 20-25 मील दूर वाल्डेन में थोरो के आश्रम में गीता पढ़ने जाता था। एक दिन देखा कि थोरो की चौकी के नीचे बहुत से सांप पड़े हुए हैं और थोरो ध्यान मग्न था, वह डरकर चला गया। फिर दो घण्टा बाद पुन: आया तो उसने थोरो से कहा कि आप यहां न पढ़ें। यहां आपके प्राणों को खतरा है। सांपों से, जंगली पशुओं से। थोरो ने कहा, तुम मुंह छिपाकर पीठ करके तुरन्त चले जाओ और कभी अपना मुंह मत दिखाना। गीता मुझे आत्मा की अमरता का संदेश देती है और तुम मौत का भय दिखाते हो। मैंने तो मौत को भी फांसी दे दी है और तुम मुझे मौत से डराते हो। तब इमर्सन ने माफी मांगी कि ऐसी गलती फिर कभी नहीं होगी। और तब उसे समझ में आया गीता लाइब्रेरी में पढ़ने की वस्तु नहीं वरन् आश्रम में पढ़ने का ग्रंथ है।

जब थोरो जंगल की नदी में स्नान करता था तब मछलियां उसके ऊपर आकर खेलने लगती थी, गिलहरियां उसके कंधों पर नाचने लगती थी, पक्षी उसके हाथ और कंधे पर कलरव करते थे। पर जब इमर्सन आता था तो उसे देखकर सभी मछलियां पानी में भाग जाती थी, गिलहरियां वृक्षों पर चढ़ जाती थी। पक्षी उड़ जाते थे। तब इमर्सन ने पूछा, मुझे देखते ही क्यों भाग जाती हैं। तब थोरो ने कहा, तुम अवश्य मांस खाते होगे। ये सब जानते हैं कौन मेरा रक्षक और प्रेमी है और कौन मेरा भक्षक है। यह कहकर थोरो ने इमर्सन का मांस खाना छुड़वाया।

ये दोनों नाम सिर्फ अमेरीका में ही नहीं वरन् सभी यूरोपीय देशों में गूंज गए। क्यों? स्वामी रामतीर्थ ने हेनरी थोरो को ब्रह्मनिष्ठ बताया। क्यों? स्वयं इमर्सन की कलम से थोरो के जीवन का एक शब्दचित्र देखिये। थोरो के लिए इमर्सन लिखता है कि—'मैं थोरो से मिलने उस निर्जन विपिन में गया जहां वह एकान्तवास कर रहा था। तो क्या देखता हूं कि इस वन में सर्प बहुत हैं, मधुमक्खियों की भरमार है और कई-कई सर्प तो अक्सर थोरो की बांहों में तो कभी पैरों पर चढ़ चिपट जाते थे। लेकिन थोरो न उन्हें अपने शरीर से परे करता था और न किंचित् भी उनसे डरता था। और वे उसके पैरों व बांहों में चिपटे रहते थे। उनका बिस्तर देखा तो उसमें तमाम मधुमक्खियां डेरा जमाए हुए थी। गोया

वे थोरो की मित्र हों और थोरो उन्हीं मधुमक्खियों से सटे बिस्तर पर आराम से बैठकर पढ़ता-लिखता रहता, चिन्तन-मनन करता। एक भी मधुमक्खी को न वह बिस्तर से हटाने की कोशिश करता न उसकी परवाह ही करता। थोरो पढ़ता रहता उस पर सुखासीन हो और मधुमक्खियां उसके साथ तराने गाती रहती।

एक दिन थोरो के साथ उस विपिन में घूम रहा था तो उससे पूछ लिया कि इस इलाके के जो प्राचीन निवासी, वनवासी लोग हैं, जो तीर-कमान रखते हैं—उनके तीर तो यहां देखने को मिल सकते हैं न? थोरो ने जवाब दिया—क्यों नहीं। जिस जगह चाहो वे तीर देख सकते हो, कहने के साथ ही वे बगल की एक झाड़ी में झुके और फौरन वहां से वनवासी लोगों का एक तीर उठाकर मुझे थमा दिया, कहा—'यह लो तीर उन लोगों का है। है न वही' मैं चकित हुआ। मुंह से तीर शब्द निकलते ही थोरो को यहां इतनी आसानी से कैसे मिल गया? इसी को शायद दृष्टि सृष्टिवाद कहते हैं।

फिर थोरो ने इमर्सन को अपना लिखा ग्रंथ वाल्डन (Waldone) दिखाया। इमर्सन ने उसमें देखा, भगवद्गीता और उपनिषदों की महिमा थोरो ने जगह-जगह दर्ज कर रखी है। थोरो ने उस ग्रंथ (वाल्डन) में लिखा है—सवेरे उठते ही मैं अपने दिल और दिमाग को, विवेक को भगवद्गीता रूपी पवित्रतम गंगाजल से स्नान कराता हूं। गीता का तत्त्वज्ञान सर्वव्यापी और सर्वश्रेष्ठ है—इसे हजारों साल पहले देवताओं ने ही लिखा था लेकिन तब से आज तक दुनिया में इसकी टक्कर का ग्रंथ नहीं लिखा जा सका। आज के युग में नई सभ्यता ने असीम वैज्ञानिक प्रगति तथा शिक्षा में कितने ही कीर्त्तिमान कायम किए हों, लेकिन गीता ज्ञान की तुलना में ये सब उपलब्धियां बहुत छोटी मालूम पड़ती हैं, नगण्य प्राय। गीता का ज्ञान हमारी परिकल्पना और विचारों से इतना परे और पृथक् लगता है कि सोचना पड़ता है कि 'गीता' किसी और ही युग की देन है।

संसार में कितने ही स्मारक खड़े किए गए। मिस्र देश के पिरामिड भी बने लेकिन मैं देखता हूं कि उस पुरानी दुनिया के जितने भी स्मारक हैं—वे सब मिलकर भी गीता का मुकाबला नहीं कर सकते क्योंकि मेरे विचार से 'गीता' उस प्राचीन युग का श्रेष्ठतम स्मारक है और वह महान् ज्ञान-स्मारक है।

हेनरी थोरो जीवनान्त तक उपनिषदों और गीता के तत्त्वज्ञान को अन्तर में बसाए रहा—उसे जीवन में उतारने में सचेष्ट रहा। इसका अभ्यास करता रहा। आजीवन अविवाहित और विरक्त जीवन बिताया। यही हाल इमर्सन का था। उसके प्रेरणास्रोत भी 'गीता और उपनिषद्' ही थे। अपने लेखन के पदे-पदे वह 'गीता और उपनिषद्' को बतौर प्रमाण पिरोता चलता था और यही वह इमर्सन था—जिसने पश्चिम के वैचारिक जगत् में नयी जागृति पैदा की और अमेरीका का सर्व प्रसिद्ध रचनाकार माना गया।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर अंतिम बार अमेरीका गये थे तो उन्होंने महात्मा थोरो के घर जाकर उनके आश्रम के दर्शन किए। आश्रम स्वामी से, रवीन्द्र ने पूछा कि महात्मा थोरो किस वस्तु को सबसे अधिक प्यार करते थे? गृहस्वामी ने एक पुस्तक दिखाकर कहा कि इसी वस्तु को वह सबसे अधिक प्यार करते थे, उनकी स्मृति की रक्षा के लिए यह पुस्तक पूज्यभाव से सुरक्षित रखी गई थी। उत्कंठापूर्वक कवीन्द्र ने जब उस पुस्तक को देखा तो वह पुस्तक गीता थी।

थोरो गोलोक में केवल 32-33 वर्ष जीया फिर उसके बाद शरीर छोड़कर चला गया। बड़ा ही तेजस्वी आदमी था। थोरो की स्मृति को लेकर इमर्सन ने गीता का प्रचार शुरू किया। इमर्सन एक चर्च में पादरी था। और उसने रविवार को चर्च में गीता पढ़ानी प्रारम्भ की। लोगों ने शिकायत की तुम्हें बाइबिल पढ़ाने को रखा गया है, तुम काफिरों की पुस्तक क्यों पढ़ा रहे हो। उसने कहा यदि तुम्हें Universal Bible चाहिए तो वह भगवद्गीता है। यदि आपको क्रिश्चियन बाइबिल चाहिए तो यही पड़ी रहने दो। उसने चर्च की नौकरी त्याग दी लेकिन भगवद्गीता को हृदय से लगाया। और सारे संसार में भगवद्गीता का प्रचार शुरू किया। उस समय इंग्लैण्ड में बहुत बड़ा दार्शनिक हुआ था, उसका नाम था कार्लाइल। अंग्रेजी का बहुत बड़ा लेखक था। इंग्लैण्ड में कार्लाइस यूनिवर्सिटी है। कार्लाइल ने कहा—मेरे मित्र! तुम डालरों के देश से आए हो। तुम मेरे लिए क्या उपहार लाए हो? उसने कहा—मुझे शर्मिन्दा मत करो। सांस्कृतिक दृष्टि से हम दिवालिये हैं। हमारे पास अपना कुछ भी नहीं है। हमारी जाति यूरोप से गई है, धर्म हमारा यहूदियों का दिया हुआ है, इजराइल से गया हुआ है। इसलिए अमेरीकन नाम से अपना कुछ है ही नहीं जो आपको हम कुछ दे सकें। और आंखों में आंसू आ गए। अरे यार, मैंने उपहार मांगा और तुम आंसू बहाने लगे। तो तुमने मुझसे आज उपहार मांगा है तो आज मैं तुम्हें जीवन की सबसे बड़ी दौलत बांट रहा हूं। जिसे मैं किसी को नहीं दे सकता था। मेरे लिए पावनतम और पवित्रतम वस्तु थी पर आज आपने उपहार मांगा तो दे रहा हूं। उसने जेब से भगवद्गीता की पोथी निकाली। मेरे मित्र! गुरु थोरो प्रतिदिन प्रातःकाल गीता के अमृत जल से स्नान करते थे, इस गीता का पाठ प्रतिदिन करते थे। गीता का पाठ करते हुए श्रद्धा के आंसुओं से पवित्र हुई गीता की पोथी मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी दौलत थी यही गीता की पोथी आपको दे रहा हूं। कार्लाइल ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहा—मेरे मित्र! जैसे लगता है तुम मेरे मन की बात ताड़ गए हो। क्या तुम मुझे देने के लिए गीता लाए हो? मैं तुझे देने के लिए क्या लाया था? मैं भी तुझे देने के लिए भगवद्गीता ही लाया था। और कार्लाइल ने भी अपनी जेब से भगवद्गीता निकाली और इमर्सन को दी। कार्लाइल इंग्लैण्ड

का सबसे बड़ा दार्शनिक, और इमर्सन अमेरीका का सबसे बड़ा दार्शनिक परस्पर मिलते हैं, इंग्लैण्ड में मिलते हैं और परस्पर गीता भेंट करते हैं।

यह घटना एक मैगजीन में छपी। और वह मैगजीन मसूरी से एक युवक को, जो नया-नया एम.ए. पास करके Philosophy का Lecturer लगा था, उसके हाथ में मैगजीन पड़ी। रात भर वह मैगजीन पढ़ता रहा। उसने पढ़ा इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा दार्शनिक और अमेरीका का सबसे बड़ा दार्शनिक एक-दूसरे से इंग्लैण्ड में मिलने पर एक-दूसरे को भगवद्गीता भेंट करते हैं। तब हमें पाश्चात्य दर्शन से क्या लेना है? जब पश्चिम वाले भी गीता पर मुग्ध हैं तो उसने पाश्चात्य दर्शन की किताबों को ताक पर रख दिया और गीता स्वाध्याय में लग गया। धर्म क्षेत्रे-कुरु क्षेत्रे....।

उस भगवद्गीता की कृपा से वह हिन्दुत्व का, भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा व्याख्याता और इस युग की दार्शनिक मनीषा का मणिमुकुट बना। **डॉ. राधाकृष्णन्** भारत का राष्ट्रपति भी हुआ। उस राधाकृष्णन् के जीवन में परिवर्तन करने वाली है यह भगवद्गीता। जिसको गीता ने कितना महान् व्याख्याता बना दिया।

इस घटना का प्रभाव **भाई परमानन्द** पर भी हुआ। वे कहते हैं अपना विद्यार्थी जीवन समाप्त करने के बाद मुझे खयाल हुआ कि वह कौन-सी पुस्तक है जिसे मैं अपने स्वाध्याय के लिए हर समय अपने साथ रख सकता हूं। कार्लाइल की लिखी किताब 'सारटर रिसार्टस' ने मेरे दिल पर इतना गहरा असर डाला कि मैंने उसे अपना साथी बना लिया। कुछ समय गुजर गया। अब मुझे यह बात पढ़ने को मिली कि एक बार अमेरीका का एकमात्र प्रसिद्ध दार्शनिक इमर्सन कार्लाइल से मिलने गया। विदा के समय कार्लाइल ने इमर्सन को भगवद्गीता की एक प्रति उपहार स्वरूप भेंट की, इस घटना ने मेरे अन्दर परिवर्तन उत्पन्न किया। मैंने 'सारटर रिसार्टस' को अलग रख दिया और उसकी जगह भगवद्गीता को अपने साथ कर लिया।

अमेरीका का पत्रकार क्रिस्टोफर ईशरवुड कहता है जब मैं बच्चा था तो मुझे Sunday bible school में भेजा गया। तब वहां पर उसको यह कल्पना दी गई कि एक खुदा दूर ऊपर सातवें आसमान पर बैठा है और उसकी कचहरी अभी बंद है। कयामत के दिन के बाद उसकी कचहरी खुलेगी। उसने Sunday bible school में पढ़ाने वाली Lady teacher से पूछा, कयामत कब आएगी? उसने कहा—देखो जी! दस-दस हजार वर्ष के दस हजार युग बीत जाएंगे उसके बाद कयामत का दिन आएगा तब खुदा की कचहरी खुलेगी। तब आदमी के अच्छे-बुरे कर्मों का फैसला होगा। उसने कहा—मेरी बाल बुद्धि ने ठोकर मारकर कहा, ऐसे खुदा की क्या जरूरत? मैं जी रहा हूं, आज मेरे साथ कोई अन्याय करे, मेरा सामान छीन लेवे, अन्यायपूर्वक मुझे थप्पड़ मार दे, चोट मार दे, मेरा धर्म लूट ले, मेरा सामान लूट ले, मेरी इज्जत पर हमला करे, मुझे तो न्याय चाहिए। खुदा के राज्य की कचहरी तो बंद

है। कब तक? 10000×10000 दस हजार गुणा दस हजार वर्ष यानी अरबों वर्ष तक, ऐसे खुदा की क्या जरूरत है? कहते हैं इससे तो एक धरती का मजिस्ट्रेट भी खुदा से बहुत अच्छा होगा। ऐसा खुदा बेकार है। ऐसे खुदा को लेकर मैं क्या करूं। मुझे ऐसे भगवान् में विश्वास नहीं है। तो कान मरोड़कर टीचर ने कहा—कहो ईश्वर है। नहीं, मैं नहीं मानता ऐसे खुदा को। मैं ऐसे खुदा को मानने को तैयार नहीं हूं। और उसने बाइबिल स्कूल छोड़ दी। बहुत पहले लोगों ने ईसा को फांसी पर चढ़ाया था। मैंने खुदा को ही फांसी पर चढ़ा दिया। कोई खुदा नहीं। वह इसी विश्वास में जीने लगा। लड़का होशियार था। बुद्धि का तेज था। पढ़-लिख गया। कुछ कविता लिखने लगा, कुछ लेख लिखने लगा, धीरे-धीरे उपन्यास भी लिखने लगा। गहरे विचारों पर लेख लिखने लगा। अच्छा पैसा कमाने लगा। भवन बना लिए, कारें बना ली, सामाजिक प्रतिष्ठा भी हो गई। कहने लगा खुदा कुछ नहीं है। खुदा के बिना ही भवन बना लिया। कारें बना ली, प्रतिष्ठा बना ली। खुदा कुछ नहीं है। खुदा का मेरे जीवन में कोई स्थान नहीं है। खुदा के बिना मैं बहुत कुछ सफल हो गया हूं। अतः बिना ईश्वर की कृपा के मैं लेखक, साहित्यकार, उपन्यासकार, पत्रकार, कवि बन गया हूं। खुदा कुछ नहीं है। मनुष्य ही सब कुछ है। अचानक कोरिया में युद्ध छिड़ा तो चीन ने कोरिया पर हमला कर दिया। उत्तरी कोरिया को चीन ने खा लिया। दक्षिणी कोरिया की रक्षा के लिए अमेरीका ने Jump किया। अमेरीका को 10-12 हजार मील दूर से सैनिक उड़ाकर लाने पड़ते थे। चीन का प्रदेश साथ लगता था। चीन ने लगभग सत्तर लाख सैनिकों को स्वाहा कर दिया। अमेरीका को धूल चाटनी पड़ी। वहां ईश्रवुड ने देखा—अमेरीका के खूब सुन्दर, गोरे-चिट्टे जवान सैनिक खूब चमकते हुए, उछलते हुए गीत गाते हुए आ रहे हैं और अचानक एक बम गिरता है और मनुष्य के शरीर के चिथड़े उड़ जाते हैं। वह कहता है मैंने सोचा था कि मनुष्य सब कुछ है। और इस मनुष्य की यह दुर्दशा। मनुष्य तो राक्षस है। मनुष्य मनुष्य को मार रहा है, मनुष्य-मनुष्य को खा रहा है। क्या हो रहा है? मैं समझा था जवानी ही सब कुछ है और यहां जवानी के चिथड़े उड़ रहे हैं। सबसे धनी देश अमेरीका के खूबसूरत जवान बड़ी उमंगों से उछलते-कूदते हुए, गाते-संगीत बजाते हुए, कोई गिटार बजा रहा है, रणभूमि में उछलते हुए आते हैं, चीन बम गिरा रहा है और उन सैनिकों की बोटी-बोटी बिखर गई। मैंने बहुत से भवन बनाए हैं। यहां भी बहुत से भवन हैं। एक बम गिरता है भवन का जर्रा-जर्रा बिखर जाता है। मैंने सोचा पैसा सब कुछ है, पर बड़े-बड़े बैंकों को आग लगती है और गड्डियों के गड्डी नोट जलकर राख। नोटों की गड्डियां जिनके नम्बर और नाम दिख रहे हैं पर जलकर राख हो गए हैं। मैंने सोचा मनुष्य सब कुछ है। मनुष्य भेड़िया है। मैंने सोचा जवानी सब कुछ है। जवानी जलकर खाक हो रही है। मैंने सोचा भवन सब कुछ है, भवन के ईंट-पत्थर बिखर रहे हैं। मैंने सोचा धन सब कुछ है। धन धूल में बिखर रहा है। फिर मैंने सोचा खुदा को मैंने छोड़

दिया। खुदा में विश्वास नहीं है, खुदा को मैंने माना नहीं। मैंने सोचा मनुष्य सब कुछ है, धन सब कुछ है, भवन सब कुछ है, कारें सब कुछ है ये सब कुछ तो भस्म हो रहे हैं। खुदा को मैं मानता नहीं हूं। तो मैं किसके लिए जीऊं। मनुष्य के लिए जो भेड़िया हो रहा है जवानी के लिए जो धूल हो रही है, भवन जिसकी ईंटें बिखर रही है। खुदा के लिए जिसको मैं मानता ही नहीं हूं। क्योंकि वह मेरे से बहुत दूर सातवें आसमान पर बैठा है जो एक अरब वर्ष बाद मेरे अच्छे-बुरे का फैसला करेगा। पर ऐसा ईश्वर मेरे किस काम का? तो प्रश्न शेष रह जाता है मैं किसके लिए जीऊं?

तो वह हताश-निराश चोट खाये हुए व्यक्ति के समान अमेरीका में लौटकर आया। खोजता रहा मैं किसके लिए जीऊं। क्या जीवन जीने योग्य है? बार-बार अपने आप से पूछता कि मैं किसके लिए जीऊं। मुझे कोई खूँटी नहीं मिली जिस पर मैं जिन्दगी को टांग सकूं। जिन्दगी को जीने के लिए कोई खूँटी, कोई आधार, कोई विश्वास, कोई आस्था चाहिए।

गीता में भगवान् कहते हैं—

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः।। 17/3, गीता

पुरुष श्रद्धामय है। जो जिसकी श्रद्धा वही वह स्वयं है। उसकी श्रद्धा छीन लो तो वह मिट्टी के तुल्य है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की ज्वलन्त राष्ट्रभक्ति छीन लो, भगवान रामचन्द्रजी की मर्यादा छीन लो, उनकी मातृ एवं पितृ भक्ति छीन लो, तब राम दो कौड़ी का नहीं बचा। भगवान् कृष्ण का निष्काम कर्मयोग छीन लो, फिर क्या बचेगा? गांधी से सत्य, अहिंसा छीन लो तब गांधीजी का क्या मूल्य बचेगा, ईसा से प्रेम छीन लो, बुद्ध से करुणा छीन लो, महावीर से जीवदया छीन लो। 'श्रद्धामयो अयम पुरुषः' भगवान् कहते हैं—मनुष्य श्रद्धामय है। जो जिसकी श्रद्धा है वही वह स्वयं है। जो शरीर उसका दिखता है वह उसका असल व्यक्ति नहीं है। सुभाष शरीर नहीं है। शरीर तो कभी का लुप्त एवं गुप्त हो गया है। जिस सुभाष को हम रोज पूजते हैं उसकी श्रद्धा को पूजते हैं। गांधी का शरीर तो गोली का निशाना बनकर कबका खत्म हो गया है। गांधीजी को जो सम्मान देते हैं वह उनकी श्रद्धा को देते हैं। हरिश्चन्द्र का, राम का, कृष्ण का शरीर कहां है? सबके शरीर समा गए हैं। तब पूज क्यों रहे हैं? उसकी श्रद्धा को पूज रहे हैं।

पुरुष श्रद्धामय है। जो उसकी श्रद्धा है वही तो स्वयं वह है। असली मनुष्य श्रद्धामय है। दिखने वाला मनुष्य बाहर का लिफाफा है। लिफाफा छिन जाएगा, फट जाएगा, लुप्त हो जाएगा। श्रद्धा मिटेगी नहीं, श्रद्धा अमर रहेगी। श्रद्धा को लोग युग-युग तक पूजेंगे। क्रिस्टोफर ईशरवुड कहता है मैं ईश्वर को इसलिए नहीं पूजता क्योंकि मेरी श्रद्धा नहीं बची। मुझे जीवन को टांगने के लिए कोई खूंटी नहीं

बची। क्या जीवन जीने योग्य है? बार-बार अपने को पूछता है? अन्त में निष्कर्ष निकला जीवन जीने योग्य नहीं है? क्योंकि कोई खूंटी नहीं मिली जिस पर जीवन को टांग सके। बढ़िया सूट सिलवाया। घर में लाया तो टांगने के लिए खूंटी नहीं मिली। बढ़िया को धूल में कहां फेंके? जीवन के लिए खूंटी चाहिए वह उसको मिल नहीं रही है। जीवन जीने योग्य नहीं है? मैं आत्महत्या कर लूंगा। आत्महत्या का विचार करके कई बार जंगल के किनारे गया, नदियों के किनारे गया, समुद्र के किनारे गया। फिर सोचा कि शायद जीने का कोई कारण मिल जाए। फिर एक दिन ईश्रवुड ने अपने को कोसा कि तू कमीना हो गया है, तुम कायर हो, डरपोक हो, तुम रोज निश्चय करते हो आत्महत्या कर लोगे फिर लौट आते हो। आज तुम आत्महत्या कर लोगे। अगर तुम सच्चे बाप के बेटे हो तो आज आत्महत्या करके रहोगे। यह निश्चय करके घर से निकला। पिस्तौल को भर लिया। छह गोली उसमें भरी हुई है आज अपने को खत्म कर लोगे।

जब चला तो अमेरीका के कैलीफोर्निया स्टेट में होलीवुड नामक बड़ा प्रसिद्ध नगर है। जहां पर पश्चिम की फिल्म अभिनेत्रियां, फिल्म अभिनेता बहुत ज्यादा रहते हैं। जैसे बम्बई को कहा जाता है। बालीवुड फिल्म इंडस्ट्री के कारण। तो पश्चिम में होलीवुड अमेरीका में है जो फिल्म इंडस्ट्री का बहुत बड़ा केन्द्र है। संयोगवशात वहां एक रामकृष्ण मिशन है। रामकृष्ण मिशन के स्वामी प्रभवानन्दजी कुछ शिष्यों के साथ बैठे हुए थे और सत्संग-गोष्ठी कर रहे थे। आधा दरवाजा आश्रम का खुला हुआ है। ईश्रवुड बाहर से जा रहा है। जेब में पिस्तौल लिए हुए जा रहा है। स्वामीजी ने देखा, अरे! ये कौन? ईश्रवुड है क्या? क्यों जा रहा है? हां स्वामीजी, यह ईश्रवुड है। क्या हो गया इसको। बाल बिखरे हुए, फटे हुए कपड़े पहने हुए, चेहरे से उसके हवाइयां उड़ रही है। अजीब किस्म की ड्रेस पहने हुआ है, कैसे जा रहा है? इतना बड़ा आदमी, इतना बड़ा लेखक कैसे जा रहा है? शिष्यों ने कहा— हां-हां, स्वामीजी! कुछ समय से पगला गया है। कहता है आत्महत्या करूंगा? स्वामी ने कहा, बुलाओ-बुलाओ। उसे कौन बुलाएगा? स्वामीजी ने कहा, नहीं, बुलाओ उसे। तब उसे बुलाया। दरवाजे पर रुक गया। और स्वामीजी को गाली देने लगा। स्वामी ने कहा, आओ, बैठो, मन की बातचीत करो। क्या बात है बताओ। नहीं स्वामी! धर्म के ठेकेदारों से मुझे बहुत घृणा है, मैं नहीं सुनूंगा आपकी बात। क्या करने जा रहे हो? मैं आत्महत्या करने जा रहा हूं। आज मैंने प्रतिज्ञा की है कि अगर असल बाप का बेटा हूं तो आत्महत्या करके रहूंगा। स्वामीजी ने कहा तुम आत्महत्या के लिए स्वतंत्र हो, कोई तुम्हें रोक नहीं सकता। मेरी बात सुनने के बाद आत्महत्या का स्कोप बना रहेगा। आत्महत्या तो उसके बाद भी कर ही सकते हो। आत्महत्या करने के बाद तो मेरी बात सुनने नहीं आ सकते हो। आओ, मेरे से बातचीत करो। ईश्रवुड

ने कहा—ओ स्वामी! मैं तेरी बात केवल एक शर्त पर सुन सकता हूं। स्वामीजी ने कहा, क्या बात है? अगर आप मुझे शान्ति नहीं दे सके तो मैं आपको भी गोली मार दूंगा फिर अपने को। स्वामीजी ने कहा—आओ प्यारे, आ जाओ। हम इसके लिए भी तैयार हैं। बड़े अचम्भे में, विस्मय से भरे मन से ईश्रवुड आया। उसको थाम करके स्वामीजी ने कहा, क्या बात है? क्यों तुम इतने परेशान होते हो? स्वामीजी मैं आत्महत्या करने जा रहा हूं। क्या मतलब इसका? I kill myself. स्वामीजी ने कहा Kill you self. क्या तुम अपने आप की हत्या कर सकते हो? हां। स्वामी ने कहा लिख दो, तो उसने लिख दिया। स्वामीजी ने कहा क्या तुम अपने Self को मार सकते हो? उसने कहा yes. स्वामीजी ने कहा, कैसे? पिस्तौल निकाल कर दिखाया। स्टीगर दबाया, गोली चली और मैं खत्म हुआ। स्वामीजी ने कहा, आखिरकार तुम केवल अपने शरीर को ही मारोगे न। Self को कैसे मारोगे। उसने कहा, ओ स्वामी! Body ही तो Self है। ईश्रवुड तुम भूल कर रहे हो। Body Self नहीं बिल्कुल। सारी दुनिया कहती है Body Self है आप कहते हैं Body Self नहीं है। तब स्वामीजी ने उसको ऐसी विचार प्रणाली में डाला जैसा कि **स्वामी रामतीर्थ में और टिहरी गढ़वाल के नरेश राजा कीर्तिशाह** के बीच में हुआ। एक बार टिहरी गढ़वाल के नरेश ने पूछा—स्वामीजी! क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं। स्वामीजी ने हंसकर कह दिया, नहीं। तो उसने कहा वाह स्वामीजी आप दुनिया के देशों में अमेरीका में, जापान में इतना प्रचार करके आए हैं और आप कहते हैं ईश्वर में विश्वास नहीं करते हैं। तब स्वामीजी ने कहा, भोले राजा To see God is to be God. ईश्वर को देखने से ईश्वर ही बन जाता है। जानई तुम्ही तुम्ही होई जाई। **ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।** ब्रह्म को जानने वाला स्वयं ब्रह्म बन जाता है। हम तो नित्य ब्रह्म के साथ ही विहार करते हैं उसके साथ रहते हैं। उनके साथ हंसते-गाते, खेलते खाते, उठते-बैठते हैं। वह तो मेरा सबसे प्यारा सबसे निकटतम है। मेरे अन्तर में ही बैठा है। और आप कहते हैं विश्वास। तो विश्वास तो उसका किया जाता है जिसको देखा न हो, जो बहुत दूर हो, तब हम कहते हैं विश्वास कर लो, मान लो। मानने वाली बात नहीं है, जानने की बात है। जान लिया है तो बन गया।

कीर्तिशाह—तब स्वामीजी! क्या आप मेरी ईश्वर से भेंट करवा देने की कृपा करेंगे?

स्वामीजी—क्यों नहीं, अवश्य। देरी क्या है? आप जल्दी ही साक्षात्कार के लिए आवेदन पत्र बनाइये। तो जल्दी ही कागज लेकर आवेदन तैयार किया।

राजा कीर्तिशाह ने आवेदन पत्र में लिखा—हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! सादर निवेदन है कि मुझे आपसे साक्षात्कार की अनुमति प्रदान की जाए।

—आपका विश्वासी, कीर्तिशाह

स्वामीजी—राजा! आप अपने पत्र में पक्का नाम-पता लिख दो।

कीर्तिशाह—स्वामीजी मैंने अपना नाम कीर्तिशाह लिख दिया है। और पक्का पता, महाराजा टिहरी गढ़वाल राज्य भी लिख दिया है।

स्वामीजी—राजा! क्या तुम्हारा कीर्तिशाह वास्तविक नाम है?

राजा—हां स्वामीजी!

स्वामीजी—जब आप माता के गर्भ से प्रकट हुए तो क्या यह नाम आपके माथे पर लिखा था?

राजा—नहीं स्वामीजी! यह नाम तो कुछ वर्षों बाद घर वालों ने ज्योतिष के परामर्श पर रख दिया।

स्वामीजी—बोतलें किसी और Factory में बनती है और लेबल किसी और Factory में लगती है। इसलिए मनुष्य नाम लेकर नहीं आता। नाम जन्मजात नहीं होते। नाम तो कल्पित होते हैं। केवल लोक व्यवहार के लिए कल्पना से रख लिया जाता है और आवश्यकतानुसार बदले भी जा सकते हैं। इसलिए आप नाम नहीं है। नाम आपके शरीर पर अस्थायी रूप से चिपकाया हुआ लेबल मात्र है जो संसार ने दिया है और संसार ही छीन लेगा। आपका व्यक्तित्व नाम से पृथक्, नाम के बंधन से मुक्त, अनामी है।

एक नाम वाले अनेक मनुष्य होते हैं। एक मनुष्य के अनेक नाम भी होते हैं। एक का नाम है रामदास। रामदास के नाम की लाटरी निकल आए एक लाख रु. की तो बहुत से रामदास नाम के व्यक्ति निकल आएंगे कि मेरा नाम रामदास, तो मेरा नाम रामदास। और रामदास के नाम पर वारंट निकल आए तो सब रामदास भागेंगे। एक व्यक्ति के अनेक नाम हैं कोई घर का नाम, कोई स्कूल का नाम, कोई मित्र का नाम, कोई प्यार का नाम, कोई कोर्ट कचहरी का नाम। पशुओं और मनुष्यों में भी समान नाम होते हैं। एक रंगीला मस्त ग्वाला है जिसने अपने खटाल की भैंसों का नाम फिल्मी अभिनेत्रियों पर रखा है। वह पुकारता है हेमामालिनी तो एक भैंस दौड़ी आती है, तो किसी को लता मंगेशकर। उसको वह लता मंगेशकर के नाम से पुकारता है तो वह दौड़ी आती है भैंस। लोगों को आश्चर्य होता है नाम पुकार रहा है लता मंगेशकर पर दौड़ी आती है भैंस। रांची की गोशाला में गायों के नाम हैं किसी का सीता तो किसी का दमयन्ती, सावित्री आदि। तो मनुष्य-पशु के समान नाम हैं।

नाम परिवर्तनशील है। नश्वर है। क्षणिक है। धर्म परिवर्तन के साथ नाम भी बदल जाता है। अत: मैं नाम नहीं हूं। नामों ने भेद डाल रखा है। सबके नाम भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन सबके रखे हुए कल्पित नाम भिन्न-भिन्न हैं। सबका सत्य,

स्वाभाविक जन्मजात नाम एक ही है। सबका अपना प्यारा नाम एक ही है। सब अपने को मैं ही कहते हैं। हमने कहा रामदास बात सुनना, रामदास कहता है—हां जी। मैं सुन रहा हूं। मैंने कहा—कृष्ण कुमार! इधर आओ। कृष्ण कुमार कहता है हां जी, मैं इधर ही आ रहा हूं। Please William come here. Yes sir, I am coming here. यहां भी 'I' अपने को ही कहता है। दुनिया के छह अरब लोग अपने को मैं ही कहते हैं। किसी पंडित ने या गुरुद्वारे, चर्च ने उसका नाम मैं नहीं रखा है। किसी ने उसको सिखाया नहीं है 'मैं' नाम। इस नाम को रखने के लिए कोई Ceremony उत्सव नहीं हुआ, नाम के रखने पर लड्डू नहीं बांटे गए। सबका सहज स्वाभाविक ईश्वर प्रदत्त नाम है मैं। मैं—मैं के लिए संस्कृत में नाम है आत्मा। अतः राजा बताओ तुम्हारा असली नाम क्या है?

कीर्तिशाह।

अरे, यह झूठा नाम है।

राजा—हां, स्वामीजी! यह नाम तो झूठा, कल्पित, संकेत मात्र है। मैं नाम को छोड़कर अपना शेष परिचय लिख देता हूं—साढ़े पांच फुट कद, 36 इंच छाती, ऐसा रंग, रूप आदि।

स्वामीजी—राजा! यह तो शरीर का वर्तमान परिचय है, आपका परिचय नहीं। शरीर भी परिवर्तनशील और विकारी है। इस शरीर की कहानी मां के गर्भ में एक शुक्र के कीड़े से प्रारम्भ हुई, जिसे खुली आंख से देखा भी नहीं जा सकता। क्या उस वीर्य के कीटाणु का साढ़े पांच फुट कद, 36 इंच छाती और दो मन भार माना जा सकता है? गर्भ के अन्दर शुक्र कीट अनेक रूप बदलता है। शरीर के जन्म के समय वह बहुत छोटा एवं कोमल होता है। भ्रूण से शिशु, बाल, किशोर, तरुण, युवा, प्रौढ़, वृद्ध, रोगी, मृतक इन सब रूपों में निरन्तर परिवर्तित होता हुआ यह शरीर श्मशान की धूलि के कण में समाप्त हो जाता है। शुक्र के कीड़े से लेकर श्मशान की राख के कण तक निरन्तर परिवर्तित होने वाले रूपों में आप अपना व्यक्तित्व कहां खोजोगे? राजा! तुम रूपों को धारण करने वाले, फिर भी रूपों से पृथक्, विकारी रूपों के बीच में अविकारी—रूपों की लीला के बीच अरूपी हो। न नाम तुम्हारा सही परिचय है और न रूप। आवेदन-पत्र पर पक्का नाम-पता लिखो तो परमेश्वर से तुरन्त भेंट करवा दूं।

राजा कीर्तिशाह—तब स्वामीजी केवल इतना ही लिख देता हूं—राजा, टिहरी, गढ़वाल राज।

स्वामीजी—राजा! क्या यह आपका पक्का पता है?

राजा कीर्तिशाह—हां स्वामीजी! हम सदा से इस राज्य के शासक हैं।

स्वामी राम—एक समय था तुम्हारा यह शरीर ही नहीं था, एक समय है, यह शरीर है, एक समय पुनः होगा जब यह शरीर नहीं रहेगा। 30 वर्ष पूर्व तुम इस राज्य के राजा नहीं थे, 60 वर्ष के पश्चात् तुम राज्य के राजा नहीं रहोगे। अतः यह पक्का पता कैसे हुआ?

राजा कीर्तिशाह—महाराज! राजा तो बदलता है, किन्तु राज्य तो स्थायी है। अतः केवल राज्य का नाम ही पक्का पता है।

स्वामीजी—राजा! तुम अपनी टिहरी गढ़वाल रियासत को रो रहे हो, एक समय था जब यह धरती ही नहीं थी, एक समय है जब यह धरती है, एक समय पुनः होगा जब यह धरती नहीं रहेगी। तब तुम्हारा पक्का पता कहाँ रहा?

राजा—तब स्वामीजी! इस प्रकार से तो जगत् में कुछ भी पक्का नहीं है।

मैं देख्यो निरधार, यह जग कांचो कांच सो—बिहारी

स्वामीजी—राजा! अगर तू अपना पक्का पता जान ले तो मैं एक क्षण में तुम्हारी परमेश्वर से भेंट करवा देता हूं।

राजा कीर्तिशाह—मुझे कुछ समझ में नहीं आता, क्या कहूं?

स्वामीजी—अच्छा राजा! क्या यह ताज तुम्हारा है?

राजा कीर्तिशाह—हां, स्वामीजी।

स्वामीजी—राजा! क्या तुम ताज हो?

राजा कीर्तिशाह—नहीं स्वामीजी।

स्वामीजी—क्या यह सिर तुम्हारा है? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम सिर हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या यह मुख तुम्हारा है? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम मुख हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या यह भुजाएं तुम्हारी हैं? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम भुजाएं हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या यह छाती तुम्हारी है? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम छाती हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या यह पेट तुम्हारा है? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम पेट हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या ये जंघाएं तुम्हारी हैं? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम जंघाएं हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या ये पांव तुम्हारे हैं? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम पांव हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या यह जूते तुम्हारे हैं? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम जूते हो? राजा = नहीं

स्वामीजी—क्या यह शरीर तुम्हारा है? राजा = हां

स्वामीजी—क्या तुम शरीर हो?

राजा—(सोचकर) नहीं स्वामीजी! शरीर के प्रत्येक अंग को छूकर मैंने निश्चय कर लिया है कि शरीर मेरा तो है, पर मैं स्वयं शरीर नहीं हूं।

स्वामीजी—राजा! फिर तुम क्या हो?

राजा—स्वामीजी सम्भवतः मैं मन हूं। क्योंकि मन द्वारा ही मुझे भान होता है कि मैं शरीर का स्वामी हूं।

स्वामी—राजा! तुम्हारा मन क्या कभी गलती करता है, कभी भूल करता है? तब मन की भूल या चंचलता ज्ञात होने पर क्या तुम मन की ताड़ना करते हो?

राजा—हां, स्वामीजी! मैं मन को भूल, अपराध करने पर बहुत फटकारता हूं।

स्वामीजी—तब राजा! मन तुम्हारा नौकर जैसा है, जिसकी भूलों के लिए तुम उसे डांट-फटकार एवं दण्ड देते हो, तो तुम मन कैसे हो? तुम तो मन रूपी नौकर पर शासन करने वाले हो। बताओ, तुम कौन हो?

राजा—स्वामीजी! शायद मैं बुद्धि हूं, क्योंकि बुद्धि के द्वारा ही मन की भूलों का ज्ञान होता है।

स्वामी—राजा! तुम कभी कहते हो, कि 'यह कठिन विषय मेरी बुद्धि से परे है।' कभी कहते हो, 'अरे! उस समय मेरी अकल ही मारी गई थी।' इसका अर्थ है कि बुद्धि की असमर्थता एवं बुद्धि की भूल को भी आप जानते हैं।

राजा—हां स्वामीजी! बुद्धि की अयोग्यता, बुद्धि की सीमा, बुद्धि की असमर्थता तथा बुद्धि के भ्रम को बाद में मैं ही जान लेता हूं।

स्वामीजी—राजा! तुम कौन हो?

तुम आत्मा हो। यह आत्मा सबमें पिरोया हुआ है। सिर्फ मनुष्यों में नहीं जीव मात्र में यह आत्मा पिरोया हुआ है। मैं के लिए संस्कृत में चार शब्द हैं—मैं, अहम्, स्वयं, निज। हम कहते हैं गाय स्वयं रम्भाने लगी। कुत्ता स्वयं भौंकने लगा। तो कुत्ते के लिए भी स्वयं का प्रयोग होता है। हाथी स्वयं चिंघाड़ने लगा, गदहा

स्वयं रेंकने लगा। तो हाथी, गदहे में स्वयं शब्द लगा हुआ है। मोर स्वयं नाचने लगा। मोर में भी स्वयं है....

बादल स्वयं गरजने लगे

धरती स्वयं डोलने लगी

धूल स्वयं उड़ने लगी

कीट-कीटाणु स्वयं काटने लगे।

जड़ चेतन सबमें स्वयं पिरोया हुआ है, मैं पिरोया हुआ है।

इसलिए भगवान् गीता में कहते हैं—

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।। 6/30, गीता

भगवान् का घोषणापत्र देखो जो मुझे सर्वत्र देखता, All Person at all thing at all time at all place at all ways. सब मनुष्य, सब जीव, हर वस्तु, सब कालों में, सब स्थानों में, सब रास्तों में, यह जो भगवान् का रूप है, कितना महान् है। कौन दुनिया का धर्म इस रूप को बता सकता है? इसकी तुलना में किसने क्या कहा है? दुनिया भर के धर्मों को चुनौती देकर आप कह सकते हैं भगवान् ने इसमें जो परब्रह्म का रूप, ईश्वर का रूप स्थापित किया है इसकी तुलना में किसी के पास भी दुनिया में कहीं भी कुछ नहीं है।

इसलिए गीता कहती है—'यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।।' जो मुझे सर्वत्र देखता है। जो सर्व में मुझे देखता है और सर्व को मुझमें देखता है उसको मैं कभी नहीं भूल सकता हूं। वह मुझे कभी नहीं भूलता है। वह मेरे में है, मैं उसमें हूं। इसलिए राजा कीर्तिशाह को बताया गया—मैं हूं, मैं सब कुछ हूं और सदा सर्वदा हूं। मैं का नाम है आत्मा। उस आत्मा के पक्के ठिकाने में तुम टिक जाओ तो एक क्षण में तुम्हारी इन्टरव्यू हो जाए भगवान् से। वहां स्वामी प्रभवानन्दजी ने ईशरवुड को उसी प्रकार से सारा समझाया कि हे ईशरवुड, असली मैं को तू जाने नहीं। असली मैं को जानते ही तुझे पता लगेगा कि असली मैं को कोई मार सकता ही नहीं। तुम क्या मारोगे। दुनिया की कोई शक्ति उसे नहीं मार सकती। मैं सबको मार सके तो मार सके उस मैं को मार सकने वाली शक्ति संसार में किसी के पास नहीं है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। 2/23, गीता

उसको कोई शस्त्र मार नहीं सकता है उसको कोई आग जला नहीं सकती है। उसको पानी गीला नहीं कर सकता, वायु सुखा नहीं सकती। रूस के बाद दुनिया

का सबसे बड़ा देश बेल्जियम है और अमेरीका में सबसे बड़ा देश बेल्जियम है। वहां के प्रो. ने कहा, यह जो आप कहते हैं—

नैनं छिन्दंति.... 2/23, गीता

इसमें आप विश्वास क्यों करते हैं। भगवान् कृष्ण कहते हैं इसलिए करते हैं या इसमें आपके पास कोई वैज्ञानिक प्रमाण है। मैंने कहा इसका वैज्ञानिक प्रमाण है। सो कैसे? इसका वैज्ञानिक प्रमाण यह है—

दुनिया का कोई शस्त्र किस वस्तु को काट सकता है। वह शस्त्र अपने से स्थूल वस्तु को काट सकता है। यदि शस्त्र है उसमें धार है तो धार से मोटी वस्तु को काट सकता है। उससे अधिक पतली चीज को कभी नहीं काट सकेगा। ब्लेड की धार अपने से मोटी चीज को काट सकेगी। अपने से अधिक पतली चीज को नहीं काट सकेगी। ब्लेड की धार को आप खड़े दाव में किसी चाकू से काटकर दो भाग करना चाहें असम्भव है, वह नहीं कर सकते। चाकू अपने से मोटी चीज को काट सकता है अपने से बारीक को नहीं काट सकता है। पतले कागज की धार को खड़े दाव में आप ब्लेड से काटना चाहें यदि कागज की मोटाई ब्लेड के बराबर है तो उस स्थिति में ब्लेड उसे कभी नहीं काट सकेगा। ब्लेड से मोटा है तो ब्लेड उसे शायद काट सके। इसलिए हर शस्त्र अपने से कुछ मोटी चीज को काट सकता है। मोटी चीज में छेद कर सकता है। अपने से बारीक में, सूक्ष्म में छेद नहीं कर सकता है। आत्मा स्थूल है ही नहीं, भौतिक है ही नहीं। वह चेतना है। उसकी लम्बाई, मोटाई, चौड़ाई कुछ है नहीं। दुनिया का कौन शस्त्र उसको काट सकेगा, बताओ? कोई शस्त्र नहीं काट सकेगा। उसको आग जला नहीं सकती। अनेक भौतिक वस्तुओं में भी अनेक भौतिक तत्त्वों को आग नहीं जला सकती। आग पानी को नहीं जला सकती। आग वायु को भी नहीं जला सकती। आकाश तत्त्व को भी नहीं जला सकती। केवल पृथ्वी के भी उन तत्त्वों को जला सकती है जिनमें कार्बन है। जिनमें कार्बन न हो उसको भी नहीं जला सकती। वह जो 'फायर प्रूफ पेंट' कर लेते हैं दुकानों के सामने, मकानों के सामने जिसको आग जला नहीं सकती। एस्बेस्ट्रेट शीट है उसके ऊपर आग रख दीजिये वह नहीं जलेगा।

एस्बेस्ट्रेट शीट को आग नहीं जला सकती। आग अनेक भौतिक वस्तुओं को नहीं जला सकती। पांच तत्त्वों में से केवल पृथ्वी तत्त्व की उन चीजों को जला सकती है जिनमें कार्बन हो। आत्मा भौतिक है ही नहीं। न वह पृथ्वी है न जल, न अग्नि है, न वायु है और न वह आकाश है। न वह कार्बन है न बिना कार्बन है। वह इन सबसे परे है भला वह आग कैसे जलाएगी। न इसको पानी गीला कर सकता, पानी किस को गीला कर सकता है। पानी क्या आकाश को गीला कर सकता है, नहीं कर सकता। इतनी वर्षा होती है क्या आकाश गीला होता है। पानी

क्या अग्नि को गीला कर सकता है, नहीं कर सकता। पानी केवल धरती को गीला कर सकता है। धरती की भी उन चीजों को गीला करता है जिनके अन्दर छेद हो। कपड़े में छेद है अतः पानी घुसकर गीला कर देता है। लेकिन मोमजामा है, उस पर पानी फिसल जाता है। प्लास्टिक पर से पानी फिसल जाता है। अतः उसे गीला नहीं कर सकता। जिसमें छेद होगा उसमें पानी घुसेगा। उसको गीला करेगा। आत्मा गीला कैसे हो सकता है? जब कोई शस्त्र उसको छेद कर ही नहीं सकता, छेद हो, जल प्रवेश करे तब तो गीला हो। न छेद हो, न जल ठहरे तब पानी गीला कैसे कर सकता है। सूखने का प्रश्न तब हो जब गीला हो। जब गीला ही न हो तो सूखने का प्रश्न कहां हो? कितना वैज्ञानिक चिंतन है हमारा।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। 2/23, गीता

जिसके सामने अमेरीका के अला विमा आर्मी जो पगला गए थे क्रिश्चियन दर्शन से Philosophy से। वे आकर यहां नतमस्तक हो जाते हैं। ईश्रवुड कहता है कि स्वामीजी मुझे बड़ी शान्ति मिली है। कल मैं फिर आऊंगा। धीरे-धीरे रोज आने लगा। उसकी इतनी बड़ी श्रद्धा हुई। धीरे-धीरे सारी की सारी सम्पत्ति गरीबों को बांट दी। सब काम छोड़ दिया। केवल सफेद कुरता और पाजामा पहनकर कभी सफेद कुरता और मद्रासी लुंगी पहन करके रामकृष्ण मिशन के होलीवुड में रहता है। वहां पर अपना लेखन का कार्य करता है। पुस्तकें लिखता है। वहां प्रभवानन्दजी से मिलकर भगवद्गीता का पदानुवाद किया। Bhagawat Gita The song of God by क्रिस्टोफर ईश्रवुड और स्वामी प्रभवानन्द। वह पुस्तक इस समय दुनिया में Best Seller बनी हुई है। पहले दुनिया में एनी बेसेन्ट की जो पुस्तक भगवद्गीता पर थी उसकी बड़ी मांग थी। अब ईश्रवुड की गीता की बहुत मांग है। ईश्रवुड के अपने जीवन में परिवर्तन ला दिया गीता ने। गीता ने उसे आत्महत्या से बचा दिया। गीता ने उसको नया जीवन दे दिया। उसने सात लेख लिखे जो हिन्दुस्तान टाइम्स, दिल्ली में छपे कि How I become a Hindu. मैं कैसे हिन्दू बना। How I become a vedantee. Gita save my life. गीता ने मेरा जीवन कैसे बचाया। सोचो हम भारतवासी हैं। हम भगवान् कृष्ण के देश वाले हैं। और हमारे ज्ञान से पश्चिम के लोग, संसारभर के लोग भी लाभान्वित हो रहे हैं और हम उससे वंचित हो रहे हैं। कितने दुर्भाग्य की बात है इसलिए भगवान् कृष्ण के महान् संदेश को हम हृदयंगम करें।

डॉ. राधाकृष्णन् को स्टालिन ने कहा, हम नास्तिक हैं। हम ईश्वर को नहीं मानते। डॉ. राधाकृष्णन् ने कहा कि मैं सिद्ध कर सकता हूं कि आप ईश्वर को मानते हैं। उन्होंने स्टालिन से पूछा, क्या आप चाहते हैं कि आपके अधीनस्थ

अधिकारी आप से सच बोलें या झूठ बोलें? स्टालिन ने कहा, मैं चाहता हूं सच बोलें, झूठ बोलने वाले को मैं सूली पर टंगवा दूंगा। राधाकृष्णन् ने पूछा, क्या आप मानवता का कल्याण चाहते हैं? स्टालिन ने कहा, हम गरीबों के कल्याण के लिए ही संघर्ष कर रहे हैं। राधाकृष्णन् ने पूछा, क्या आप अपने देश को सुन्दर बनाना चाहते हैं या फूहड़ और कुरूप? स्टालिन ने उत्तर दिया हम अपने देश को सुन्दरतम देश बनाना चाहते हैं। राधाकृष्णन् ने तर्क दिया कि तब आप ईश्वर में विश्वास करते हैं। क्योंकि ईश्वर सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् ही है। इससे स्टालिन की भारतीय दर्शन में बड़ी रुचि जगी और वह डॉ. राधाकृष्णन् को बार-बार अपने पास बुलाकर उनसे गीता का तत्त्वज्ञान सुनता रहता था।

काउंट लिओ टाल्सटाय—बौद्धिक ओज से भरपूर, शारीरिक दृष्टि से समकालीन लोगों में स्वस्थ, वेश और प्रतिभा के कारण अत्यन्त प्रतिष्ठित, एक बड़ी जमींदारी के स्वामी, आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त रूसी भाषा के महान् लेखक और विश्व साहित्य के प्रतिष्ठित यशस्वियों में से एक काउंट लिओ टाल्सटाय का बाह्य जीवन समृद्धमय था, पर उन्हें लगा—जीवनधारा रुक-सी गई है।

प्रत्येक प्राणी के लिए और स्वयं उसके लिए भी जीवन में पीड़ा, मृत्यु और निरन्तर क्षय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इसलिए निश्चय कर लिया था कि इस भांति वह जीवित नहीं रह सकता। या तो जीवन का कोई अर्थ उसे जानने को मिलना चाहिए, नहीं तो फिर वह अपने-आप को गोली मार लेगा।

इस आन्तरिक संघर्ष ने उन्हें द्रष्टा-चिन्तक, जीवन तत्त्व के सत्य का अन्वेषी बनने को पुनः विवश किया। टाल्सटाय के स्वलिखित कागज में एक 'अज्ञात प्रश्नावली' इस प्रकार से है—

(1) मैं क्यों जी रहा हूं?

(2) मेरे और अन्य सब लोगों के अस्तित्व का कारण क्या है?

(3) मेरे अस्तित्व और दूसरे सारे अस्तित्वों का प्रयोजन क्या है?

(4) मेरे अन्तर में अच्छाई-बुराई का जो विभाजन मैं अनुभव करता हूं इसका अर्थ क्या है और ऐसा क्यों होता है?

(5) मुझे कैसे जीना चाहिए?

(6) मृत्यु क्या है? उससे मैं अपने को कैसे बचा सकता हूं?

इन छह अज्ञात प्रश्नों की खोज के लिए टाल्सटाय दार्शनिकों की ओर झुका—यह जानने के लिए कि मानव जीवन के प्रयोजन के विषय में दार्शनिकों की राय क्या है? हर प्रकार की दार्शनिक पुस्तकें उसने पढ़ना शुरू किया। शोपेनहार, प्लेटो, कांट, पास्कल के दर्शन में उन्हें अपने प्रश्नों का सही उत्तर न मिला। समूचा

विज्ञान भी उसके मन को समाधान न दे सका। टाल्सटाय को यह जानकर बड़ा खेद हुआ कि इन दार्शनिकों ने उन्हीं प्रश्नों का उत्तर अत्यन्त स्पष्ट और सुनिश्चित रूप से दिया है जिसका प्रत्यक्ष जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है। पर जहां निश्चित सुझाव और मार्गदर्शन की आवश्यकता है वहां वे उसे टाल गये हैं। आयु के सातवें दशक के अंत में और अस्सी वर्ष के आरम्भ में भारतीय दर्शन की ओर मुड़े। भारतीय दर्शन के प्राचीन स्मारक वेदों और उपनिषदों व भारत के श्रेष्ठ महाकाव्यों (रामायण और महाभारत) महाभारत में गीता उन्हें विशेष महत्त्व की लगी अतः विशेष प्रिय थी और लोक साहित्यों की ओर जीवन के अंतिम अर्थ और मानव जीवन के लक्ष्य का उत्तर पाने के लिए। तब से मृत्यु पर्यन्त उन्होंने भारतीय संस्कृति की ओर बहुत ध्यान दिया और उसे रूस में लोकप्रिय बनाया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि रूसी पाठकों में भारतीय प्राचीन ज्ञान और उनके वीरतामय महाकाव्यों को, विशेषकर गीता को प्रेम करना टाल्सटाय से सीखा।

वैदिक साहित्य विशेषकर उपनिषदों, वेदान्त और भगवद्गीता की प्रशंसा में **आयरिश कवि जी. डब्ल्यू. रसेल** का निम्न उद्धरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसे पढ़कर प्रत्येक भारतवासी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के बारे में गर्व कर सकता है—इस काल के लोगों-गेटे, वड्र्सवर्थ, इमर्सन और थोरो में यह ज्ञान और जीवन शक्ति कुछ अंश में मिलेगी, लेकिन जो कुछ भी इन्होंने कहा है उससे बहुत अधिक पूर्व के महान् और पवित्र ग्रंथों में मिलेगा। भगवद्गीता और उपनिषदों में सभी बातों के बारे में ज्ञान की ऐसी दिव्य पूर्णता मिलती है कि मुझे लगता है उनके रचने वालों ने हजारों भाव भरे पुराने जन्मों में पैठकर ही....इतने अधिकार के साथ उन बातों को लिखा है जिन्हें आत्मा निश्चित समझती है।

श्रीयुत् एफ.टी. ब्रूक्स साहब ने कहा है—श्रीमद्भगवद्गीता भारतवर्ष में यत्र-तत्र बिखरे हुए अनेक ग्रंथों को जोड़ने वाली एक अप्रतिम शृंखला है और भविष्य के राष्ट्रीय जीवन की एक अमूल्य निधि है। भारतवर्ष का राष्ट्रीय धर्मग्रंथ होने के लिए आवश्यक समस्त गुण इसमें एकत्र किए गए हैं। इतना ही नहीं, भविष्य में समस्त संसार का धर्मग्रंथ होने की अनुपम योग्यता इसमें है। समस्त मानव जाति के भविष्य को अत्यन्त उज्ज्वल बनाने के लिए भारत के वैभवशाली भूतकाल की यह एक अपूर्व निधि है।

(कल्याण शिवांक 659 या 639)

भगवद्गीता के अतिरिक्त ऐसा कोई दूसरा भारतीय ग्रंथ नहीं है जिसकी भारतवर्ष में इतनी प्रसिद्धि हुई है और जिसको ईश्वरीय संगीत मानकर भारत में सभी प्रेम करते हैं।

एडविन आर्नाल्ड (गीता का आंग्ल पद्यानुवाद सांग सेलेशियल)

मैक्समूलर कहते हैं—धन्य हैं वे लोग जिन्हें महान् ग्रंथ के महानायक कृष्ण की भूमि में जन्म लेने का सौभाग्य मिला। वे धन्य इसलिए भी कि वे गीता रूपी अमृत का पान कर अमर्त्य हो जाएंगे? जब मैं गीता पढ़ता हूं तो लगता है कि मैंने जीवन के इस सार को पाने में बड़ी देर कर दी। पाश्चात्य जिस धर्म की सृष्टि अब तक नहीं कर सकता वह उदात्त धर्म इसमें विद्यमान है।

कनाडा के प्रेसिडेन्ट मिस्टर टयूडो ने जब गीता पढ़ी तो वे दंग रह गए। मिस्टर टयूडो ने कहा—मैंने बाइबिल पढ़ी, एंजिल पढ़ा और भी कई धर्मग्रंथ पढ़े। सब ग्रंथ अपनी-अपनी जगह पर ठीक हैं, लेकिन हिन्दुओं का यह श्रीमद्भगवद्गीता रूपी ग्रंथ तो अद्भुत है। इसमें किसी मजहब, मत, पंथ, सम्प्रदाय की निंदा-स्तुति नहीं है, बल्कि इसमें तो मानव मात्र के विकास की बात है। शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न और बुद्धि में समत्व योग का, ब्रह्म ज्ञान का प्रकाश जगाने वाला ग्रंथ भगवद्गीता है। उन्होंने लिखा—Geeta is not The Bible of Hindu but it is the Bible of humanity.

पाश्चात्य संस्कृति के प्रसिद्ध लेखक प्रोफेसर श्री आटाण्ट्रास, (ब्रेसलाऊ यूनिवर्सिटी, जर्मनी) के अनुसार भगवद्गीता के अतिरिक्त ऐसा कोई दूसरा भारतीय ग्रंथ नहीं है जिसकी भारतवर्ष में एवं अन्यान्य देशों में दूर तक इतनी प्रसिद्धि हुई हो। जिसको ईश्वरीय संगीत मानकर हिन्दुस्तान के सभी लोग इतना प्रेम करते हैं।

सर जान वुडरफ—गीता भारतीय साहित्य का सर्वोत्तम रत्न है।

टी.एस. इलियट ने गीता को मानव वाङ्मय की अमूल्य निधि कहा है।

संसार की 28 सभ्यताओं के विशेषज्ञ **अर्नाल्ड टायनबी** ने स्वीकार किया कि अणुबम से विध्वंस की ओर जाते पाश्चात्य जगत् को पौर्वात्य, भारतीय तत्त्वज्ञान की ओर जाना पड़ेगा, जो सभी के अन्दर ईश्वर को मानता है।

नोबेल पुरस्कार विजेता **फ्रेंच साहित्यकार रोमां रोलां** ने माना कि गीता ने यूरोप की अनेक आस्थाओं को धूल-धूसरित कर दिया तथा मानव को नवदृष्टि दो।

जापान के शिन्तो धर्म पर भी गीता का प्रभाव है। चीन के कन्फ्यूशियस धर्म एवं ताओ धर्म में भी गीता के सत् विवेक तथा शासन की कार्यक्षमता के समन्वय का संदेश है। चीन में प्रथम शती में महायान बौद्ध धर्म के साथ-साथ गीता भी पहुंची तथा चीनी भाषा में अनूदित हुई।

'गीता सिर्फ व्यक्तियों या राष्ट्र विशेष का नहीं बल्कि समग्र विश्व के संकट निवारण हेतु अपरिहार्य ग्रंथ है'—इंडोनेशिया के **राष्ट्रपति सुकर्ण**।

'दुनिया के सब धर्मग्रंथ आदमी को सही मार्ग पर लाने में असमर्थ रहे हैं।

मगर पृथ्वी पर एक पुस्तक ऐसी भी है जो भविष्य में हर व्यक्ति का मार्गदर्शन करने जा रही है और उस पुस्तक का नाम है', श्रीमद्भगवद्गीता।

यह पुस्तक सही अर्थों में धर्मग्रंथ नहीं है, आदमी के मनोविज्ञान को उघाड़ने वाली चिकित्सा पद्धति है, जो हिन्दू, मुसलमान, ईसाई जैसी सम्प्रदायवादी उपाधियों से अलग हटकर आदमी को इन्द्रियों का एक ऐसा जाल मानती है जिसमें 'ईश्वर' की सम्भावनाएं छिपी पड़ी हैं। आदमी को अगर सचमुच सम्पूर्ण मनुष्य बनना है तो गीता के अतिरिक्त उसका और कोई हितैषी नहीं। भविष्य में जो संन्यास फलित होगा वह न पादरियों का संन्यास होगा, न बौद्धों का। वह संन्यास कृष्ण द्वारा बताया गया संन्यास होगा जिसमें आदमी संसार में जीता हुआ भी भीतर से रूपान्तरित हो जाता है।

साइमन सायफर्ट (अमरीकी विद्वान्)

गीता की गूंज कैलीफोर्निया के आध्यात्मिक आकाश पर। डॉ. कैलाश वाजपेयी 12.8.79 हिन्दुस्तान, नई दिल्ली।

अंग्रेजी के रोमाण्टिक कवियों पर गीता का प्रभाव

डॉ. कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव ने बीस वर्षों के अनुसन्धान के बाद स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादित किया है कि अंग्रेजी काव्य की रोमाण्टिक धारा पर गीता का स्पष्ट प्रभाव है। उन्होंने यह प्रमाणित किया है कि श्रीमद्भगवद्गीता के प्रभाव से रोमाण्टिक युग के वर्ड्सवर्थ, कालरिज, शैली, कोट्स, बायरन और वाल्टर स्कॉट जैसे प्रमुख कवि गहरे रूप से प्रभावित थे। उनकी कविता पर इस महान् ग्रंथ का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुशीलन से इन कवियों ने जीवन और आत्मा सम्बन्धी जिन मूल्यों को अपनाया था, वे हैं पुनर्जन्म, कर्म का सिद्धान्त, जगत् की सत्ता, आत्म-तत्त्व की अमरता, अवतारवाद इत्यादि। इन मूल्यों ने ही रोमाण्टिक कवियों को विशेष रूप से मोहित किया था। उनकी कविताओं में बहुत से अंश अत्यन्त दुर्बोध और मन, बुद्धि की समझ से परे हैं। यदि उन पर गीता के प्रकाश में विचार किया जाये, तो वे एकदम स्पष्ट रूप से उद्भासित हो उठते हैं।

अठारहवीं शताब्दी में प्राच्यविद् चार्ल्स विलकिन्स, सर विलियम जोन्स आदि ने भारत-विद्या की जो खोज की थी, उसी के परिणामस्वरूप प्राच्य देश में नवजागरण का सूत्रपात हुआ था। यह नवजागरण वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पुरातत्त्व आदि की खोज के क्षेत्र में था। विलकिन्स ने गीता का अंग्रेजी पद्यों में अनुवाद किया था और वह अनुवाद लन्दन में सन् 1785 में प्रकाशित हुआ था। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि अंग्रेजी के रोमाण्टिक कवियों ने विलकिन्सकृत

गीता के अनुवाद को मात्र पढ़ा ही नहीं था, गीता के उपदेशों ने उनके मर्म को भी छू लिया था और उसी की ज्योति से उनकी कविता में और चमक आ गयी थी।

आत्मचेतना सम्पन्न बाङ्ला के शीर्ष कथाकार शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय ने इस सम्बन्ध में अपनी टिप्पणी में कहा है कि प्रोफेसर श्रीवास्तव का यह दावा खारिज करने योग्य नहीं है। इसी बीच उनके इस अनुसन्धान ने स्वयं अंग्रेजों के देश ब्रिटेन में हलचल मचा दी है। इस सन्दर्भ में बी.बी.सी. लन्दन ने डॉ. श्रीवास्तव का एक साक्षात्कार भी प्रसारित किया था।

डॉ. कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव ग्लासगो विश्वविद्यालय में अतिथि प्राध्यापक हैं। गीता के सम्बन्ध में लिखे गये उनके लेख सौन्दर्य-शास्त्र की ब्रिटिश पत्रिका 'एक्सप्लिकेट' में नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं। ब्रिटेन और अमेरीका की अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी वे लिखते रहते हैं। इसी कारण मैकमिलन इण्डिया से प्रकाशित उनका ग्रंथ 'भगवद्गीता एण्ड दि इंग्लिश रोमाण्टिक मूवमेण्ट' पाठकों को विशेष रूप से आकर्षित कर रहा है।

बंगाल के एक श्रेष्ठ संत

महानामव्रत ब्रह्मचारी जब इंग्लैण्ड गए तब कुछ ईसाई सज्जन उन्हें अपने पुस्तकालय में ले गए और दिखाया कि बाइबिल को विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त है। गीता द्वितीय स्थान पर है। वहां ब्रह्मचारीजी मौन रहे। पर शाम की सभा में उन्होंने कहा कि बाइबिल का विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त करने का कारण बाइबिल सोसायटी है जिसे विश्व की ईसाई सरकारें एवं उद्योगों के व्यक्तिगत प्रतिष्ठान दोनों ही एक निश्चित परिमाण में अर्थ एवं सभी प्रकार का सहयोग प्रदान करते हैं। फलतः आप अपने प्रयास एवं खर्च से बाइबिल का विश्व की प्रायः सभी भाषाओं में अनुवाद, निशुल्क वितरण एवं प्रचार का कार्य करते हैं।

पर अपने देश में गीता प्रचार के लिए कोई गीता सोसायटी नहीं है, न इसके लिए सरकार से किसी प्रकार का सहयोग प्राप्त होता है वरन् विरोध ही, बाधा ही प्राप्त होती है। ईसाई राष्ट्रों के स्कूलों में बाइबिल अनिवार्य है। पर अपने देश में हिन्दी प्राइवेट स्कूलों में भी जहां गीता पढ़ाई जाती है वहां भी सरकार बाधा देती है। ईसाई परिवारों, स्कूलों, प्राइवेट एवं सरकारी दफ्तरों में बाइबिल को सम्मान एवं प्रचार प्रसार का अवसर प्राप्त है। पर यह सारी बातें अपने देश के न परिवार में है, न स्कूल-कालेजों में है न सरकारी-गैरसरकारी दफ्तरों में प्राप्त है। हमने गीता के प्रचार के लिए न अपने देश में ही और न विश्व में ही प्रयास किया। न यहां के प्राइवेट प्रतिष्ठान ही गीता प्रचार के लिए कोई सहयोग प्रदान करते हैं।

यह तो गीता की अपनी विशिष्टता है, गीता के वैचारिक आकर्षण से गीता स्वयं विश्व में द्वितीय स्थान रखती है। विश्व के विद्वान् स्वयं गीता के विचारों से प्रभावित एवं प्रेरित होकर अपने-अपने देश की भाषा में, अपनी मेहनत एवं खर्च से बड़े परिश्रम एवं कष्ट के साथ गीता का अनुवाद करते हैं। और स्वयं ही अपने देश में गीता प्रचार जनकल्याणार्थ किया है। आप थोड़ी सी उदारता दिखावें और अपनी सोसायटी, यानी चर्चों में प्रार्थना के पश्चात् मात्र इतना कहें कि गीता अच्छा ग्रंथ है। इसे भी पढ़ना चाहिए। तब देखें गीता प्रथम स्थान को प्राप्त करती है या नहीं। जब गीता के लिए कोई सोसायटी नहीं है, सरकार एवं व्यक्तिगत प्रतिष्ठानों का कोई सहयोग नहीं है, न इसकी चर्चा परिवारों में है, न स्कूल, कालेज एवं दफ्तरों में है। तब इसके पश्चात् भी गीता स्वयं की विशिष्टता के कारण द्वितीय स्थान पर है तो मैं इसे प्रथम स्थान ही मानता हूं।

एक वस्तु चल सकती है दो कारणों से या तो धक्का या फिर आकर्षण। या तो Puss पुश या Pull पुल। बाइबिल चल रही है पीछे के धक्के के जोर पर। गीता चल रही है विश्व मानव के प्राणों के आकर्षण से। अब किसका कितना महत्त्व है आप लोग ही विचार कर लीजिये।

इसी प्रकार की घटना **स्वामी विवेकानन्दजी** के साथ है। पादरी लोग उनको एक पुस्तकालय में ले गए जहां गीता सबसे नीचे रखी थी और बाइबिल सबसे ऊपर। स्वामी विवेकानन्दजी ने पादरियों के भाव को भांप कर तुरन्त कहा— Very good foundation. जब तक गीता नींव में रहेगी, दुनिया के सभी धर्म जीवित रहेंगे, फलेंगे-फूलेंगे और गीता के वहां से हटते ही सब धर्म धराशायी हो जाएंगे। और स्वामी विवेकानन्दजी द्वारा गीता को खींचते ही सभी ग्रंथ गिर पड़े।

लन्दन में स्वामी विवेकानन्द की जर्मन के प्राच्यविशारद प्रोफेसर मैक्समूलर से भेंट हुई थी। दोनों का परिचय प्रगाढ़ मित्रता में परिणत हुआ। जब स्वामीजी भारत लौटने के लिए मैक्समूलर से विदा लेने लगे, तो उन्होंने स्वामीजी से प्रार्थना की कि स्वदेश पहुंचने के बाद मेरे लिए कोई ऐसी वस्तु उपहार स्वरूप भिजवाइए जो भारतवासियों का वैशिष्ट्य हो, भारतीय संस्कृति का प्रतीक तथा प्रतिनिधि हो। भारत लौटने पर स्वामीजी ने मैक्समूलर के प्रेमपूर्वक अनुरोध को ध्यान में रखकर वह वस्तु तत्काल भिजवा दी थी—वह थी भगवद्गीता की एक प्रति।

आस्ट्रिया की राजधानी वियना में स्थित विशाल पुस्तकालय में एक भारतीय पत्रकार द्वारा वहां के पुस्तकालय के अध्यक्ष से कई पुस्तकों की जानकारी मांगने पर उसने प्रसन्नतापूर्वक सब पुस्तकों के बारे में बताया। आखिर में उसने पूछा आपके यहां की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक कौन-सी है? उसने बड़ी प्रसन्नता के साथ

कहा आप मेरे साथ आइये और वह उसे आखिरी मंजिल पर एक छोटे और सुन्दर कक्ष में ले गया। वहां बहुत ही आकर्षक और सजे हुए बक्से में से एक पुस्तक निकाल कर पत्रकार के हाथ में दी। उस पुस्तक को देखकर पत्रकार महोदय चकित रह गए क्योंकि वह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता थी।

पादरी स्टोक्स सत्यानंद बना

शिमला से लगभग 35 मील दूर कोरखाई में ईसाई प्रचार सेन्टर स्थापित किया गया था। सन् 1904 की बात है। अमरीकी नवयुवक पादरी मि. स्टोक्स केन्द्र का प्रमुख था। युवा पादरी प्रतिदिन गले में दूध की शीशी लटकाता है। डिब्बे में पकी हुई खिचड़ी और थैले में दवाइयां लेता है। प्रतिदिन पहाड़ी के गांवों में पहुँच कर बीमारों की सेवा करता। भूखों के लिए धन देकर भोजन की व्यवस्था करता व गरीबी का लाभ उठाकर धर्म परिवर्तन कराता। कुछ ही दिनों में युवा पादरी गरीबों में देवता की तरह पूजा जाने लगा।

एक दिन अचानक रिटायर्ड सिविल सर्जन तथा प्रसिद्ध सन्त स्वामी सत्यानन्द जी महाराज हिमालय की यात्रा से जाते समय कोरखाई के पास पहुँचे। सूर्यास्त का समय था। अचानक जैसे ही पादरी स्टोक्स सपरिवार घूमने जा रहा था कि उसने तेजस्वी संन्यासी को जाते देखा। परिचय के बाद पादरी ने स्वामीजी से रात्रि अपनी कुटिया में बिताने की प्रार्थना की। स्वामीजी ने स्वीकार कर लिया। रात्रि शयन के पूर्व स्वामीजी ने गीता का पाठ किया। पादरी को गीता के विषय में जिज्ञासा हुई। गीता के विषय में स्वामीजी से विचार हुआ तब गीता का ज्ञान सुनकर आश्चर्यचकित होकर स्वामीजी को कुछ दिन के लिए और रहकर सत्संग की प्रार्थना की। और वह गीता के तत्त्वज्ञान से इतना प्रभावित हुआ और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि गीता का ज्ञान सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपयोगी है। इसलिए गीता के प्रति समर्पित होने में ही जीवन की सार्थकता है। और उसने घोषणा की, 'मैं भारत में ईसाइयत के प्रचार के लिए आया था। किन्तु, आज गीता व भगवान् कृष्ण के तत्त्व को समझकर सनातन धर्म की शरण ग्रहण करता हूं।' स्टोक्स ने स्वेच्छा से अपना नाम बदल कर सत्यानन्द रखा तथा कुटिया के पास भगवान् कृष्ण के मंदिर की स्थापना कराई। वह आजन्म गीता व भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति करता रहा। भगवान् कृष्ण के इस वाक्य—'जो मनुष्य खुद कमाकर खुद खा जाता है वह अन्न नहीं खाता बल्कि पाप खाता है।' इसने उसे आजीवन चमत्कृत रखा। पादरी स्टोक्स की पोती डॉ. विद्या स्टोक्स इस समय हिमाचल प्रदेश कांग्रेस की बड़ी नेता है और प्रदेशाध्यक्ष भी रह चुकी है।

आस्ट्रियाई युवक जार्ज सीब्रा वियना विश्वविद्यालय में थीसिस की तैयारी करते समय भारतीय दर्शन के प्रति आकर्षित हुआ और भारत आकर ऋषिकेश में गंगा के पुनीत दर्शनों एवं गंगा तट के वातावरण से उन्हें अपार शान्ति प्राप्त हुई। इसके

बाद भगवान् श्रीराम के पावन चरणों में पवित्र अयोध्या नगरी में तीन वर्ष तक साधना की। और राम के नाम के महत्त्व को समझकर कहते हैं—'राम नाम तो मेरे लिए सत्य है ही, भारत ही सत्य का दूसरा नाम है। भारत केवल मेरे लिए ही नहीं, अपितु विश्व के लिए ही मोक्ष भूमि है। भारत अवतारों की धरा है। और इस तरह समूचे संसार के लिए कल्याण की धरा है। मेरा दिल कहता है भारत ही दुनिया का दिल है।

वे अन्यत्र कहते हैं—'पाश्चात्य देशों की मानसिक पराधीनता की भावना ने इस धर्मप्राण देश की आत्मा को इतना जकड़ा हुआ है कि विदेशी के मुंह से भारतीय संस्कृति का गुणगान सुनकर उनमें आत्म विश्वास पैदा होता है। मैं जब भारतीय धर्म, समाज, दर्शन, संस्कृति और सभ्यता का गुणगान करता हूं तो भारतवासियों के चेहरे पर चमक आ जाती है। भारत को सिर्फ एक बार जागना है। फिर तो वह ऐसा उठेगा कि संसार को ज्ञान का अद्‌भुत प्रकाश देगा। भारत का धर्म ज्ञान-विज्ञान सम्मत है। इसलिए मैं भारत के ज्ञान सम्मत भक्ति भाव पर आस्था रखता हूं और जब मुझे किसी भक्त के दर्शन होते हैं तो मैं उनके सम्मुख साष्टांग दण्डवत करता हूं। बाद में वे जार्ज सीब्रा से स्वामी जयकुमार बन गए।

अमरीकी महिला दयामाता—भारतीय योगी परमहंस योगीनंदजी महाराज ने अमेरीका में जिन व्यक्तियों को भारतीय बनाया उनमें दयामाता उल्लेखनीय हैं। दयामाता को धर्मप्राण भारतीयों को अमेरीका का अन्धानुकरण करते देखकर अत्यन्त आश्चर्य व दु:ख होता है। हम अमरीकी तो भौतिकवाद से ऊबकर भारतीयता की शरण में आ रहे हैं और आप भारतीय अमेरीका-इंग्लैण्ड को अपना आदर्श मानते हैं।

दयामाता ने स्पष्ट गर्व के साथ कहा—भारतवर्ष हमारी आध्यात्मिक मातृभूमि है। पुण्यभूमि है। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि भारतीय संस्कृति व भारतीय दर्शन को समझने व उस पर आचरण करने से ही विश्व को सच्चा सुख और शान्ति मिल सकती है।

स्वामी विवेकानन्द के कार्य में सहयोगिनी और उनकी मित्र कुमारी जोसेफिन मेक्लॉउड जब स्वामी विवेकानन्द से मिली, तब उन्हें मानसिक सम्पदा के रूप में पूरी गीता कण्ठस्थ थी।

श्रीयुत जार्ज सिडनी अरंडेल (प्रधान थियोसोफिकल सोसाइटी)—गीता जो संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है उसके सम्बन्ध में भला मैं क्या लिखूं। यों तो गीता के अतिरिक्त और भी कई महान् ग्रंथ हैं। परन्तु, भगवद्‌गीता की तो बात ही निराली है। वह ईश्वरों का ईश्वर परम महेश्वर का दिव्य संगीत है।

गीता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि भारत के लम्बे पराधीनता के काल में भी जब भारतीय स्वयं इसके प्रचार-प्रसार के लिए कुछ भी उद्योग नहीं कर रहे

थे तब भी इसके वैचारिक जादू से, अलौकिक प्रभा से प्रभावित होकर विश्व के मनीषियों ने पहले स्वयं संस्कृत भाषा सीखी एवं गीता का अध्ययन किया, फिर उन्होंने अपनी-अपनी भाषा में अपने खर्चे से अनुवाद करके उसका प्रचार-प्रसार अपने-अपने देश में किया।

इस प्रकार पश्चिम के दार्शनिक गीता पर मुग्ध हैं, जर्मनी के दार्शनिक गीता पर मुग्ध हैं, इंग्लैण्ड के दार्शनिक मुग्ध हैं, फ्रांस के दार्शनिक मुग्ध हैं, युगोस्लाविया का राष्ट्रपति गीता पर मुग्ध है। सब दुनिया के लोग गीता पर मुग्ध हैं। सारी दुनिया उस पर कुर्बान हुई जा रही है। पारसी मुग्ध हैं, यहूदी मुग्ध हैं, मुसलमान मुग्ध हैं, दुनिया का कोई कोना नहीं जिसको गीता ने प्रभावित न किया हो।

लन्दन म्यूजियम में जाकर देखें। लन्दन म्यूजियम में बहुत बड़ा पुस्तकालय है। वह संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। उसके मुख्यद्वार पर एक show Case में गीता की पुस्तक सजी है।

संसार में सबसे अधिक भाषाओं में अनूदित और संसार के सबसे मेधावी पुरुषों को सबसे अधिक चमत्कृत करने वाली यह महान् पुस्तक भगवद्गीता है। दुनिया उसकी महत्ता पहचानती है। न्यूजर्सी में स्थापित अमेरीका की सेटन हाल यूनिवर्सिटी जिसमें 10,800 छात्र हैं सभी छात्रों के लिए गीता पढ़ना अनिवार्य कर दिया है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में गीता के मुख्य अंश पाठ्यक्रम में डाले हुए हैं।

आज रूस के राष्ट्रपति मेदवेदेव ओमकार (ॐ) ध्वनि के साथ-साथ राष्ट्रपति पद की शपथ ले रहे हैं।

त्रिनिदाद और टोबैगो की प्रधानमंत्री कमला प्रसाद बिसेसर 26 जून, 2010 को नोस्ली (पोर्ट ऑफ स्पेन) में एक गरिमामय समारोह में, गीता हाथ में लेकर प्रधानमंत्री पद की शपथ लेती है।

संसार का कोई कोना नहीं है जहां भगवद्गीता का प्रचार नहीं हुआ। उसका चमत्कार नहीं हुआ है। पर हम ही उसको भूल रहे हैं। यह कितनी दुर्भाग्य की बात है!

वह संस्कृति बिना किसी राजनीतिक उद्देश्य से बढ़ सकती है, वह व्यापार आगे बढ़ सकता है बिना किसी साम्राज्यवादी रूपरेखा के, बस्तियाँ बन सकती है बिना उपनिवेशिक प्रयास के, वह साहित्य, धर्म तथा भाषा का प्रसार विदेशी को नकार के या युद्ध तथा जाति विषमता के बिना, यह सब भारत के पड़ोसियों के सम्बन्ध के इतिहास से प्रमाणित है।

—अरुण भट्टाचार्य

भारतीय मनीषा पर गीता का प्रभाव

गीता की महत्ता के विषय में स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं—

गीताश्रयेऽहं तिष्ठामि गीता मे चोत्तमं गृहम्।
गीताज्ञानमुपाश्रित्य त्रींल्लोकान्पालयाम्यहम्।।

अर्थात् मैं गीता के आश्रय में रहता हूं, गीता मेरा श्रेष्ठ घर है। गीता के ज्ञान का सहारा लेकर मैं तीनों लोकों का पालन करता हूँ।

भगवान् वेदव्यासजी ने भी कहा है—

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख-पद्माद्विनिसृता।।

अर्थात् गीता का भलीभांति श्रवण, कीर्तन, मनन व ध्यान करना चाहिए, क्योंकि यह स्वयं पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णु के मुखारविद से निकली है। अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की क्या आवश्यकता है?

भगवान् ने जब अर्जुन को गीतोपदेश दे दिया तब कृष्ण ने अर्जुन से पूछा कि तुम्हारा मोहांधकार समाप्त हुआ या नहीं। तब अर्जुन ने कहा—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।। 18/73 गीता

हां, मेरा मोह और अज्ञान दूर हो गया है। मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। अर्जुन के रथ पर फहरा रही ध्वजा पर हनुमानजी बैठे हुए थे। उन्होंने भी गीता सुनी। तब हनुमान ने ध्वजा से नीचे आकर प्रणाम करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि मैंने भी आपकी कृपा से गीता श्रवण की है। तब कृष्णजी ने कहा कि तुमने गुरु की बिना अनुमति लिए गीता सुनकर महान् अपराध किया है। फिर गुरु का स्थान हमेशा ऊपर होता है और शिष्य का नीचे। तुमने गुरु से भी ऊंचे आसन में स्थित होकर सुना। यह और भी बड़ा अपराध है। तब हनुमानजी ने इसका प्रायश्चित्त पूछा तब भगवान् ने कहा तुम प्रायश्चित्त स्वरूप पिशाच बनोगे और तुम गीता पर पैशाची भाष्य लिखो जो तुमने सुना और समझा। तब

हनुमानजी ने पैशाची भाष्य लिखा है जिसकी हस्तलिपि कापी को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में मदनमोहन मालवीयजी ने सुरक्षित रखा था। उस पैशाचिक भाष्य में हनुमानजी कहते हैं—मैं एक छलांग में सात समुद्र पार कर गया पर गीता का एक-एक श्लोक सात सौ समुद्र के समान है।

गीता की महत्ता के विषय में संजय कहता है—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। 18/78 गीता

हे राजन्! जहां योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं और जहां गाण्डीव-धनुषधारी अर्जुन है, वहीं पर श्री विजय, विभूति और अचल नीति है—ऐसा मेरा मत है।

बुद्ध के दर्शन एवं वाणी में गीता का अधिकतम प्रभाव है। बुद्ध का मध्यम मार्ग सीधे गीता से लिया गया है। आत्मा ही आत्मा का बंधु है, गीता का भाव है।

डॉ. राधाकृष्णन् ने अपने ग्रंथ Geeta and Kalidas में कालिदास के साहित्य पर गीता का स्पष्ट प्रभाव दिखलाया है। गुरुग्रंथ तो गीता ज्ञान का ही पंजाबी रूपान्तरण है।

मध्य युग के संतों पर भी गीता का स्पष्ट प्रभाव है। भारतीय परम्परा में प्रायः सभी आचार्यों, विद्वानों और स्वातंत्र्य सेनानियों को गीता ने प्रभावित किया है।

आद्य शंकराचार्यजी—नित्यानन्द के सुधासागर में सज्जनों के लिए नीले रंग का घनश्याम प्रकट हुआ। उस नीले मेघ के अपने मुखारविंद से अमृतधारा की वर्षा हुई। ऐ चित्त रूपी चातक! तुम क्यों अमृत रूपी जल का पान नहीं करते। क्या तुम्हें किसी ने मारा है या तुम सोये हुए पड़े हो।

गीताशास्त्र का अर्थ जान लेने पर समस्त पुरुषार्थों की सिद्धि होती है।

श्री मधुसूदन सरस्वतीजी ने गीता की झांकी निम्नलिखित श्लोक में प्रस्तुत की है—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्स सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

अर्थात् सारे उपनिषद् गौओं के समान है। श्रीकृष्ण दूध दूहने वाले हैं। अर्जुन बछड़ा है। सब भक्त उस दूध का पान करने वाले हैं। वह दूध गीता-रूपी अमृत है। उत्तम बुद्धि वाले ही इसका पान करने वाले हैं।

संत ज्ञानेश्वर—गीता मोक्ष देने वाला स्वतंत्र शास्त्र है। कर्म, उपासना व ज्ञान—इन तीनों का निरूपण करने वाली गीता छोटी-सी मनमोहनी श्रुति भगवती ही है।

जम्भेश्वरजी महाराज—श्रीकृष्ण भगवान् की वाणी गीता कोई सामान्य कविता नहीं है, अपितु वह तो अनहद नाद है। वह किसी कवि की कल्पित कविता नहीं है, तुम्हारे अन्दर बैठे हुए अज्ञान को नष्ट करने वाली महाऔषधि है।

श्रीरामकृष्ण—श्रीरामकृष्ण के वचन गीता के उपदेश को व्यावहारिक उदाहरणों से समझाते हैं। उनके गीता के विषय में उद्गार उनकी गहन श्रद्धा को दर्शाते हैं। 'संपूर्ण गीता के अध्ययन का ज्ञान केवल दस बार गीता, गीता, गीता बोलने से मिल जाता है। बोलते-बोलते यह तागी तागी तागी हो जाता है अर्थात् त्यागी त्यागी। यह स्थिति आन्तरिक और बाह्य रूप से भौतिक सुखों को त्यागने से मिलती है।

श्री विवेकानन्द—1893 ई. अमेरीका के शिकागो नगर में आयोजित सर्वधर्म संसद में विश्व की सभी धार्मिक विचारधाराओं को अपना प्रतिनिधित्व करने तथा अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने का ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध हुआ। विश्वभर के 650 धर्माचार्य प्रतिनिधि सभा में अपना पक्ष रखने को उपस्थित हुए। प्रथम दिन ही 11 सितम्बर 1893 ई. सोमवार को अपने स्वागोत्तर भाषण में स्वामी विवेकानन्द ने गीता केन्द्रित अपने संक्षिप्त व्याख्यान में हिन्दू धर्म की सर्वोपरिता को सिद्ध कर दिया। मात्र 3 मिनट में ही हिन्दू संन्यासी, हिन्दू धर्म, जगद्गुरु श्रीकृष्ण व उनकी वाङ्मयी विभूति गीता शीर्ष स्थान पर प्रतिष्ठित हो गये।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते, तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते, मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। 4/11 गीता

जो कोई मेरी ओर आता है—चाहे किसी प्रकार से हो उसको प्राप्त होता हूं। लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अन्त में मेरी ओर ही आते हैं।

शिकागो विश्वधर्म सम्मेलन के महानायक स्वामी विवेकानन्द कहते हैं—उपनिषदों के उद्यानों से निकाले हुए सुन्दर सुगन्धित पुष्पों का गुच्छा ही भगवद्गीता है। गीता सड़े हुए, मुरझाए हुए, झुर्रियों भरे पीले चेहरों वाले कर्मयोगी नहीं चाहती। वह हृष्ट-पुष्ट, बलवान, हंसमुख और खिले हुए चेहरे चाहती हैं। गीता इस विश्व को प्रभु का विराट् स्वरूप कहती हुई हर पुष्प को उपदेश देती है कि वह भरपूर साहस के साथ विश्वयज्ञ में अपना भाग डाले।

भगिनी निवेदिता—गीता भारत की रक्तशिराओं में रक्त, अस्थियों में अस्थि है। यह ग्रंथ युद्ध का शंखनाद है। इसका अध्यात्म मानवता और अन्य वस्तुओं से पलायन नहीं है—यह ज्ञान रूपी दहकती अग्नि जो तमस, अहम् को नष्ट करती है। इसका प्रभाव सर्वत्र एवं गहन है। यह पलायन नहीं, नई शक्ति, विजय शक्ति, ऊर्जा का पुंज—एक नया जीवन देती है गीता। गीता भारत की

प्राणवायु है। गीता के कारण ही भारत जीवित रहेगा। भगिनी निवेदिता ने लिखा है कि स्वामीजी से मिलने के पहले मुझे गीता कण्ठस्थ थी।

द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर—गीता भारत के कुटीर का बिना तेल का प्रदीप है जो अनन्त काल तक हमारे ज्ञान मन्दिर में प्रकाश करता रहेगा। पाश्चात्य दार्शनिक ग्रंथ भले ही खूब चमके किन्तु हमारे लघु दीपक का प्रकाश उन सबसे अधिक चमककर उन्हें ग्रस लेगा।

लोकमान्य तिलक—मेरे जीवन का कोई भी दिन ऐसा नहीं गया है जिस दिन मैंने गीता के श्लोकों पर मनन न किया हो।

लाला लाजपतराय—जब संदेह का राक्षस आपको भयभीत कर मार्गच्युत करना चाहता है, तब प्रत्येक समय साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण का आपके पास रहना कठिन है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए भगवान् ने अनन्त संदेश गीता द्वारा दिए हैं।

डॉ. एनी बेसेन्ट—भारत में आई। वह थियोसोफी समाज के द्वारा भारत में अनेक प्रकार के ज्ञान की शिक्षा भारतीयों को देना चाहती थी।

तब बनारस के एक साधु ने कहा—तुम भारतीयों को नयी शिक्षा नहीं दे रही हो। यह तो सब हमारी ही बात है और उस बनारस के साधु ने उसे गीता की पुस्तक दी। वह उसे पढ़कर चमत्कृत हो गयी और कहने लगी इससे बढ़कर भारतीयों को शिक्षा देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। डॉ. एनी बेसेन्ट ने गीता को समझने के लिए संस्कृत भाषा सीखी।

मदनमोहन मालवीय—मेरा विश्वास है कि पृथ्वी मण्डल की प्रचलित भाषाओं में भगवान् श्रीकृष्ण की कही हुई भगवद्‌गीता के समान छोटे वपु में इतना विपुल ज्ञानपूर्ण दूसरा कोई ग्रंथ नहीं है।

ऋषि अरविन्द—गीता अक्षय मणियों की खान है। यदि युग-युग तक इस खान से मणियां निकालते रहें तब भी भावी कर्णधार इसमें से सर्वदा नवीन-नवीन अमूल्य मणि-माणिक्य प्राप्त कर प्रसन्न और चकित होते रहेंगे।

ऋषि बंकिमचंद्र—गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रंथ मानने का यही कारण है कि इसमें ज्ञान, कर्म व भक्ति—इन तीनों योगों की न्याययुक्त व्याख्या है, अन्य किसी भी ग्रंथ में उसका सामंजस्य नहीं है।

साधु टी.एल. वास्वानी—गीता में भगवान् कृष्ण के विचार भरे पड़े हैं। यह ग्रंथ इतना अमूल्य है और अध्यात्म भाव में पूर्ण है कि मैं समय-समय पर परमात्मा से यह प्रार्थना करता आया हूं कि मुझ पर इतनी दया करे और शक्ति

प्रदान करे जिससे मैं मृत्युपर्यन्त इस संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचा सकूं।

महर्षि रमण—श्रीकृष्ण का उद्घोष था—स्वयं को जानो। यही भावना श्री रमण महर्षि के उपदेशों का सार है। वे ज्ञान के जिज्ञासुओं को समझाते हैं—यह जानो कि मैं कौन हूं। यह आत्मज्ञान का सरल उपाय है।

रमण महर्षि ने भगवद्गीता से 42 श्लोक चुने और इस मंथन को नाम दिया—गीतासार। रमण महर्षि के उपदेशसार में संस्कृत के कई श्लोक हैं जो गीता के उपदेशों पर आधारित हैं।

स्वामी शिवानन्द—दिव्य जीवन संघ, ऋषिकेश के संस्थापक परमपूज्य स्वामी शिवानन्द सरस्वती कहते हैं—श्रीमद्भगवद्गीता एक सार्वभौमिक ग्रंथ है। यह मानव के लिए अनादि पथ-प्रदर्शक है। यह उसे असत्य से सत्य की ओर, तम से ज्योति की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले जाती है।

महात्मा गांधी—मैं चाहता हूं कि गीता न केवल राष्ट्रीय शालाओं में बल्कि सभी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाई जाए। जब कभी मुझे निराशा घेरती है और कहीं से कोई प्रकाश-किरण नहीं मिलती, तब मैं गीता माता की शरण में जाता हूं, गीता का कोई न कोई श्लोक चमकता हुआ समाधान के रूप में आ जाता है और मैं मुस्कराने लगता हूं। मेरा जीवन बाह्य कठिनाइयों व दु:खों से भरा पड़ा है, लेकिन उनका मेरे ऊपर कोई अमिट प्रभाव नहीं पड़ सका है तो इसका श्रेय भगवद्गीता की शिक्षा को ही जाता है।

विनोबा भावे—मां के दूध पर मेरा शरीर जितना पला है, उससे कहीं अधिक मेरा हृदय व बुद्धि गीता के दूध से पोषित हुए हैं।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्—गीता जीवन के सर्वोच्च लक्ष्यों को हृदयंगम करने में सहायता देती है। इसमें धर्म की उन मूल धारणाओं पर जोर है, जो न केवल प्राचीन ही है, न केवल आधुनिक ही, बल्कि शाश्वत है।

स्वातंत्र्य वीर सावरकर और गीता—

'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि' 2/23 गीता

मार्सेल्स से अदन के बन्दरगाह तक जहाज (एस.एस. मोरिया) में उन्हें अनेक यातनाएं दी गईं। उन्हें चार फुट लम्बे-चौड़े व्यास के केबिन में कैद कर दिया गया, उसमें भी उनको केवल खड़े रहने का आदेश था। एक बार तो उन्हें आत्महत्या करने का विचार भी सूझा, किन्तु वे शीघ्र ही सम्हल गये। उन्हें गीता का प्रसिद्ध श्लोक—'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि' (2/23 गीता) याद आया उसी को

आधार बना कर उन्होंने मराठी भाषा में कविता रची। इसका हिन्दी अनुवाद सौ. कुसुम ताम्बे ने किया है जो इस प्रकार है—

गीता के श्लोक को गीत में ढाला : इस गीत में आत्मा की अमरता का बड़ा ही जीवन्त वर्णन किया गया है—

अनादि मैं, अनन्त मैं महान्। मार सके कौन मुझे शत्रु शक्तिमान्।।
धर्म धारणार्थ अट्टहास कर लड़ा। मृत्यु के समक्ष मैं डटा रहा खड़ा।।
खड्ग से मरा न मैं, न अग्नि से जला। भीरु मृत्यु छोड़, युद्ध भागता चला।।
शत्रु भी बड़ा विचित्र मूर्ख है महा। मृत्यु-दण्ड से मुझे, अरे डरा रहा।।
हिंस्र सिंह पिंजरे में देख फेंक कर। सिंह दास बन जाए पाँव चाट कर।।
अग्निकुण्ड में प्रदीप्त डाल दे मुझे। अग्निशीत सुप्रभावली बना मुझे।।
हो कराल क्रूर सैन्य राह छेंकते। अस्त्र शस्त्र तोप बाण आग फेंकते।।
झेल कर उन्हें अजेय मैं पचा गया। कालकूट मैं त्रिनेत्र सा रिचा गया।।

—विनायक दामोदर सावरकर (अशोक कौशिक–युगपुरुष वीर सावरकर पृष्ठ 77 पर उद्धृत)

राष्ट्र के रथ के सारथि श्रीकृष्ण और सेनानी श्रीराम

शनिवार 23 दिसम्बर, 1910 ई. को बम्बई न्यायालय में मुख्य न्यायाधीश ने सावरकर को दण्ड सुनाते हुए कहा—'इस न्यायाधिकरण द्वारा आपको आजन्म कारावास और समस्त सम्पत्ति की जब्ती का दण्ड दिया जाता है।'

निर्णय सुनाने के एक दिन पूर्व उन्होंने 'पहला हफ्ता' शीर्षक से रात्रि में एक कविता मराठी में रची, उसका एक अंश इस प्रकार था—

सारथि जिचा अभिमानी, कृष्ण जी आणि राम सेनानी।
अशि तीस कोटि तव सेना, ती अह्मां बिना थांबेना।
पीर करुनि दुष्ट-दलदलना। गोंविलची स्वकरी,
स्वातंत्र्याचा हिमालयावरि, झन्डा जरतारी।।जननी.।।

हिन्दी भावार्थ

'जिस राष्ट्र के रथ के सारथि भगवान् श्रीकृष्ण हों,
जिस राष्ट्र के पास श्रीराम जैसे सेनानी हों,
जिस राष्ट्र की तीस करोड़ सेना हो,
उस राष्ट्र की प्रगति हमारे बिना नहीं रुक सकती,
वहां निश्चय ही रिपुओं का दमन करके,
हिमालय के शिखर पर स्वतंत्रता की पताका लहरायेगी।'

भाई परमानन्द : 'मेरे अन्त समय का आश्रय-भगवद्गीता' बिन्दु में सिन्धु

महान् क्रान्तिकारी और आर्यसमाजी मनीषी भाई परमानन्दजी लिखते हैं— 'यदि कोई आदमी हिन्दू संस्कृति के समुद्र धर्म, साहित्य और दर्शन को एक कूजे (पुरुआ=मिट्टी का छोटा बर्तन) के अन्दर बन्द देखना चाहे तो वह भगवद्गीता पढ़ ले। यदि शेष सभी शास्त्र नष्ट हो गये होते और केवल भगवद्गीता ही रह जाती, तो भी हिन्दू जाति के बड़प्पन की स्मृति दुनिया में कायम रहती। हिन्दू सभ्यता इस समय इसमें यहां तक सुरक्षित है कि भगवद्गीता का प्रसार या विनाश हिन्दू धर्म का प्रसार या विनाश है।'

'सच ही कहा गया है कि 'वैदिक धर्म' के कल्पवृक्ष का पका हुआ फल भगवद्गीता है।

'वेदों की भाषा कठिन है। कोई सर्वमान्य भाष्य भी तैयार नहीं हो सका।.... इसके विपरीत गीता की भाषा सरल है। सर्वग्राह्य है सर्वजन-सुलभ है और हमारे धर्म का पूर्ण प्रतिनिधित्व भी करती है।

'वेदों के जानने वाले जब भारत में ही इने-गिने हैं तो फिर विदेशों में वेद कैसे हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। विश्व-धर्म ग्रंथ बनने की योग्यता 'सत्यार्थ-प्रकाश' में भी नहीं है क्योंकि इसका एक बहुत बड़ा भाग केवल भारत से ही सम्बन्ध रखता है (अर्थात् एकदेशीय है), जिसमें विदेशियों को कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती।

इसके मुकाबले में भगवद्गीता की योग्यता देखिये। इसके अन्दर एक विशेष, सौन्दर्य और आकर्षण हैं। विदेशों में ऐसे बहुत-से स्त्री-पुरुष मिल जायेंगे जिनको भगवद्गीता कण्ठस्थ है।

'जाति की जाति (पूरा राष्ट्र) इसे धर्म ग्रंथ स्वीकार करती है। इसके अतिरिक्त इसमें वैदिक ज्ञान का इत्र, जैसा कि ऋषि, मुनि और दार्शनिक लोग मानते चले आये हैं, मौजूद है, इसलिए इसे एकमत होकर आर्य-धर्म की प्रामाणिक पुस्तक कहना चाहिए।'

मूलभूमि भी भारत ही है

'जब तक उपनिषदों और हिन्दू दर्शनों की फिलॉसफि विद्यमान न हो तब तक भगवद्गीता लिखी नहीं जा सकती। इसके अतिरिक्त इसकी व्याख्या करने वाले दृष्टान्त महाभारत में ही मिल सकते हैं न कि तौरेत के किस्से-कहानियों में। इसलिए भगवद्गीता की शिक्षा केवल गंगातट पर ही सम्भव थी न कि दजला-फ़रात की भूमि में।

'गीता श्रीकृष्ण की विद्वत्ता और बड़प्पन को मानवी सीमा से कहीं आगे ले जाती है।'

—(भाई परमानन्द : मेरे अन्त समय का आश्रय-भगवद्गीता पृ. 15-20)
(भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली, वर्ष 1966)

भाई महावीर : राष्ट्र की हर धड़कन में गीता का स्पन्दन

भाई परमानन्द जी के यशस्वी पुत्र भाई महावीर का मंतव्य भी स्वर्णाक्षरबद्ध करने की वस्तु है। वे लिखते हैं—

'आज से सहस्रों वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर अठारह अक्षौहिणी सेनाओं का जो विलोड़न हुआ था उसमें से भगवद्गीता-रूपी अमृत-कलश की प्राप्ति हुई।....श्रीकृष्ण ने इसके रूप में मानव को जो प्रकाश-पुंज दिया उसने इतिहास की दीर्घावधि में असंख्य हृदयों को सत्प्रेरणा दी है।

'हमारे ऐतिहासिक महामानवों में जिनका व्यक्तित्व सबसे अधिक सम्पूर्ण था, उन श्रीकृष्ण के जीवन को देखें तो वह आरम्भ से अन्त तक उस कर्मयोग की अमर गाथा है, जिसकी स्वयं उन्होंने गीता में व्याख्या की है। इसलिए जब-जब देश के भाग्याकाश पर विपदाओं के बादल छाये, भारत-सन्तान ने श्रीकृष्ण को पुकारा, जब भी अधर्म और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का समय आया, देश की तरुणाई ने भगवद्गीता से प्रेरणा प्राप्त की। गीता को पढ़कर लोग संघर्ष से भागे नहीं।

'यह केवल संयोग नहीं है कि मध्यकाल के हुतात्माओं ने आत्मा का साक्षात्कार गीता से किया और ब्रिटिश युग के क्रान्तिकारियों के हाथों में प्रायः गीता होती थी, जब वे जाकर फाँसी की डोरी को चूमते थे। जिसने (श्रीकृष्ण ने) शैशव काल में स्वयं अपने मामा (कंस) से प्रारम्भ करके एक के बाद एक आततायी को समाप्त किया और अनाचार के एक-एक गढ़ को उखाड़ फेंका, उससे बड़ा क्रान्ति-प्रेरक कौन होगा?

'दूसरे शास्त्रों की चर्चा अथवा व्याख्या जहां एकान्त में वन तपोवनों अथवा पर्वतों की गुफाओं में बैठे मनीषियों का विषय रही है, वहां भगवद्गीता ने कर्मक्षेत्र के स्थितप्रज्ञों को आकृष्ट किया है और अनेक कर्मयोगियों ने उसकी व्याख्या भी की है।'

—(भाई परमानन्दकृत मेरे अन्त समय का आश्रय-भगवद्गीता के
पुनर्संस्करण में भाई महावीर की भूमिका, पृ. क, ख)।

ए.सी. भक्ति वेदान्त स्वामी प्रभुपाद—'गीता रूपी सुधा-धारा श्री भगवान के मुखारविन्द से निस्पन्दित है, जबकि गंगा उनके चरणारविंद से निकलती है।....आज के युग का मानव इच्छुक है कि सबके लिए एक ही ईश्वर, एक ही

धर्म और एक ही व्यवसाय हो। अतः सम्पूर्ण विश्व के लिए एक ही सार्वभौम शास्त्र हो—श्रीमद्भगवद्गीता। सबके लिए एक ही आराध्य हो—श्रीकृष्ण और एक ही मन्त्र हो—हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे तथा सम्पूर्ण जगत् के लिए एक ही उद्यम हो—भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा में लीन रहना।'

गीता ज्ञान-विज्ञान का अथाह : समुद्र पं श्रीराम शर्मा आचार्य

'गीता तो एक छोटी-सी पुस्तक है....पर मानव-जीवन की समस्याओं को सुलझाने का उसे एक अनुपम हल (समाधान) ही कहना चाहिए। समस्त धर्मशास्त्रों का यह निचोड़ है। ज्ञान और विज्ञान का इसे अथाह समुद्र कहा जा सकता है, इसमें सब-कुछ है। लोग अपनी आवश्यकता और रुचि के अनुसार इसमें से सब-कुछ ढूँढ़ सकते हैं और सब-कुछ पा सकते हैं। समस्त विश्व के विचारकों ने इसकी महत्ता स्वीकार की है। यही कारण है कि बाइबिल के बाद केवल गीता ही ऐसी पुस्तक है, जिसका अनुवाद विश्व की समस्त जीवित भाषाओं में हुआ है और भारत की तरह इसे संसार भर में समान रूप से सम्मान प्राप्त हुआ है।

गीता का सम्बल लेकर भारत पिछले 100 वर्षों में तेजी से अपने आत्मबल को बढ़ाता आ रहा है। विदेशी दासता का जुआ उतार फेंकने के लिए आकुल भारतीय आत्मा को जितनी प्रेरणा गीता ने दी है, उतनी और किसी ने नहीं दी। इसे पढ़ने-सुनने और मनन करने के बाद भारत के लाखों सपूत जीवन की नश्वरता और कर्तव्य की महत्ता को पहचान कर अपने तन-मन-धन को मातृभूमि का गौरव बढ़ाने के निमित्त उत्सर्ग करने को तत्पर हो गये।

'क्रान्तिकारी आन्दोलन के शूरवीर सैनिक गीता को छाती से चिपकाये हुए फाँसी के तख्तों पर उछलते हुए चढ़े। योगी अरविन्द ने गीता के माध्यम से नई पीढ़ी को त्याग और बलिदान के लिए प्रोत्साहित किया। बंगाल से लेकर सारे भारत में फैले हुए सारे क्रान्तिकारी संगठनों की प्रेरणा का स्रोत गीता ही बनी रही। अरविन्द घोष, द्वारा वह तत्त्वज्ञान जिनके भी अन्तःकरण में उतार दिया गया, वे फौलाद जैसे पक्के और मजबूत हो गये। स्वतंत्रता संग्राम का दूसरा दौर लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में जन-आन्दोलन के रूप में सामने आया। उन्होंने राष्ट्रीय जागरण के रूप में 'गीता-रहस्य' लिखा। कर्मयोग का मार्ग अपनाने के लिए भारतीय शौर्य को ललकारा। तिलक ने राष्ट्रीय जागरण के लिए बहुत-कुछ किया। उनके इस कर्तृत्व के पीछे उनकी गीता का अपरिमित योगदान रहा है।

'महात्मा गांधी ने उस अमर ज्योति को जलाये रखा और सत्याग्रह आन्दोलन चलाया। उस ज्योति को प्रज्वलित करने में गीता अपनी महत्त्वपूर्ण

भूमिका प्रस्तुत करती रही। गांधीजी की दैनिक प्रार्थना में गीता को प्रमुख स्थान प्राप्त था। उन्होंने उस महान् धर्मग्रंथ का अनुवाद भी किया और टिप्पणियां भी लगाईं। 'अनासक्ति योग' के नाम से प्रकाशित अनुवाद उन दिनों प्रत्येक सत्याग्रही के हाथ में रहता था। जेल में हर सत्याग्रही एक गीता भी अपने साथ जरूर ले जाता था।

'कहते हैं कि अंग्रेजी सरकार को गुप्तचर विभाग ने सूचना दी कि गीता ने स्वराज्य की आग भड़काई है तो एक बार गीता को पकड़ने के लिए वारन्ट जारी कर दिया गया। पीछे जब यह पता चला कि गीता कोई व्यक्ति नहीं, वरन् पुस्तक है, तब वह वारन्ट रद्द करना पड़ा।'

—पं. श्रीराम आचार्य (संस्कृति-संजीवनी-श्रीमद्भागवत एवं गीता, पृष्ठ 1.1
प्रकाशक-अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा। (उ.प्र.) प्रथम सं. 1995)

स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती : गीता श्रीकृष्ण के जीवन की परिभाषा

भगवान् ने गीता में जो-कुछ कहा है, उसके स्वयं वे साकार स्वरूप थे। श्रीकृष्ण-साहित्य के तपस्वी विद्वान् स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती के शब्दों में—

'(गीता का उपदेश करने वाली) जो यह बुद्धि है, वह श्रीकृष्ण की है।....जो जेल में, बन्धन में पड़ा है, उसका घर में नहीं जेलखाने में जन्म होता है। माँ-बाप को छोड़ कर गोकुल में जाना पड़ता है। पीने के लिए विष (पूतना के द्वारा तथा कालिय नाग के द्वारा) मिलता है। चारों ओर आपत्ति-विपत्ति दिखायी पड़ती है। शैशव अवस्था में शरीर पर पेड़ गिर पड़ता है (यमलार्जुन)। जरासन्ध किले पर, महल पर हमला कर देता है। कालयवन के सामने से भागना पड़ता है। रास्ते में भीख मांग कर खाना पड़ता है, (यज्ञकर्ता ब्राह्मणों से) नंगे पाँव दौड़ना पड़ता है। प्रवर्षण पर्वत पर दावानल से घिर जाते हैं। पत्नी सत्यभामा के पिता सत्राजित के घर डाका पड़ा और ससुर मारे गये। द्वारका पर हमला हुआ हवाई जहाज (सौभविमान) का। बुआ (देवी कुन्ती) फुफेरे भाई (पाण्डव लोग) आदि कितनी तकलीफ में हैं। घरेलू वातावरण का यह हाल है कि सगे भाई बलराम जी भी विश्वास नहीं करते। दोनों में मतभेद हो गया। वैमनस्य तक हो गया। बाल-बच्चे भी कहना नहीं मानते, एक भी बेटा कहना नहीं मानता। श्रीकृष्ण वर्जित करते हैं कि ऐसा खाना मत खाओ, ऐसा मत पीओ, ऐसे मत रहो, परन्तु कोई श्रीकृष्ण की बात नहीं मानता। उनके बेटों ने महात्माओं का तिरस्कार किया, शराब पी, मांस खाया, आपस में लड़े और श्रीकृष्ण को अपने हाथों उनका वध करना पड़ा। भागवत में साफ है कि उन्होंने अपने उच्छृंखल और पापाचारी पुत्रों को मारा और जब श्रीकृष्ण के पाँव में बाण लगा तब वे अपनी लीला-संवरण करके गोलोक चले गये। तात्पर्य यह है

कि जीवन में इतने दुःखद और भयावह प्रसंग उपस्थित हुए, परन्तु वे विचलित नहीं हुए, उनकी मुस्कान बराबर बनी रही। तो उन (श्रीकृष्ण) के मुख से निकली है यह गीता।

'जब श्रीकृष्ण यह कहते हैं कि 'दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः' (गीता 2/56) तब वे अपने अनुभवों की ही बात कहते हैं। इसी प्रकार उन्होंने संन्यासी की जो परिभाषा दी है, वह उनके स्वयं के जीवन की ही परिभाषा है—'ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति' (गीता 5/3)।'

—स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती-गीता-दर्शन, भाग 2, पृ. 118-119
(रमेश कृष्ण : मैं और मेरी साहित्य-साधना, पृष्ठ 379 श्रीकृष्ण प्रकाशन, मुरादाबाद उ.प्र. सन् 2006)

स्वामी रामसुखदासजी—गीता में साधक के लिए उपयोगी सम्पूर्ण सामग्री है। गीता का मुख्य लक्ष्य मनुष्य मात्र का कल्याण करना है।

स्वामी रंगनाथानन्द : ईश्वर तथा मनुष्य आमने-सामने

'....गीता में ईश्वर तथा मनुष्य—नारायण तथा नर आमने-सामने खड़े हैं और यही इसकी भव्य तथा उदात्त पृष्ठभूमि है। श्रीकृष्ण एक सौर्वभौमिक आचार्य थे। सार्वभौमिक व्यक्ति को छोड़ दूसरा कोई सार्वभौमिक उपदेश नहीं दे सकता।....हमें सदैव यह याद रखना होगा कि ईश्वर के अवतार माने जाने वाले इन महापुरुषों के कारण ही हमारी संस्कृति सुरक्षित रही है।....उनके स्पर्श से राष्ट्र की मृतप्राय अस्थियों तथा मांसपेशियों में एक नये जीवन का संचार हो जाता है।

'भारतवर्ष के सम्पूर्ण इतिहास में मुझे श्रीकृष्ण के समान परम कर्मठ दूसरा कोई व्यक्ति नहीं दिखता। श्रीकृष्ण एक कर्मठ व्यक्ति थे और उनके उपदेश भी ऊर्जा से युक्त हैं, वे शक्तिदायी विचारों के पुंज हैं। हमें इन्हीं कृष्ण को समझना है। अब तक हमारे पास ऐसे कृष्ण थे, जो केवल आंसुओं तथा हमारे भीतर के मृदु भावों को ही प्रेरित करते थे। परन्तु गीता के कृष्ण पूरे देश को उठाने के लिए, उन्हें कर्मठ बनाने के लिए आते हैं। बांग्ला में एक गीत है, जिसमें अधःपतित भारत का उद्धार करने के लिए सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण का आह्वान किया गया है। इस गीत का भावार्थ इस प्रकार है—

'अवनत भारत तुम्हें पुकारे आओ सुदर्शनधारी मुरारी।'

हमें स्मरण है कि आर.एस.एस. का भी एक गीत इसी प्रकार की अभिव्यंजना करने वाला है—

'रास रचाना तो याद रहा, क्यों चक्र चलाना भूल गये?'

'वे एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस देश के प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव स्थापित किया है। कृष्ण को निकाल देने से हमारी संस्कृति की हर मूल्यवान चीज चली जायेगी। हमारी कला, साहित्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, लोकनृत्य आदि सभी पर उनका प्रभाव विद्यमान है।'

—स्वामी रंगनाथानन्द (गीता की शक्ति तथा आकर्षण पृ. 9-17)

(अद्वैत आश्रम 5 डिही एण्टाली रोउ कोलकाता 700014)

अनेक भारतीयों को विशेषकर देश की युवा पीढ़ी को यह ज्ञात नहीं होगा कि 1950 में जब भारत का संविधान बना तब इसमें भारतीय संस्कृति तथा दर्शन के 22 उद्‌बोधक चित्र भी थे। इसमें एक चित्र संविधान के नीति निर्देशक तत्त्वों के चौथे अध्याय के पहले गाण्डीवधारी अर्जुन को गीता का उपदेश देते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का है।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 10 सितम्बर, 07 को दिए गए एक महत्त्वपूर्ण निर्णय में केन्द्र सरकार से कहा है कि वह संविधान के अनुच्छेद 51 (क) के अन्तर्गत भगवद्‌गीता को राष्ट्रीय धर्मशास्त्र घोषित करे। संविधान के अन्तर्गत राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पुष्प तथा राष्ट्रीय गीत की भांति राष्ट्रीय धर्मग्रंथ भी घोषित किया जाना चाहिए क्योंकि देश की स्वतंत्रता के आन्दोलन में प्रेरणास्रोत रही भगवद्‌गीता भारतीय जीवन पद्धति है। भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य बनता है कि वह इस राष्ट्रीय धरोहर की रक्षा करे और इसके आदर्शों का अनुसरण करे।

यह महत्त्वपूर्ण फैसला देते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा है कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों की संवाहक तथा हिन्दू धर्म के प्रत्येक सम्प्रदाय की प्रतिनिधि गीता भारत का धर्मशास्त्र है। संविधान के मूल कर्तव्यों के तहत राज्य का दायित्व है कि वह 'भगवद्‌गीता' को राष्ट्रीय धर्मशास्त्र की मान्यता दे। न्यायालय ने यह भी महत्त्वपूर्ण बात कही कि इस देश में जो ईसाई, पारसी, मुस्लिम या यहूदी नहीं है वे सब हिन्दू हैं। भारत में जन्मे सभी सम्प्रदाय बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि हिन्दुत्व का हिस्सा हैं और संविधान के अनुच्छेद 25 व 26 के अन्तर्गत हिन्दुओं को भी अपने सम्प्रदाय के संरक्षण का अधिकार प्राप्त है।

केन्द्र सरकार को न्यायालय ने ही ध्यान दिलाया है कि गीता भारत की आत्मा है। गीता सभी सम्प्रदायों की 'मार्गदर्शक शक्ति' है। गीता सनातन सत्य को उजागर करती है। इसलिए यह किसी सम्प्रदाय विशेष का ग्रंथ न होकर पूरी मानवता का सद्‌ग्रंथ है, पूरे मानव समाज को एकसूत्र में बांधने वाला ग्रंथ है।

परन्तु विश्व गुरु कहलाने वाले भारत का दुर्भाग्य है कि उच्च न्यायालय की टिप्पणी को छोड़िये देश के बड़-बोले राजनीतिज्ञों ने अपनी पार्टी, अपने चुनाव, वोट बैंक तथा क्षुद्र राजनीतिक हितों तथा स्वार्थों के लिए राष्ट्रहित तथा विश्व कल्याण को भुला दिया और उच्च न्यायालय की उक्त टिप्पणी के साथ सेकुलर प्रलाप शुरू हो गया। कानून मंत्री श्री हंसराज भारद्वाज ने कुरान और बाइबिल को भी भारत का धर्मशास्त्र बताया। सम्भवतः वे जानबूझ कर भूल गए कि गीता किसी सम्प्रदाय का ग्रंथ नहीं, पूरी मानवता का महानतम आध्यात्मिक ग्रंथ है। भारत का प्रत्येक विद्वान जानता है कि 'धर्म और रिलिजन' अलग-अलग है। धर्म का पर्याय 'रिलिजन' या मजहब नहीं है। मुस्लिम पर्सनल बोर्ड को तो विरोध करना ही करना था।

विश्व इतिहास के महानतम् पुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण तथा महाभारत काल के सर्वश्रेष्ठ योद्धा अर्जुन के बीच का संवाद है भगवद्गीता। देखा जाए तो हमारे देश की पहचान हैं गीता और रामायण। गीता को नकारने वाले हमारे देश के इतिहास, संस्कृति और पहचान को नकार रहे हैं।

हम देख चुके हैं कि महात्मा गाँधी का स्पष्ट मत था कि गीता सभी शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाई जानी चाहिए। क्या यह देश के प्रबुद्ध वर्ग को नहीं लगता कि भारतीय संविधान में गीता को 'राष्ट्रीय ग्रंथ' घोषित किया जाना चाहिए तथा भारत के प्रत्येक शिक्षा संस्थान में यह पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए।

सुनीता विलियम्स—मेरी अन्तरिक्ष यात्रा में मेरे पास रखी गीता निरन्तर मेरा उत्साह बढ़ाती रही, तभी में 195 दिनों तक अन्तरिक्ष में रहने का विश्व कीर्त्तिमान स्थापित कर सकी।

मारीशस के वर्तमान राष्ट्रपति राजेश्वर पुरयाग अपने पुरखो की भूमि बजीतपुर पहुँच कर बच्चों की तरह फफक कर रो पड़े। जैसे लम्बे समय से बिछुड़ा बालक अपनी माँ की गोद में आते ही विलख उठता है। इन्हें अपने पुरखों की भूमि की तलाश में वे पचीस साल से लगे थे। आखिरकार वंशावली विशेषज्ञों की मदद से उन्हें सफलता मिली। बिहार में पटना से 25 कि.मी. दूर बजीतपुर गांव से उनके परदादा लक्ष्मण महतो नोनिया को 150 साल पहले 'पत्थर हटाकर सोना कमाने' का लालच देकर मॉरीशस ले जाया गया था। राष्ट्रपति पुरयाग ने अपने परदादा की जी तोड़ मेहनत की दास्तान सुनाई। इतना ही नहीं, फरवरी 2008 में मारीशस के प्रधानमंत्री नवीनचन्द्रराम गुलाम भोजपुर (बिहार) में अपने पैतृक गांव हरिगांव आकर भाव-विभोर हो गये थे। जनवरी 2012 में त्रिनिदाद-टोबैगो की प्रधानमंत्री कमलाप्रसाद बिसेसर बक्सर के भेलापुर गांव आई थी जहां से उनके परदादा भवनीस्वरूप 1889 में त्रिनिदाद गये थे। बिसेसर ने गांव वालों के सामने कहा

था, मेरे परदादा गांव से गीता और रामायण लेकर गये थे और देखिये, उन्होंने, इस गांव ने एक प्रधानमंत्री दिया है। इन सबके पुरखे गांव से गीता और रामायण लेकर गये थे, जिसने इनकी रक्षा की और आज इस सम्मान तक पहुँचाया।

(साभार बप्पारावल : अप्रैल 2013, पृष्ठ 32)

स्वाधीन भारत में प्रथम प्रधानमंत्री नरेन्द्रजी मोदी है जो गीता की महत्ता को समझकर विश्व को भारत का परिचय कराने एवं विश्व के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध को पूर्व की भांति पुनः सुदृढ़ करने के लिए विश्व के राजनेताओं को गीता भेंट में दे रहे हैं।

अमरीकी इतिहासकार विल डयूरंट ने दस खण्डों में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'स्टोरी आव सिविलाइजेशन' के प्रथम खण्ड 'अवर ओरियंटल हेरिटेज' में इस बात का उल्लेख किया है कि आधुनिक विश्व भारत से क्या आशा कर सकता है। उन्होंने कहा है (पृष्ठ सं. 633)

'यह सत्य है कि हिमालय की सीमाओं से पार भी भारत ने हमें व्याकरण, तर्कशास्त्र, दर्शन, कथाओं, सम्मोहन और शतरंज तथा इन सबसे बढ़कर हमारे अंक और दशमलव प्रणाली की महान भेंट दी है परन्तु ये सब उसकी आत्मा का सार नहीं है। भविष्य में हम उससे जो सीख सकते हैं उसके मुकाबले में ये सब तुच्छ है। जैसे-जैसे नए आविष्कार, उद्योग तथा व्यापार महाद्वीपों को एकता में बाँधेंगे या एशिया के साथ हमको संघर्ष में डालेंगे, हम उनकी सभ्यताओं का अधिक निकटता से अध्ययन करेंगे तथा शत्रुता में भी उनके कुछ आचार-विचार को अपना लेंगे। संभवतः विजय, उद्दंडता और लूटमार के बदले में भारत हमें परिपक्व बुद्धि की सहनशीलता और शालीनता, असंग्रहशील आत्मा का शान्त-संतोष, समझदार व्यक्तित्व की शान्ति और सभी जीवित प्राणियों के प्रति एकता और प्रेम की शिक्षा देगा।

× × ×

मैक्स वेबर जैसे महान समाजशास्त्री ने गीता को राजनीति और नैतिकता के अंतःसम्बन्ध पर विश्व में एक मात्र सुसंगत पाठ्य सामग्री कहा था।

कबीर के दर्शन पर गीता का प्रभाव

आनन्दकन्द, मुरलीमनोहर, करुणानिधान, भक्तवत्सल भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से प्रकटी पुण्यकारिणी, दुःखहारिणी, अघनाशी, सुखराशि, मोक्षदायिनी विश्व की अमर संगीतिका गीता एक ऐसी पावन अमृतधारा के समान है, जिसमें मज्जन कर भारत भूमि के अनेकानेक महापुरुष आत्मज्ञान की ज्योति से चमत्कृत हो दिव्यानंद को प्राप्त हुए। गीता ब्रह्मज्ञान की एक चिर प्रज्वलित दीपिका है जिसकी ज्योति में पड़ कर असंख्य हिन्दू कुन्दन बन गए। गीता में भरे हुए विस्तृत ज्ञान भण्डार का प्रभाव सभी महापुरुषों पर पड़ा। यही कारण है कि इस दिव्य देन की महानता के सम्बन्ध में विश्व के सभी प्रमुख विचारक एवं दार्शनिकों में मतैक्य है।

पन्द्रहवीं शताब्दी में भारतीय धर्म और समाज में नूतन क्रान्ति लाने वाले सन्तकवि कबीर ने जन्म लेकर हिन्दी साहित्य को एक नए रुख पर मोड़ दिया। जनसाधारण की भाषा में उन्होंने धर्म के गंभीरतम तत्त्वों का जैसा सुन्दर निरूपण किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। कबीर के साहित्य पर एक विहंगम दृष्टि डालने से हमें उनके दर्शन पर गीता का स्पष्ट प्रभाव एवं अमिट छाप दृष्टिगोचर होती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो गीता के मूलभावों का भाषान्तर ही कबीर के साहित्य का मूल है। अनेकानेक विषयों पर कबीर और गीता के दृष्टिकोणों में बहुत समानता है।

संसार की नश्वरता—इस सम्बन्ध में कबीर की स्पष्टोक्ति है कि कालचक्र में सभी को पिस जाना है—आज अथवा कल।

चलती चक्की देखि के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।

माली आवत देख के कलिया करे पुकार।
फूली फूली चुनि लई काल्ह हमारी बारि।।

और गीता का मत है—

अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। 9/33, गीता

स्थितप्रज्ञ जहां कबीर के मतानुसार निरेच्छय व्यक्ति ही सच्चा संत है—

चाह गई चिंता मिटी मनुवां बेपरवाह।
जिनको कुछ न चाहिए, सो जग साहनसाह।।

वहां गीता में भी कामना त्याग पर ही बल दिया गया है।

प्रजहाति यदा कामान्....। 2/55, गीता

देह की नश्वरता—कबीर ने बड़ी ही सुन्दर उपमाओं द्वारा देह की अनित्यता को सरल एवं स्पष्ट रूप से बताया है।

पानी केरा बुदबुदा अस मानुष की जात।
देखत ही छिपि जाएगा, ज्यों तारा परभात।।

हाड़ जले ज्यों लाकड़ी केस जरै ज्यों घास।
सब जग जरता देख करि, भये 'कबीर' उदास।।

गीता में भी देह को अन्तवान कहा गया है।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।। 2/18, गीता

कबीर का दोहा—आया है सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर और गीता के जातस्य ही ध्रुवे मृत्युं....(2/27 श्लोक) में समानार्थकता विस्मयोत्पादक है।

आत्मा अमर है—कबीर महान् आत्मदर्शी थे। वे स्वयं को अविनाशी एवं अमर ब्रह्मात्म का अनुरूप मानते हैं—

राम मरे तो मैं मरूं न तो मरे बलाय।
पारब्रह्म का बालका मरे न मारा जाए।।

और गीता में भगवान् अपने प्रिय सखा अर्जुन को उपदेश करते हैं—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः..... 2/23, गीता

जीव में ब्रह्म—कबीर स्थान-स्थान पर मूढ़ प्राणी को बाहर जंगलों में ईश्वर को ढूंढ़ने पर फटकारते हुए कहते हैं—

तेरा साईं तुझ में, ज्यों पुहुपन में वास,
ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आगि।
ज्यों नैनन में पूतरी........
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः 10/20, गीता

निष्काम कर्मयोग—कबीर के अनुसार निष्काम कर्म में ही कर्म का वास्तविक महत्त्व है अन्यथा कर्म केवल ढोंग है—

वृक्ष कबहुं नहि फल भखे नदी न संचे नीर।
परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर।।

गीता में तो स्थान-स्थान पर निष्काम कर्म पर बल दिया गया है।

कर्मणैव हि संसिद्धि.... 3/20, गीता

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। 2/47, गीता

चंचल मन—मन बड़ा चंचल है। इसे वश में करने से सर्व सिद्धियां सुलभ हो जाती हैं।

बाजीगर का बान्दरा, ऐसा मनुज हो साथ।
नाना नाच नचाय के राखत अपने हाथ।।

अर्जुन अधीर हो कृष्ण से कह उठे—

चञ्चलं हि मनः कृष्ण....। 6/34, गीता

सुख-दुःख में समानता—सच्चा साधु वही है जो सुख-दुःख में, हर्ष-विषाद में समान रूप से ईश्वरोपासना करे—

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय,
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय।
सुख के भाव झिलपड़े...

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण का उपदेश है—

सुखदुःखे समे कृत्वा.....। 2/38, गीता

सन्तोष—संतोष ही सुख का मूल है। सब सुखों का निधान है।

गोधन गजधन वाजिधन और रतन धन खानि।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरि समानी।।
साईं इतना दीजिये जितना कुटुंब समाय।
ता मैं भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए।।

गीता में भगवान् कामना रहित प्राणी का निर्माण करने को उद्यत हैं।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः। 2/71, गीता

मिथ्या आडम्बर—कबीर सरल एवं शुद्ध चित्त वाले थे। वे सभी कर्मों में मिथ्याडम्बर से कोसों दूर रहते थे। यहां तक कि प्रभु ध्यान में भी वे दिखावे को अनुचित मानते थे—

माला तो कर में फिरै जीभ फिरे मुख मांहि।
मनुवा तो चहुं दिशि फिरै, यह तो सुमिरन नाहि।।

गीता में भी भगवान् ने इन्द्रियों का दमन कर मन से विषयों का भोग करने वालों की आलोचना की है।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।। 3/6, गीता

देश-विदेश के स्वाधीनता संग्राम में गीता की भूमिका

हमारे देश की राष्ट्रीयता धार्मिक, सांस्कृतिक अधिक रही है। हमारे देश में जितनी क्रान्तियां एवं परिवर्तन हुए हैं वह आध्यात्मिक हैं। हमारे प्रायः सारे युग प्रवर्तक महापुरुष आध्यात्मिक थे। चाहे प्राचीनकाल में स्वतंत्रता संग्राम हो, चाहे मध्ययुग में, चाहे वर्तमान स्वाधीनता संग्राम में, गीता की विशेष प्रभावी भूमिका रही है।

चाहे भारत पर कैसा भी विदेशी आघात हुआ हो भारत ने, हिन्दू समाज ने, कभी भी अपने-आपको पराजित नहीं माना। निरन्तर संघर्षरत रहे। यह गीता का ही प्रताप है। इसलिए सिकन्दर को भारत के द्वार से वापस लौटना पड़ा।

सिकन्दर अरस्तू का शिष्य था। अरस्तू स्वयं पश्चिम का महानतम विचारक एवं वैज्ञानिक होते हुए भी भारतीय ज्ञान के लिए ललक रखता था। मेकनिरल नामक प्रसिद्ध लेखक ने सिकन्दर के आक्रमणों पर एक पुस्तक लिखी। मेगस्थनीज नामक इतिहासकार ने अपने ग्रंथ Indica में उसका उद्धरण देते हुए लिखा है कि सिकन्दर जब भारत पर आक्रमण के लिए निकला तब उसके गुरु अरस्तू ने उसे आदेश दिया कि वह भारत से लौटते समय उसके लिए दो उपहार लेकर आवे—एक गीता और दूसरा भारत का श्रेष्ठ संत। सिकन्दर जब भारत से लौटने लगा तब उसने ओनियोक्रीटस नामक अपने प्रतिनिधि को एक भारतीय संत को ढूंढ़कर साथ ले चलने के लिए भेजा। एक संत तो साथ चल पड़ा परन्तु दूसरे ने जिसका नाम डेंडीमीज था, लिखा है—साथ चलने के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ। डेंडीमीज का भारतीय नाम दण्डी स्वामी हो सकता है। कई आमंत्रण भेजने पर भी वह सिकन्दर से मिलने नहीं आया। तब क्रुद्ध होकर सिकन्दर ने सेक्रेटस नामक अपने एक अधिकारी को उस सर्वसंग-परित्यागी संन्यासी के पास इस आदेश के साथ भेजा—'जो प्रत्यक्ष जुपिटर (देवता) का पुत्र है, ऐसे जगज्जेता सम्राट् सिकन्दर ने तुम्हें बुलाया है, जो तुम्हें धन से मालामाल कर देगा और यदि नहीं आओगे, तो वहीं तुम्हारा शिरोच्छेद कर दिया जायेगा।

यह धमकी सुनकर वह संन्यासी खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसने उत्तर दिया—सिकन्दर जैसा और जिस अर्थ में देवता का पुत्र है, वैसा ही और उसी

अर्थ में मैं भी देवता का पुत्र हूं। सिकन्दर का जगज्जेता होने का दंभ व्यर्थ है। उसने अभी तो व्यास नदी का तीर भी नहीं देखा है। उस पार जिन शूरवीर भारतीयों के राज्य हैं और उनसे भी आगे जो मगध का प्रबल साम्राज्य है, उनके साथ युद्ध करने के बाद यदि सिकन्दर जीवित शेष रहता है, तो वह जगज्जेता है या नहीं—इस पर विचार करेंगे। सिकन्दर मुझे धन का लालच दे रहा है। जाकर उससे कहो कि मुझ जैसे संन्यासी ऐसी वस्तुओं को तुच्छ समझते हैं। हमारे रहने के लिए शस्य श्यामल भारत, पहनने के लिए वल्कल वस्त्र, पीने के लिए गंगाजल, खाने के लिए पाव भर आटा बहुत है जिसे मेरी मातृभूमि मुझे माता की ममता से दे रही है। हम आत्मधन के धनी हैं। वह आध्यात्मिक दृष्टि से दरिद्र सिकन्दर हमें क्या दे सकता है। सिकन्दर मेरा सिर कटवा देगा, तो अधिक-से-अधिक यही होगा कि वह सिर और शेष धड़ जिस मिट्टी से बना है, उसी में मिल जायेगा। परन्तु वह मेरी आत्मा का हनन नहीं कर सकता। मेरी आत्मा अमर है, अच्छेद्य है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। 2/23, गीता

सिकन्दर से कहो कि जो लोग सत्ता और स्वर्ण के दास हैं और मृत्यु से डरते हैं, उन्हीं को ऐसी धमकियां दे। हमारे सामने सिकन्दर जैसे मर्त्य मानव की ये धमकियां गीदड़ भभकियां होती है, क्योंकि सच्चा संन्यासी न स्वर्ण के वश में होता है और न ही मृत्यु से डरता है। जाओ, मैं नहीं आता।'

ऐसे ही एक यति से भेंट होने पर सिकन्दर ने उनसे पूछा—'मैं भारत विजय कर सकूंगा या नहीं?' यह सुनकर वह यति चुप रहा, किन्तु उसने एक ऐसा चमड़ा मंगवाया, जिसके दोनों सिरे या किनारे सूखकर और ऐंठकर धनुष की भांति वक्र तथा कड़े हो गये थे। तब उसने सिकन्दर से कहा, 'यह चमड़ा सपाट बिछाकर तू उस पर अकेला ही बैठ।'

सिकन्दर ने स्वयं और उसकी आज्ञा से उसके किसी अधिकारी ने उस चमड़े के वक्र सिरे को दबाकर उस पर बैठने की बहुत चेष्टा की, परन्तु वह एक सिरा दबाता, तो दूसरा कड़ा सिरा खट से ऊपर उठ जाता और उस सिरे को बलपूर्वक दबाता तो पहला कड़ा, ऐंठा सिरा खट से ऊपर उठ जाता। बहुत प्रयत्न करने पर भी उस चमड़े को सपाट बिछाकर उस पर अकेले बैठना उसके लिए सम्भव नहीं हुआ। उस ओर इंगित कर उस यति ने कहा—'तुम्हारे भारत विजय अभियान की यही दशा होगी। तुम प्रदेश जीतते हुए आगे बढ़ोगे तब तक पीछे जीते हुए प्रदेश तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह कर, तुम्हारी सत्ता उखाड़ फेंकेंगे। उन्हें दंड देने के लिए तुम पीछे मुड़ोगे, तो आगे के जीते हुए प्रदेश तुम्हारा शासन अस्वीकार कर विद्रोह

करेंगे और स्वतंत्र हो जाएंगे। इस प्रकार अखिल भारत का सम्राट् बनना तुम्हारे लिए असंभव है। इस अभियान में तुम सफल नहीं हो सकते।'

इसी क्रम में बहुत से विद्वानों से उसका साक्षात् हुआ जिसमें दस विद्वानों के साथ उसका वार्त्तालाप बहुत प्रसिद्ध है। वे सब वास्तविक ज्ञानी और तपस्वी थे जिन्हें अपने भरे दरबार में मूर्ख सिद्ध कर उन्हें अपमानित करना चाहता था। इनमें अधिकांश ब्राह्मण थे और उन ब्राह्मणों में कुछ तपस्वी साधु भी थे।

उनमें से एक वयोवृद्ध संत को एक ओर खड़ा कर कहा—'तुम्हारे सभी साथियों से मैं बारी-बारी से कुछ प्रश्न पूछने वाला हूं। तुम्हें उन सबके उत्तर सुनकर यह निर्णय करना होगा कि किसका उत्तर सर्वश्रेष्ठ है। उसे ही मैं सर्वप्रथम फांसी पर चढ़ाऊंगा, उसके पश्चात् औरों को। उस दरबार में यूनान के भी अनेक विद्वान् उपस्थित थे। सिकन्दर ने पहले विद्वान् से प्रश्न किया, इस संसार में मृतों की संख्या अधिक है या जीवितों की?

प्रथम विद्वान् ने उत्तर दिया, 'इस संसार में मरे हुओं का कोई अस्तित्व नहीं है अतः जीवितों की ही संख्या अधिक है।

सिकन्दर ने दूसरे से पूछा, पृथ्वी पर अधिक प्राणी हैं या समुद्र में?

उसने उत्तर दिया, 'समुद्र पृथ्वी का ही भाग है, अतः सभी प्राणी पृथ्वी पर ही हैं।'

तदनन्तर तीसरे से पूछा, इस संसार में सर्वाधिक बुद्धिमान् कौन है?

इसके उत्तर में उसने कहा, 'बुद्धिमान् मनुष्य को भी अभी तक जिसकी जानकारी नहीं हो पाई, वह मनुष्य ही सर्वाधिक बुद्धिमान् है।

सिकन्दर ने चौथे से प्रश्न किया—'सिन्ध की जनता को मेरे विरुद्ध विद्रोह करने के लिए क्यों उकसाया?

उसने निर्भयता से उत्तर दिया कि मैं चाहता था कि वह जीये तो जीये स्वाभिमान के साथ और मरे तो स्वाभिमान के साथ।

फिर पांचवें से पूछा—पहले क्या बनाया गया, दिन या रात?

बेधड़क उत्तर दिया—दिन, रात से एक दिन पहले।

सिकन्दर कुछ समझ न सका, चकरा गया, झल्लाया सा उसने पूछा—क्या मतलब?

'मतलब कि असम्भव प्रश्नों का उत्तर भी असम्भव ही होता है।'

सिकन्दर कुछ हतप्रभ हो चला था। उसे लगा कि अपनी विजयों के बावजूद वह कुछ ऐसों के बीच खड़ा है जो हारकर भी उससे हारे नहीं और नंगे होकर भी

उसे तुच्छ समझते हैं। उसने छठे से पूछा—मनुष्य किस प्रकार दुनिया का प्यारा हो सकता है? साधु बोला—बहुत ताकत पर, पर साथ ही प्रजा का प्यारा होकर, जिससे प्रजा उससे डरे नहीं।

सिकन्दर ने सातवें विद्वान् तपस्वी से पूछा—मनुष्य देवता कैसे बन सकता है?

उसने उत्तर दिया—अमनुजकर्मा होकर। डूबते सिकन्दर को जैसे सूखी जमीन मिली। क्योंकि वह स्वयं अमनुजकर्मा था। अपने को देवताओं का वंशज वह मानता, कहता भी था।

फिर आठवें तपस्वी से पूछा—जीवन और मृत्यु दोनों में अधिक बलवान कौन है?

तपस्वी बोला—जीवन, क्योंकि वह भयानक से भयानक तकलीफ बर्दाश्त कर सकता है।

फिर सिकन्दर ने नौवें तपस्वी से पूछा—कब तक जीना इज्जत से जीना है?

उत्तर मिला—जब तक मनुष्य यह न सोचने लग जाए कि अब जीने से मर जाना अच्छा है।

अब सिकन्दर ने जज बनाये साधु से पूछा किसका उत्तर सर्वश्रेष्ठ है?

वह साधु भला अपने मित्रों की जान कैसे ले सकता था अतः उसने बड़ी युक्ति से कहा—एक से बढ़कर एक है।

जज का उत्तर स्वयं सिकन्दर के लिए पहेली बन गया, कुछ समझ नहीं पाया। इससे सिकन्दर अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसने उस विद्वान् से कहा कि तुम जान-बूझकर टेढ़े-मेढ़े उत्तर दे रहे हो, अतः सर्वप्रथम तुम्हें ही फांसी देनी होगी।

तब उस विद्वान् ने अत्यन्त शान्तिपूर्वक गम्भीर वाणी में कहा, 'राजन्! मैंने अपना काम योग्य रीति से किया है। मेरा निर्णय कितना उपयुक्त है, यह समझने के लिए विवेक शक्ति की आवश्यकता होती है। इस समय क्रोध और द्वेष के कारण तुम्हारी विवेक शक्ति नष्ट हो गई है। तुम्हारे जैसे राजा के लिए यह बात लज्जाजनक है।

वहां उपस्थित यूनानी विद्वानों ने उन भारतीय विद्वानों की एक स्वर से प्रशंसा की। उन्होंने सिकन्दर से कहा, 'हे राजाधिराज! यदि आप इन नर-रत्नों की हत्या करते हैं, तो आपके साथ ही यूनान देश की बदनामी होगी। सारा संसार हमें इस बात के लिए धिक्कारेगा। अतः आप ऐसे विद्वानों को मुक्त कर उन्हें गौरवान्वित करें, यही श्रेयस्कर है।'

यूनानी पंडितों की यह बात सिकन्दर को स्वीकार करनी पड़ी। उसने विद्वानों से क्षमायाचना करके अत्यन्त सम्मानपूर्वक उन्हें मुक्त कर दिया।

जो एक यति सिकन्दर के साथ चल पड़ा था, उसने भी ईरान की सीमा पर पहुंचकर सिकन्दर से प्रार्थना की कि मेरे लिए चिता तैयार की जाय, मैं इस शरीर को जला देना चाहता हूं। सिकन्दर ने पूछा, क्या बात है? उसने कहा, मेरी अवस्था अब अस्सी वर्ष से अधिक हो गई है, मुझे कभी ज्वर या कोई रोग नहीं हुआ। अब मुझे बुखार आया है। जिससे यह शरीर अपवित्र हो गया है। अब यह शरीर साधना के योग्य नहीं रहा। नये और पवित्र शरीर से आगे की यात्रा, पूर्णता की ओर यात्रा प्रभु की ओर यात्रा करूंगा। मैं इसे त्याग देना चाहता हूं। सिकन्दर ने सब प्रकार से यत्न किया और समझाया कि अपना विचार बदल दें, परन्तु जब वह न माना तो चिता तैयार की गई। उसके हाथ में रत्न थे जिन्हें वह चारों तरफ फेंकता जाता था। वह सीधा जाकर चिता पर चढ़ गया और उसे आग लगा दी।

स्पष्ट है सिकन्दर के समय कैसा अद्‌भुत प्रभाव गीता का संत समाज पर, ब्राह्मण समाज पर, क्षत्रिय समाज पर था जिसके फलस्वरूप सब एक साथ सिकन्दर के विरुद्ध उठ खड़े हुए। फलतः उसे भारत के द्वार से ही वापस लौटना पड़ा। जीवित अपने देश भी नहीं पहुंच पाया। रास्ते में ही प्राण निकल गये।

सिकन्दर के सेनापति सैल्यूकस ने पुनः भारत पर आक्रमण का दुस्साहस किया तो उसको अपनी पुत्री सहित चार प्रान्त देकर समझौता करना पड़ा। शक-हूण, कुशाण को शीघ्र ही देश से निष्कासित कर दिया और जो देश में रह गए उन्हें अपने में पचा लिया, आत्मसात् कर लिया। जब दुनिया में इस्लाम की आंधी चली तो उसने स्पेन से लेकर इंडोनेशिया तक को अपने में लील लिया। वहां की पूर्व सभ्यता-संस्कृति को नष्ट कर अपने इस्लाम को थोप दिया। वहां भारत में इस दृष्टि से कुछ भी सफलता उन्हें नहीं मिली।

'दीने मुहम्मदी का बेबाक बेड़ा,
न जेजों में ठैरा न कुलजम में अटका।
किये जिसने तै चलके सातों समुन्दर,
वह डूबा दहाने में गंगा के आखिर।।'

अर्थात् अरब देश का वह निडर बेड़ा जिसकी ध्वजा विश्वभर में फहरा चुकी थी, किसी प्रकार का भय जिसका मार्ग न रोक सका था, जो अरब और ब्लूचीस्तान के मध्य वाली खाड़ी में भी नहीं रुका था और लाल सागर में भी नहीं झिझका था, जिसने सातों समुद्र ढाल के नीचे कर लिए थे, वह गंगा के दहाने में आकर डूब गया।

इस्लाम से हमारा संघर्ष प्रारम्भ में मुहम्मद बिन कासिम (712 ई.) से प्रारम्भ होता है जो आज तक जारी है। इस बीच सन् 1757 से सन् 1947 तक अंग्रेजों से टक्कर ली। अंग्रेजों के विषय में कहा जाता था इनके राज्य में सूर्यास्त नहीं होता। उनको भी देश से निष्कासित करके ही दम लिया।

आधुनिक समय में देश के राष्ट्रीय जागरण में, राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में गीता का अविस्मरणीय अवदान है। बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में उद्दीप्त इस राष्ट्रीय जागृति की प्रेरणाशक्ति धार्मिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक निष्ठा थी। इसलिए इसे धार्मिक राष्ट्रीयता के नाम से अभिहित किया जाता है। इसके प्रमुख प्रणेता बाल गंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, विपिन चन्द्र पाल, अरविन्द घोष सभी प्रगाढ़ धार्मिक निष्ठा के व्यक्ति थे। लाला लाजपतराय स्वधर्म और स्वदेश को एक ही तत्त्व के दो रूप मानते थे। उनके अनुसार देशभक्ति को धर्मनिष्ठा का स्वरूप देकर उसे ही जीवन-मरण का लक्ष्य निर्धारित करने में मानव जीवन की सार्थकता है। इस धार्मिक प्रवृत्ति ने उन्हें राष्ट्र में परमात्म दर्शन करने की शक्ति दी।

देशभक्ति को धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करने में गीता का निष्काम कर्मयोग, आत्म समर्पण योग, आत्मा की अमरता और स्थितप्रज्ञ दर्शन तथा स्वामी विवेकानन्द द्वारा उपदिष्ट वेदान्त दर्शन का सर्वाधिक योग था। स्वामी विवेकानन्दजी आधुनिक समय में सर्वप्रथम वेदान्त के सत्य को गिरि-कन्दराओं में अवस्थित कतिपय संन्यासियों के हाथ से निकाल कर जनसाधारण की सम्पत्ति बना देना चाहते थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि इसी के माध्यम से यह सोया हुआ देश जागेगा और लोगों में आत्मविश्वास की उत्पत्ति होगी। स्वामीजी ने युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण में लगाने का आह्वान करते हुए कहा—'संसार में कोई पाप है, तो वह है दुर्बलता, दुर्बलता दूर करो, दुर्बलता ही मृत्यु है। हमारे देश की जिन वस्तुओं की आवश्यकता है वे हैं—लौह निर्मित मांसपेशियां, फौलाद की नाड़ियाँ और ऐसी प्रबल मनःशक्ति जिसे रोका न जा सके।' स्वामी द्वारा प्रतिपादित निर्भयता का यह सिद्धान्त गीता के दूसरे अध्याय के तीसरे श्लोक की प्रतिध्वनि है। गीता में भगवान ने कहा है—

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ, नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं, त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥ 2/3, गीता

अर्थात् कायर मत बनो, हृदय की तुच्छ दुर्बलता का परित्याग कर, स्वधर्म पालन हेतु युद्ध करो जिससे न्याय धर्म की स्थापना हो।

स्वामी विवेकानन्दजी कहते हैं इस एक श्लोक में पूरी गीता का संदेश निहित है। अतः जो इस एक श्लोक का पाठ करता है तो उसे सम्पूर्ण गीता पाठ का लाभ होता है। स्वामीजी कहते हैं इस श्लोक (भाव) की उपेक्षा ने हमने मध्य युग में

'मृदु इतिहास' की रचना की जिसे पढ़कर आंख आंसुओं से भर जाती हैं। अपनी मूर्खता पर रोना आता है। पुनः कहते हैं हम बहुत रो चुके हैं। अब और रोने की आवश्यकता नहीं। अब अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मनुष्य बनो।

उन्होंने यह भी कहा कि मेरी प्रार्थना है कि आगामी 50 वर्षों तक भारत के सारे देवी-देवता तिरोहित हो जायें, एकमात्र भारत माता ही पूज्य देवी के रूप में प्रतिष्ठित रहे तभी हम अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने योग्य होंगे, अन्यथा नहीं। इस यथार्थ उद्घोष के ठीक 50 वर्षों के अन्दर अर्थात् 1947 में भारत को स्वाधीनता प्राप्त हो गई।

यह अलग बात है स्वाधीन भारत को सही नेतृत्व नहीं मिलने से भारत की जो भूमिका देश के संदर्भ में और विश्व के संदर्भ में होनी चाहिए थी वह नहीं हो सकी, स्वयं पथच्युत होकर अन्तर-बाह्य संकटों से पुनः घिर गया है। अतः स्वामीजी के निवेदन में इतना संशोधन अवश्य कर लेना चाहिए 'स्वामी जी के पचास-वर्ष', अभी पूरे नहीं हुए हैं। और हम सचमुच में देखते हैं कि गीता ने सारे राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को प्रेरित किया। क्रान्तिकारियों के पास गीता, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का आनन्द मठ के साथ-साथ स्वामी विवेकानन्दजी का साहित्य तो विशेष कर कोलम्बो से अल्मोड़ा तक दिये भारतीय व्याख्यान रहती थी। आनन्द मठ के वन्देमातरम् गीत ने पूरे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित किया। 'वंदेमातरम् गीत' प्रायः सभी क्रान्तिकारियों के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति का, स्वातंत्र्य का मंत्र रहा है। इसने करोड़ों भारतीयों के हृदय पर जादू किया है। और भारत के अणु-अणु को स्वतंत्रता का दीवाना बना दिया है। लाला लाजपतराय एवं ऋषि अरविन्द घोष तो इससे इतने अधिक प्रभावित हुए कि दोनों ने वंदेमातरम्' नाम का समाचार पत्र प्रारम्भ किया। भारतीय क्रान्ति के पिता लोकमान्य तिलकजी को भी इस मंत्र ने अत्यधिक प्रभावित किया। योगिराज अरविन्द कहते हैं—संसार के इतिहास में किसी उपन्यास किसी पुस्तक में ऐसा कोई गीत नहीं है, जिस गीत की पंक्तियां, पुस्तक के पन्ने पर काले अक्षर से लिखी हुई पंक्तियां, पुस्तक के पन्ने से उछलकर करोड़ों लोगों के हृदयों पर लिखी गई हो। और लोगों ने उसको अपना राष्ट्रीय गीत बना लिया हो। बंकिमचन्द्र के गीत में वह शक्ति थी। उस पुस्तक के पन्ने से वे पंक्तियां उछल पड़ीं करोड़ों की जिह्वा पर, करोड़ों के हृदय पर लिखी गयी और उसके लिए लोगों ने बलिदान दिये। प्राण दिये। वंदेमातरम् गीत में हम भगवद् गीता के कर्म योग का मधुर संगीतमय चित्रण पाते हैं। इस गान से हमें एक सुन्दर संकल्पना एवं संदेश मिलता है कि भारत माता का भाल कभी विदेशी क्रूर शक्ति के सम्मुख नहीं झुकेगा और भारत एक समृद्ध व शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा। स्वाधीनता आन्दोलन में चाहे अहिंस मार्गी हो या सहिंस मार्गी दोनों का लक्ष्य

देश की स्वाधीनता था। इसलिए दोनों का पाथेय भी एक था। यही कारण है कि गांधीजी के हाथ में गीता देखते हैं तो भूदान आन्दोलन के प्रवर्तक विनोबा भावे के हाथ में भी गीता तो क्रान्तिधर्मा तिलक के हाथ में गीता और प्राय: सभी विप्लवी बन्धुओं के हाथ में गीता देखते हैं। 16 वर्ष का युवक खुदीराम बोस गीता के श्लोक गाता हुआ हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूम लेता है—

एक बार बिदाय दे मां फिरे आसी,
हांसी-हांसी पोड़बो फांसी देखबे भारतवासी।

खुदीराम बोस जेलर को काका कहकर पुकारता था। उनसे बहुत आत्मीयता हो गयी थी। खुदीराम को आम बहुत पसन्द थे। फांसी के पूर्व रात्रि को जेलर ने कुछ बढ़िया आम लाकर दिये। खुदीराम ने कमरे के एक कोने में रखवा लिए। सुबह जेलर आया तो देखा आम वैसे ही पड़े हैं। जेलर साहब ने पूछा तो खुदीराम ने कहा, आपको आम दीख रहे हैं और मुझे तो फांसी दिख रही है। आप अपने आम ले जाएं मुझे इन्हें देखकर पीड़ा हो रही है। जेलर साहब जैसे ही उठाने लगे आम पिचक गये। खुदीराम की हंसी फूट पड़ी। खुदीराम ने आमों को चूस कर हवा भर कर रख दिया था। मौत के समय इस प्रकार मजाक करते देखकर जेलर साहब की आंख से आंसू झरने लगे।

राष्ट्र के लिए सबसे कम उम्र में प्राणों का बलिदान देने वाले सबसे युवा क्रान्तिकारी खुदीराम ने फांसी से पूर्व अपनी अन्तिम इच्छा में गीता को अपने पास रखने की अनुमति मांगी। फांसी का आलिंगन करते समय खुदीराम के हाथ में गीता थी। इस वीर सपूत के दाह संस्कार के समय उपस्थित असंख्य भीड़ ने उसकी चिता भस्म को मस्तक से लगाकर श्रद्धांजलि दी। इस प्रकार इस वीर ने कर्तव्यनिष्ठा और बलिदान द्वारा देशवासियों में ब्रिटिश शासन के प्रति विद्रोह के भाव को जगा दिया।

इसी प्रकार बमरौली डकैती काण्ड के प्रमुख षड्यन्त्रकारी रोशनसिंह ने फांसी से पूर्व अपने मित्र को एक पत्र लिखा, जिसमें वे कहते है—'इस सप्ताह के भीतर ही फांसी होगी। इस बीच ईश्वर-भजन का खूब सुयोग मिला। मेरा मोह छूट गया। कोई वासना न रही।....हमारे शास्त्रों में लिखा है, जो व्यक्ति धर्मयुद्ध में प्राण देता है, उसकी वही गति होती है जो जंगल में रहकर तपस्या करने वाले ऋषि की।' फांसी के दिन ठाकुर साहब ने कुछ देर तक गीता पाठ किया और फिर फांसी पर झूल गये। स्पष्ट है गीता ने इन कर्मवीरों के हृदय से मृत्यु के भय को निकाल कर कर्तव्य का मार्ग दिखाया।

निरपराध भारतवासियों के प्रति अत्याचार एवं अनुचित आचरण का प्रतिकार करते हुए तत्कालीन 'प्लेग निवारण समिति' के प्रधान श्री रैण्ड का जो वध किया

गया, उसके पीछे भी गीता के द्वारा प्रतिपादित अन्याय के निस्स्वार्थ प्रतिकार की ही प्रेरणा थी। उन्होंने प्लेग से ग्रस्त परिवारों में अपने सैनिकों को भेजकर उनके साथ किये गए दुर्व्यवहार एवं दुराचार का अनुमोदन किया था। इस बात का प्रमाण 'केसरी' में 15 जून, 1897 को प्रकाशित वह लेख है, जिसमें कहा गया है—'श्रीकृष्ण का गीता में उपदेश है कि यदि कोई व्यक्ति कर्मफल की इच्छा के बिना कर्म करता है, तो उसे कोई दोष नहीं लगता। ईश्वर ने विदेशियों को भारत का साम्राज्य ताम्रपत्र पर लिखकर नहीं दिया....दण्ड संहिता की परिधि से बाहर आओ तथा श्रीमद्भगवद्गीता के उत्तम वातावरण में प्रवेश करो।

रामप्रसाद बिस्मिल फांसी के दिन भी स्नानादि से निवृत्त होकर दैनिक पूजा-पाठ के बाद, दैनिक व्यायाम भी करके दो दिन पूर्व लोकमान्य तिलक द्वारा प्रेषित गीता का पाठ करते हुए हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ जाता है। फांसी के समय 10 पौण्ड वजन बढ़ जाता है।

यही स्थिति अश्फाक उल्ला की हुई। उसका भी वजन फांसी के समय बढ़ गया था। दोनों की परस्पर बड़ी मित्रता थी। रामप्रसाद बिस्मिल उन्हें अपना छोटा भाई मानते थे, उसे अपने घर ले जाते और उसे लक्ष्मण कहकर पुकारते थे। सब की नजर में वह राम-लखन की जोड़ी बड़ी प्यारी थी। वे घर पर साथ खाना खाते, साथ खेलते, साथ-साथ देशभक्ति के तराने गाते और अंत में दोनों साथ-साथ फाँसी पर भी चढ़ गये। एक बार अश्फाक उल्ला के पेट में भीषण दर्द हुआ, वे बेहोश हो गये, वे राम-राम चिल्लाने लगे। घर के लोगों ने कहा—'अल्लाह-अल्लाह बोलो।' किन्तु वे राम-राम चिल्लाने लगे। जब रामप्रसाद बिस्मिल पहुँचे तो वे उठकर उनके गले से लिपट गये और कहा—'अब मेरा राम आ गया है।' इस दृश्य को देखकर लोगों को रामायण में वर्णित लक्ष्मण की बेहोशी के बाद राम से मिलने की बात याद हो आई। यह हमारी संस्कृति हमारी नस-नस में है। इसने सब के दिलों को जोड़ा है। अश्फाक और बिस्मिल के दिलों को एक बना दिया है, पूरे देश को एक बना दिया है। अंग्रेजों ने अश्फाक को बरगलाने की अनेक चेष्टा की, पर सफल नहीं हुए। दोनों साथ-साथ फांसी पर चढ़ गये, दोनों ही फांसी की सजा से इतने प्रफुल्लित व प्रमुदित हुए कि दोनों का ही वजन घटने के स्थान पर बढ़ गया।

रामप्रसाद बिस्मिल फांसी के दिन प्रातः उठकर स्नान, पूजा-पाठ फिर व्यायाम करता है इससे जेलर को आश्चर्य होता है और पूछता है प्रातः उठकर स्नान, पूजा-पाठ तो समझ में आता है, पर आप व्यायाम भी कर रहे हैं यह समझ में नहीं आ रहा है। तब रामप्रसाद बिस्मिल ने बताया—मैं अपने उद्देश्य को पूरा न कर सका। जब तक देश स्वाधीन नहीं हो जाता तब तक बार-बार जन्म लेता रहूं और देश

की स्वाधीनता के लिए मरता रहूं। इसके लिए स्वस्थ और बलवान शरीर चाहिए। इस देह में जहां से यात्रा समाप्त होगी, अगले जन्म में वहां से यात्रा प्रारम्भ होगी। इसलिए व्यायाम कर रहा हूँ। यह सुनकर जेलर की आंखों में आंसू आ जाते हैं।

इधर, सन् 1909 को लन्दन के इम्पीरियल इंस्टिट्यूट के जहांगीर हॉल में मदनलाल ढींगरा ने सर करजन वायली नामक एक अंग्रेज अधिकारी को गोली का निशाना बना दिया। अंग्रेजों की भरी हुई सभा में एक भारतीय हिन्दू युवक के इतने साहस को देखकर अंग्रेज कांप उठे।

मदनलाल ढींगरा ने अदालत में निर्भीकतापूर्वक वक्तव्य देते हुए कहा—हिन्दू के नाते मैं यह अनुभव करता हूं मेरे देश के साथ किया गया अन्याय ईश्वर का अपमान करने के तुल्य है। मेरे देश का कार्य ही भगवान् राम का कार्य है। उसकी सेवा ही कृष्ण की सेवा है। धन और बुद्धिबल से निर्धन मेरे सरीखे अकिंचन् पुत्र के पास माता के श्रीचरणों में समर्पित करने के लिए अपनी रक्तांजलि के अतिरिक्त है भी क्या? अत: मैं उसे ही उसकी पावन वेदी पर समर्पित कर रहा हूं।

जब तक हमारा देश स्वतंत्र नहीं हो जाता भगवान् कृष्ण इन शब्दों के द्वारा हमें प्रबोधित करते रहेंगे—'यदि तुम युद्ध करते हुए मर जाते हो तो तुम्हें स्वर्ग प्राप्त होगा, यदि सफल होते हो तो तुम पृथ्वीतल पर राज्य करोगे।'

आत्मा अमर है। यदि मेरे देशवासियों में से हर एक मरने से पूर्व कम से कम दो अंग्रेजों की जान ले तो माता की मुक्ति एक दिन का काम है।

'ईश्वर से मेरी अन्तिम प्रार्थना है कि मैं तब तक भारत में जन्मता और पुन: मरता रहूं जब तक भारत माता स्वतंत्र न हो जाए।' इस प्रकार मदन ढींगरा के हाथ में भी गीता।

शहीद उद्यमसिंह ने जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड के दोषी डायर का वध किया तथा गदर आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सोहनसिंह भाकना भी गीता से प्रभावित थे। चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, सूर्य सेन, राजेन्द्र लाहिड़ी, यतीन्द्रनाथ गुप्त आदि सभी क्रान्तिकारियों ने गीता से प्रेरणा प्राप्त की थी। भगतसिंह गीता से प्रभावित थे इसलिए पिता को पत्र लिखकर 'गीतारहस्य' की प्रति भेजने की प्रार्थना की थी।

अरविन्द घोष के हाथ में गीता। उन्होंने भगवद्गीता का स्पेशल Edition छपवाया था। जिसके मुखपृष्ठ पर भारत माता का चित्र था। भारत माता एक हाथ में गीता लिए हुए और एक हाथ में तलवार लिए हुए। और जितने भी क्रान्तिकारियों को देशभक्ति की प्रतिज्ञा करवाते थे उसके एक हाथ में गीता पकड़वाते और एक हाथ में तलवार पकड़वाते थे और वन्देमातरम् का गीत

गवाते थे। इस तरह अरविन्द घोष ने अपने छोटे भाई वारीन्द्र घोष को, स्वामी विवेकानन्द के छोटे भाई भूपेन्द्र दत्त को भी इसी तरह से दीक्षा दी थी। उस गीता पर अंग्रेज सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया। क्योंकि जितने क्रान्तिकारियों के घरों में खोज होती उस घर में बारूद मिलता, बम के मसाले मिलते, गीता मिलती। अन्य समय में, फांसी के समय में भी गीता उनके साथ होती थी। तो अंग्रेज सरकार ने सोचा गीता में और बम के गोलों में कुछ सम्बन्ध होगा। इसलिए क्रान्तिकारी बम के गोले भी रखते हैं, गीता भी रखते हैं। उन्होंने कुछ Intelligence Department के Officer लगवाये कि तुम खोज करके बताओ गीता में बम बनाने के फार्मूले कहां-कहां है?

श्री अरविन्दजी को जब इस बात का पता लगा तब उन्होंने कहा—अरे, तुम से जाहिल और मूर्ख आदमी दुनिया में और कोई नहीं है अंग्रेजों। तुम्हारी अक्ल में समझ में नहीं आता कि गीता में बम बनाने के फार्मूले नहीं हैं। गीता तो आत्म बम बनाने का कारखाना है। उसमें वह फार्मूले हैं जिससे व्यक्ति आत्म बम बन जाता है जिससे दुनिया के सारे बम और सारे हथियारों के सामने आदमी निर्भीक खड़ा रह सकता है। वह आत्मा की शक्ति देती है, जिससे वह किसी शस्त्र से डरता नहीं। उस अमर आत्मा का संदेश गीता देती है।

अरविन्दजी एक पत्रिका निकालते थे, जिसका नाम था युगान्तर। युगान्तर में ऐसे-ऐसे क्रान्तिकारी लेख लिखते थे, तो उस युगान्तर पर प्रतिबंध लगा दिया सरकार ने। युगान्तर का संस्करण 'अन्डर ग्राउंड' छपने लगा, छिप करके भूमिगत छपने लगा। उस युगान्तर पत्रिका को क्रान्तिकारियों एवं अन्य घरों तक पहुंचाने का जिम्मा लिया कुछ नवयुवकों ने। उन नवयुवकों में एक हनुमान प्रसाद पोद्दार भी थे। जो बाद में गीताप्रेस के संस्थापकों में एक थे। उस समय वे कलकत्ता में थे। साधारण दलाली का छोटा-मोटा धंधा करते थे। वो अरविन्दजी के सम्पर्क में आए। तो वह क्या करते 'सनलाइट' साबुन का पैकेट लेते। सनलाइट साबुन के पैकेट को खोलकर साबुन पर पहले युगान्तर का पेपर लपेटते थे और उसके ऊपर फिर सनलाइट का रेपर आदि लगाकर लोगों के घर-घर तक पहुंचाते थे। और गीता की प्रतियां जिस पर सरकार ने प्रतिबंध लगाया था उसको पहुंचाते थे। एक बार वो पकड़े गए। उन्होंने पूछा—क्या करता है? क्या करता हूं? गरीब आदमी हूं साबुन बेचता हूं। पेट पालने का धंधा करता हूं। जब अखबार पकड़ी गयी तब युगान्तर का मूल्य क्या लिखा है? पहले युगान्तर का मूल्य होता था एक पैसा। अब जब प्रतिबंध लगा दिया सरकार ने, पेपर 'अन्डर ग्राउंड' छपने लगा, भूमिगत हो गया तब उस पर मूल्य क्या छपता? युगान्तर का मूल्य फिरंगीर काटा मुण्डु। युगान्तर का मूल्य फिरंगी का कटा हुआ सिर। पटना में पढ़ते थे जयप्रकाश। कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कालेज में सुभाष चन्द्र बोस पढ़ते थे और

स्वामी विवेकानन्दजी को प्रत्यक्ष देखा था बचपन में। उस समय प्रेसीडेन्सी कालेज में विवेकानन्दजी के भक्तों के दो दल हो गये थे। एक दल कहता था विवेकानन्द ने कहा है फुटबाल खेलकर आप जल्दी भगवान् के निकट पहुंचोगे, उसको पाओगे। एक मरियल-सा, दुबला-सा विद्यार्थी स्वामी विवेकानन्द के पास आया। स्वामीजी! गीता के इस श्लोक का अर्थ बताइये। स्वामीजी ने परिचय पूछा तो बताया मैं तृतीय वर्ष स्नातक का छात्र हूं। इतना दुबला-पतला। क्या आप व्यायाम करते हो? नहीं स्वामीजी, व्यायाम तो नहीं करता। बस, पढ़ता रहता हूं। स्वामीजी ने कहा—जा, गीता को छोड़। जाओ फुटबाल खेलो। तुम्हें पता है गीता का उपदेश भगवान् ने विश्व के सबसे शिरोमणि योद्धा को, संसार के परमवीर को यह गीता का उपदेश दिया है। क्या दुबले-पतले आदमी के लिए गीता का उपदेश है। जाओ, जाकर व्यायाम करो, व्यायाम करने से तुम्हारा शरीर बलिष्ठ होगा। नया, ताजा खून तुम्हारी नसों में दौड़ेगा। तब तुमको गीता का श्लोक अधिक अच्छी तरह समझ में आएगा। तो जाओ पहले फुटबाल खेलो, व्यायाम करके देह को बलिष्ठ बनाओ और सेवा कार्य करो क्योंकि गीता वीर जनों और त्यागियों का महाग्रंथ है, इसलिए जो वीरत्व और सेवाभाव से भरा होगा, वही गीता के गूढ़ श्लोकों का रहस्य समझ पाएगा। युवक ने गीता समझने के लिए सुपात्र बनने का संकल्प लिया। उसने फुटबाल और व्यायाम से शरीर दृढ़ बनाया और फिर सेवा कार्य किए। छह माह बाद स्वामीजी के पास पहुंचा। तब स्वामीजी उसे अपने आश्रम में ठहराया और गीता का मर्म सविस्तार समझाया। गीता से प्रभावित युवक ने 'गीता प्रचार मंडल' की स्थापना की। वे युवक थे सत्येंद्र बनर्जी। उन्होंने बांग्ला भाषा में गीता के गेय पदों का काव्य रूपांतरण किया और मनोहारी ढंग से उन्हें गा कर लोगों तक पहुंचाया। उन्होंने चटगांव के निकट अनाथालय और विधवा आश्रम खोले। अनेक स्थानों पर व्यायामशालाएं खोली। स्वामीजी ने कहा था कि मंदिर जीवन के मार्गदर्शन के केंद्र होने चाहिए और व्यायामशाला, पुस्तकालय, ध्यान केन्द्र व निर्धन सहायता केन्द्र होने चाहिए। बनर्जी ने ऐसा मंदिर बनवाया, जहां ये सभी केन्द्र थे। स्वामीजी ने एक वचन कहा—आप फुटबाल खेल करके भगवान् को जल्दी पा लोगे भगवद्गीता पढ़ने की अपेक्षा। तो कुछ ने यही वचन पकड़कर (स्वामी विवेकानन्द के) कुछ भक्त फुटबाल खेलने लगे। और विवेकानन्द के भक्तों का दूसरा दल विवेकानन्दजी की आध्यात्मिक पुस्तकें एवं गीता पढ़ते थे। सुभाष बोस से भी उन्होंने पूछा। आप क्या करेंगे, फुटबाल खेलेंगे या गीता पढ़ेंगे। सुभाष ने कहा, दोनों करूंगा। सो कैसे? तो उन्होंने कहा विवेकानन्द जो अमेरीका गया वह फुटबाल का टूर्नामेंट खेलने नहीं गया था। वह वहां अध्यात्म का उपदेश करने के लिए गया था। विवेकानन्द अध्यात्म का प्रचारक है। स्वामी विवेकानन्दजी के आध्यात्मिक ग्रंथों को पढ़ेंगे, गीता को जरूर पढ़ेंगे और साथ में फुटबाल भी खेलेंगे। पर विलक्षण

ढंग से खेलेंगे। कैसा फुटबाल खेलोगे? अरविन्दजी के युगान्तर का मूल्य छपा होता था—युगान्तर मूल्य फिरंगीर काटा मुण्डु। युगान्तर का मूल्य फिरंगी का कटा हुआ सिर। तो फिरंगी के कटे हुए मुण्ड से हम फुटबाल खेलेंगे।

पुनः बाल्यावस्था से गीताध्यायी—महासंग्रामी नेताजी सुभाषचन्द्र कांग्रेस के नेता के हिसाब से कारागार में सहकर्मी तरुण गणों को नित्य गीता पाठ के लिए प्रवर्तना देते हैं। पुनः आजाद हिन्द फौज के महानायक रूप में रणक्षेत्र में बमवर्षण के बीच में पॉकेट में एक छोटी गीता, माता कालिका का चित्र एवं तुलसी मालिका। खुदीराम, कन्हाईलाल, विनय-बादल-दिनेश प्रफुल्ल प्रभृति दधीचि के दल जेल में गीता का नित्यपाठ करते थे। अवेस्ता, बाइबिल, कुरान त्रिपिटक आदि। इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से देश के राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में मरण पण सैनिकों को प्रबुद्ध किया या नहीं, नहीं जानता। लेकिन इतना बोलता हूं कि गीता सिर्फ धर्मग्रंथ नहीं है—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा चतुवर्ग तथा सामग्रिक जीवन पथ का समयसारिणी तथा टाइम-टेबल सबल पथ के यात्रियों का अपरिहार्य ग्रंथ है।

इन बातों को जयप्रकाशजी ने सुना तो जयप्रकाश नारायण चमत्कृत हो गए। गीता में इतनी शक्ति है। लोगों को इतना बल देती है। वह बहुत प्रभावित हुआ। कालेज में जाते हुए गीता साथ ले जाते। जब कोई पीरियड खाली होता तो उसमें गीता पढ़ते। अपने साथियों को पढ़ाते। गीता का जादू जयप्रकाश के मन पर काम करने लगा। उन्होंने देखा तिलक के हाथ में गीता, क्रान्तिकारी अरविन्द के हाथ में गीता, बाद में देखा अहिंसक शान्तिवादी-शांतिकामी गांधी और विनोबाजी के हात में गीता।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में गरमदल के लब्धप्रतिष्ठ नेता बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीय आन्दोलन को दिशा देने के लिए कर्मयोग शास्त्र की रचना की तथा गीता के सन्देश को जनसाधारण में पहुँचाने के उद्देश्य से गणेशोत्सव और शिवाजी महोत्सव को महाराष्ट्र में पुनर्जीवित किया। उन्होंने कहा कि—किसी समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए आततायी पुरुष का विनाश करने से अहिंसा परमो धर्मः की नीति की उपेक्षा नहीं होती। जब देश पराधीन हो तो स्वराज्य के लिए सचेष्ट होना ही गीता के कर्मयोग में बताये गये कर्तव्य की पूर्ति है। कर्म का राष्ट्रीय फल स्वराज्य है। अहिंसा, सत्य, दया आदि धर्म हैं, किन्तु पूर्णतया निरपेक्ष नहीं हैं, परिस्थिति सापेक्ष हैं, समय आने पर इनमें भी कर्तव्य-अकर्तव्य, धर्म-अधर्म का विचार करना पड़ता है। तिलक का मानना था कि यद्यपि श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार व्यक्ति ज्ञान और भक्तियोग से भी ईश्वर को प्राप्त कर सकता है, किन्तु फिर भी कर्म की प्रधानता है। श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है, मुझे तीनों लोकों से कुछ नहीं चाहिए। फिर भी मैं कर्म करता हूं, क्योंकि यदि मैं कर्म नहीं

करूंगा, तो जगत् नष्ट हो जाएगा। इसके आधार पर तिलक ने कहा, यदि मनुष्य ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है, तो उसे जगत् के हित को ध्यान में रखते हुए निरन्तर कर्म करते रहना चाहिए। इस प्रकार तिलक ने जनता के सामने कर्म का महत्त्व रखा, ताकि वह देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर सके। उनका मानना था कि भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति तथा आधुनिक भारत का निर्माण कर्म के आधार पर ही सम्भव है। निश्चित यह तिलक की महान देन थी।

श्री अरविन्द ने संघर्ष की अनिवार्यता पर बल देते हुए कहा कि युद्ध मनुष्य की नियति और संघर्ष मनुष्य का स्वभाव और कर्म है। इस संसार में जो कुछ भी नवीनता है, वह संघर्ष का ही परिणाम है। इस सृष्टि में संहार के बिना कोई भी निर्माण कार्य सम्भव नहीं है। अहिंसा के जिस सिद्धान्त को सर्वोत्तम धर्म कहकर संघर्ष के क्षेत्र में उपस्थित किया जाता है उसका सर्वथा पालन असम्भव है। मनुष्य को एक योद्धा के रूप में स्वभाव और कर्तव्य को मानकर उसका आकलन करना होगा। युद्ध का एक नैतिक और वीरोचित भाव है—दीन-दुर्बलों एवं पीड़ितों की रक्षा तथा जगत् में न्याय और धर्म की स्थापना।' जिस समाज में मनुष्य रहता है और पलता है, उसकी रक्षा करना और उसके लिए संघर्ष करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। उनकी दृष्टि में राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये हिंसा का मार्ग भी अपना सकता है। इसके लिए उन्होंने गीता के क्षात्र धर्म का अनुसरण उचित माना है।

राजनीति में अध्यात्म का समन्वय करने वाले गीता के अनन्य उपासक एवं भारतीय स्वाधीनता संग्राम के स्तम्भ महात्मा गाँधी ने गीता को माता की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि गीता का मूल बिन्दु अनासक्ति है तथा ज्ञान, भक्ति और कर्म इसके चारों ओर घूमते हैं। इसकी प्राप्ति सत्य और अहिंसा के द्वारा ही की जा सकती है। गाँधीजी ने गीता की शिक्षाओं का मुख्य रूप से उपयोग भारतीय जन-सामान्य को कर्मशील बनाने के लिए किया। भारत की स्वतन्त्रता के लिए गाँधी द्वारा चलाये गये समस्त आन्दोलनों पर गीता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। असहयोग आन्दोलन गीता के निष्काम कर्मयोग का जीवन्त दृष्टान्त है। अपनी शारीरिक सुख-सुविधा और व्यक्तिगत स्वार्थों की चिन्ता किये बिना किसी महान उद्देश्य के प्रति अपनी समस्त ऊर्जा और शक्ति-सक्रियता को समर्पित करना गाँधी के असहयोग का मूल तत्त्व है, इसकी प्रेरणा उन्हें श्रीमद्भगवद्गीता से मिली हुई प्रतीत होती है। क्योंकि—

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसंगशस्त्रेण दृढेन छित्वा।। 15/3, गीता

गीता के पन्द्रहवें अध्याय का यह श्लोक उनके आन्दोलन का स्रोत था, ऐसा प्रतीत होता है। उन्होंने इस बात का अनुभव किया कि जिस प्रकार इन्द्रियों का

विषयों के साथ असहयोग करने से विषय स्वयं निवृत्त हो जाते हैं, उसी प्रकार यदि अंग्रेजों के साथ असहयोग का मार्ग अपनाया जाय, तो अंग्रेजी सत्ता स्वयं धराशायी हो जायेगी। गाँधीजी का यह प्रयोग आंशिक सफल भी रहा। उन्होंने गीता के यज्ञ को श्रम और चरखा से जोड़कर लोगों को समष्टि कल्याण के लिए कर्म करने की प्रेरणा दी। उस समय भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन पर गीता का इतना प्रभाव था कि पूज्य विनोबाजी जेल में भी सत्याग्रही कैदियों को गीता का उपदेश दिया करते थे। विनोबा का भूदान, सम्पत्ति दान, ग्रामदान यज्ञ जिसमें स्वामित्व के दान की बात समष्टि कल्याण के लिए कही गयी थी और इसका प्रभाव अत्यन्त व्यापक था, यह गीता के यज्ञार्थ कर्म की ही देन थी।

जयप्रकाशजी-तिलकजी, अरविन्दजी एवं गांधीजी तीनों से प्रभावित हुए। फिर धीरे-धीरे विनोबाजी के प्रभाव में आ गए। विनोबाजी के गीता प्रवचन से प्रभावित हुए। उन्होंने व्रत बना लिया मैं प्रतिदिन स्नान करके गीता-पाठ करके ही कुछ खान-पान करूंगा। और वे जीवन के अन्तिम दिन तक गीतापाठ करते रहे और धीरे-धीरे जाने-अनजाने गीता के निष्काम कर्मयोग की छाप उनके मन पर पड़ गई। जिसके कारण एक व्यक्ति पिछले सैकड़ों वर्षों के इतिहास में हुआ जिसने अपने पेट के लिए, अपने पद के लिए अपने परिवार के लिए, प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए कुछ नहीं किया। सब कुछ समाज के लिए किया। ये निष्काम कर्मयोगी व्यक्ति कैसे बना? गीता के चमत्कार से बना है। गीता ने बड़ा जादू किया है। गीता ने मरे पड़े हुए लोगों को नया जीवन दिया है। गीता ने हताश पड़े राष्ट्र को नव चेतना दी है।

भारत के महापुरुष जापान गए थे। वहां जापान का एक नौजवान 'तारपीडो' पनडुब्बी चालक था। तारपीडो चलाने के लिए जा रहा था। उन्होंने कहा तारपीडो चालक तुम तारपीडो चलाने जा रहे हो। हां, जा रहा हूं। जापान के तारपीडो ऐसे बने थे जिनमें एक व्यक्ति का बलिदान देना जरूरी था। अमेरीका के और जर्मन के तारपीडो ऐसे थे जिसमें चालक बच जाता था। तारपीडो छूटता था जहाज को फाड़ देता था, पनडुब्बी फूटती थी, जहाज को फाड़ देती थी लेकिन चालक बच जाता था। लेकिन जापान के तारपीडो में चालक को अपना बलिदान देना पड़ता था। बढ़िया वस्त्र पहन करके, सुन्दर फूलमालाएं पहन करके, घर वालों से प्रेम से मिलकर सबसे आशीर्वाद लेकर जा रहा था। भारत के एक महापुरुष ने पूछा—कहां जा रहा है? उसने कहा मैं तारपीडो चलाने जा रहा हूं। इसका मतलब स्पष्ट है आज आप लौट करके आने वाले नहीं हैं। आज आपकी मृत्यु निश्चित है। फिर भी आप इतने प्रसन्न क्यों हैं? इतने बढ़िया कपड़े क्यों पहने हैं? इतनी फूलमालाएं क्यों पहनी है? इतने आनन्दित क्यों नजर आ रहे हैं? उस नौजवान ने चेहरे पर थोड़ा नफरत का

भाव लाते हुए कहा—क्या श्रीमान् मैं जान सकता हूं आप कौन देश से आए हैं? मैं भारत से आया हूं। उसने कहा—ओह! आप भगवान् कृष्ण के देश से आए हैं? उसने अपनी जेब से भगवद्गीता की पुस्तक निकाली। यह अमरता का ताबीज हमारे पास है। जब तक मैं इसको जानता हूं, मृत्यु नाम की वस्तु नहीं जानता।

इंडोनेशिया की स्वाधीनता के अवसर पर लोगों ने हाथ में गीता लेकर स्वाधीनता की रक्षा की शपथ ली। राष्ट्रपति सुकर्ण ने कहा कि हममें अर्जुन का बल और कृष्ण की बुद्धि है। बाली द्वीप के लोगों ने भगवद्गीता को हाथ में लेकर स्वाधीनता की शपथ ली। आचार्य कृष्णकान्त शास्त्री कहते हैं—ब्रिटिश सेना के पहले हिन्दू पुरोहित होने के नाते मैंने देखा है कि ब्रिटिश सेना को गीता का उपदेश देने से उनका मनोबल बढ़ा है तथा अब सेना युद्ध के मैदान में फल की चिंता किए बिना अपने कर्तव्य का पालन कर रही है।

जर्मन कुमार की कथा—जोजेफ बर्बर नाम के विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय धर्म नियम (कानून) के महान् विशेषज्ञ हैं। हिटलर उनका परामर्श लिया करता था। वे कई वर्ष भारत में रहे। अपने प्रथम समागम में सन् 1950 के आसपास मैंने (पंडित भगवद्यत) उनसे पूछा—प्रिय महाशय! आप भारतीय बातों की ओर कैसे झुके। उत्तर में बोले—बर्लिन पर विमानों द्वारा बम गिर रहे थे। कारणवश मैं भूमिगत रक्षागृह के कोने में खड़ा था। विमान लौट गए। सायरन बजे। रक्षागृह के अन्दर ठहरे व्यक्ति दूसरे स्थान पर जाने के लिए दौड़ रहे थे। उस बम गिरने के स्थान के पास ही एक युवती देर से खड़ी थी। वह दौड़ी नहीं। मैं आश्चर्यचकित उसके पास पहुंचा। पूछा—आप जाती नहीं हैं? वह बोली, नहीं। क्यों? लोगों की गति देख रही हूं। क्या तुम्हारे मन में भय नहीं है? युवती बोली—अणु मात्र भी नहीं। मैंने और अधिक आश्चर्य से कहा, क्यों? उसने शांत भाव से उत्तर दिया—महाशय! मैंने गीता पढ़ी है। मृत्यु और जीवन समान हैं। मेरे रोंगटे खड़े थे। मैं सोच नहीं सका कि ग्रंथ पढ़ने का इस पर ऐसा प्रभाव हुआ। बस उसी क्षण से मेरे हृदय में आर्य संस्कृति के प्रति श्रद्धा जम गई। मैं गीता पढ़ता हूं। ।। इति।।

चेकोस्लोवाकिया के प्रथम राष्ट्रपति मैसरिक का प्रेरणास्पद संस्मरण—सन् 1930 की बात होगी। भारतीयों का एक दल योरप भ्रमण हेतु गया था। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् चेकोस्लोवाकिया, एक नया राष्ट्र, योरप में बना था। योरोप के अन्य देशों का भ्रमण करते-करते जब यह दल चेकोस्लोवाकिया देश का संग्रहालय देखने के लिए पहुंचा तो एक बड़े हॉल के मध्य एक सुन्दर अलमारी में स्वर्ण मंडित एक पुस्तक देखकर स्तम्भित हुआ। पूछने पर कि इतने बड़े हॉल के बीचोबीच एक अलमारी में केवल एक ही पुस्तक क्यों रखी गई है, गाइड ने एक मनोरंजक तथा प्रेरणास्पद कथा सुनाई। उसने कहा—हमारे गणतंत्र

देश के प्रथम राष्ट्रपति जनरल मैसरिक महोदय की स्मृति स्वरूप यह पुस्तक रखी गई है। सन् 1917 के जर्मन युद्ध में जनरल मैसरिक महोदय रूस में बंदी बना लिए गए थे और उन्हें मृत्युदंड दिया गया।

दो सप्ताह बाद उन्हें फांसी पर झूलना था। अतः वे मृत्युदण्ड पाए हुए कैदियों की कोठरी में खिन्न और चिंतित मन से गिन-गिनकर अपने दिन काट रहे थे। उनकी काल कोठरी की बगल में मृत्युदण्ड प्राप्त एक अन्य फ्रेंच जनरल मस्ती और मौज में गाते-बजाते रह रहे थे जैसे उन्हें पता ही न हो कि दो हफ्ते बाद उन्हें संसार छोड़ देना है। राष्ट्रपति महोदय ने उनसे इस विशेष मस्ती का कारण पूछा। फ्रेंच जनरल का जवाब था—'यह शरीर तो नाशवान है अतः फिर नाशवान वस्तु के लिए शोक और क्या मोह।' पर यह भावना और तदनुसार आचरण कैसे सम्भव बने, पुनः प्रश्न हुआ। साथी ने एक पुस्तक भेंट करते हुए कहा—'मुझे इस ग्रंथ से शोक-मोह निवारण की प्रेरणा प्राप्त हुई, इसे आप भी देखें और निर्भय बनकर प्रसन्न मन रहें।' मैसरिक महोदय ने उस पुस्तक का अध्ययन और मनन किया और उनके विचारों में गहरा परिवर्तन हुआ। दैवयोग से उन्हीं दिनों रूस में अक्टूबर क्रान्ति सफल हुई और जारशाही का तख्ता उलट गया। फलस्वरूप मृत्युदण्ड प्राप्त सब बन्दी जेलों से छोड़ दिए गए और युद्ध के बाद जब हमारा नया राष्ट्र बना और इसके प्रथम राष्ट्रपति जनरल मैसरिक चुने गए तो उन्होंने उस भेंट की हुई पुस्तक को जिसके अध्ययन और मनन से उन्हें शान्ति और संतोष प्राप्त हुआ था, अपने पिछले बन्दी जीवन की स्मृति स्वरूप राष्ट्र को भेंट कर दिया। प्रतिनिधि दल उस पुस्तक को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। पश्चिम के हजारों मील दूर विदेशी राष्ट्र में इतना उच्च सम्मान प्राप्त वह पुस्तक उन्हीं के भारत देश की श्रीमद्भगवद्गीता थी।

इस प्रकार गीता ने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को ही नहीं विश्व के अनेक देशों के स्वाधीनता आन्दोलनों को अपना अमर बल प्रदान किया है और भविष्य में करती रहेगी।

पर दुर्भाग्य से 1947 में सच्चे अर्थ में स्वराज्य की स्थापना न होने से वह संघर्ष आज भी जारी है। न केवल राजनीतिक स्तर पर वरन् इसके अतिरिक्त सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदि सभी स्तरों पर जारी है। जो भारत को पुनः स्व में प्रतिष्ठित करके ही विराम लेगा। **यह गीता का ही प्रताप है। गीता की प्रेरणा है। गीता के निष्काम कर्मयोग, आत्मा की अमरता, स्थितप्रज्ञ दर्शन और आत्मसमर्पण योग का ही यह प्रभाव है कि हम कभी थके नहीं, हार मानी नहीं। सदैव कर्तव्य पथ, विजयपथ पर अग्रसर रहे हैं और रहेंगे।**

आज की एक विडम्बना यह भी है कि प्रायः सभी विप्लवी बंधुओं ने गीता से प्रेरणा ग्रहण कर स्वाधीनता आन्दोलन में अपना अवदान दिया था उसे अस्वीकारा जा रहा है, उन्हें आतंकी बताया जा रहा है। इतिहासविद् डॉ. सतीशचन्द्र मितल कहते है 'प्रायः सभी क्रान्तिकारी सुशिक्षित, सुसंस्कारित तथा उच्च भावनाओं से प्रेरित थे। सभी को देश समाज, धर्म तथा संस्कृति का सूक्ष्म ज्ञान था। ये क्रान्तिकारी थे पर हिंसावादी न थे और न ही आतंकवादी। इनका संघर्ष न बड़े-बड़े प्रस्ताव पारित करने तक सीमित था या विशाल सभाओं में भाषणों अथवा समाचार पत्रों में मन्तव्यों तक सीमित था, बल्कि इनका संघर्ष सड़कों की तंग गलियों तथा संकरे मार्गों पर था जिनके पीछे पुलिस तथा गुप्तचर सदैव लगे रहते थे। देश के सैकड़ों नवयुवकों ने वेदों, उपनिषदों, गीता के सन्देशों को अपनी आत्महुति देकर प्रस्तुत किया था। इनमें से किसी की इच्छा सम्मान या पद प्राप्त करने की नहीं थी बल्कि बलिदान होते समय निष्काम कर्मवाद तथा पुनर्जन्म लेकर पुनः भारत मां की सेवा करने की थी।' और बड़े मजे की बात जो वास्तव में आतंकवादी हैं उन्हें हम अल्पसंख्यक मानकर हम मानवतावाद और सेकुलर के पक्षधर बनकर उनकी सुरक्षा और समर्थन में खड़े है। चूंकि वह अल्पसंख्यक है, मुसलमान है, असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है अतः उसका आतंक का सहारा लेना स्वाभाविक है ऐसी विचित्र स्थिति देश में चल रही है।

वास्तव में अल्पसंख्यक समाज कोई है तो वह पारसी समाज है। डॉ. किशोरी लाल व्यास कहते हैं 'ये 1200 वर्ष पूर्व गुजरात आये, वहां उन्होंने शरण प्राप्त की। उन्होंने अपना मूल धर्म (सूर्य-पूजा एवं अग्नि पूजा) जीवित रखा। पर न पारसियों ने कभी किसी को अपने धर्म में मिलाने, अपनी संख्या बढ़ाने का उपक्रम किया, न स्वयं किसी धर्म में मिले। उन्होंने अपना अस्तित्व सुरक्षित व सहज रूप से बनाये रखा। पारसी लोगों ने बहुत से हिन्दू आचार स्वीकार किये—जैसे तिलक लगाना, स्वस्तिक मण्डन, नारियल देना आदि, पर उनका धर्म अपना ही रहा। पारसी सबसे कम संख्या में हैं, लेकिन उन्हें अपना धर्म कभी खतरे में नजर नहीं आया, उन्होंने दूसरों के मन्दिर-मूर्तियां कभी ध्वस्त नहीं की। कभी आतंकवादी गतिविधियों में, हत्याओं, बलात्कार, लूटपाट में भाग नहीं लिया। पारसियों ने देश को बड़े-बड़े देशभक्त दिये। मैडम-कामा, दादाभाई नौरोजी, डॉ. होमी जहांगीर भाभा, जमशेदजी नसरवानजी टाटा, जनरल मानेकशा, गोदरेज आदि। हिन्दुओं को पारसी पर गर्व है। वे सदैव देशभक्ति की मिसाल हैं। विशाल हिन्दू समुद्र में मिलकर भी वे अलग रहे, अलग रहकर भी देश की मुख्यधारा में मिले रहे।' स्पष्ट है इस्लाम की दुष्ट साम्राज्यवादी नीति को तथा विकृत जीवन दर्शन को समझकर

और 'विनाशाय च दुष्कृताम्' गीता दर्शन को अपनाकर ही इनसे निपटा जा सकता है। इस दृष्टि से भी संघर्ष भी जारी रहेगा।

देश की स्वाधीनता में दोनों धाराओं का अवदान है। पर दुर्भाग्य से संहिस धारा के अवदान को अस्वीकारा जा रहा है। अहिंस धारा के संघर्ष को भी एक राजनैतिक पार्टी का संघर्ष बतलाकर पढ़ाया जा रहा है और इसमें भी कुछ गिने-चुने व्यक्तियों के प्रयासों को ही बढ़ा-चढ़ा कर दिया गया है। इससे युवा पीढ़ी को न ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी मिली, न ही स्वाधीनता के लिए किये गये महान संघर्षों की अनुभूति हुई और न ही भविष्य में राष्ट्र को सुदृढ़ करने के लिए कोई उत्साह ही पैदा हुआ। इस स्थिति से उबारने के लिए प्रबुद्ध निःपक्ष इतिहासविदों को आगे आना चाहिए।

यदि मुझसे पूछा जाए कि किस गगन के नीचे मानव मन ने ऊंची से ऊंची प्रतिभाओं का विकास किया है, जीवन की बड़ी से बड़ी समस्याओं पर विचार कर ऐसे ऊंचे हल ढूंढ़े हैं कि जो प्लेटो तथा काण्ट का अध्ययन करने वाले विद्वानों के ध्यान को भी आकर्षित करने का अधिकार रखते हैं तो वह महान् देश, भारत है। अगर मैं अपने से पूछूं कि हम—यूरोप के वासी—जो अब तक केवल ग्रीक, रोमन तथा यहूदी विचारों में पलते रहे, किस साहित्य से वह प्रेरणा ले सकते हैं जो हमारे भीतरी जीवन का परिशोधन करे, उसे उन्नति के पथ पर अग्रसर करे, व्यापक बनाये, विश्वजनीन बनाये, सही अर्थों में मानवीय बनाये जिससे हमारे इस पार्थिव जीवन को ही नहीं हमारी सनातन आत्मा को प्रेरणा मिले, तो वह भारत देश है।

—मैक्समूलर

× × ×

भारत की पराधीनता के काल में भी लंदन के ट्रैफल्गर स्क्वेयर पर खड़े होकर दोनों भुजा उठाकर मैक्समूलर कहा करता था, 'भारत सारे संसार का आध्यात्मिक पूर्वज है। जिस जाति में राम और कृष्ण पैदा हुए हैं उसे गुलाम बनाना सारी मानव जाति के साथ घोर अन्याय करना है।

वैज्ञानिक जगत् और गीता

राबर्ट ओपेनहाइमर—यह एक अत्यन्त विस्मयकारी तथ्य है कि 16 जुलाई, 1945 को अमेरीका के न्यूमेक्सिको रेगिस्तान में प्रथम अणुबम का परीक्षण किया जा रहा था, तो आविष्कारक राबर्ट ओपेनहाइमर ने ज्योंही आकाश में अनन्त सूर्यों के प्रकाश के समान प्रचण्ड अग्नि ज्वालाओं को बम के विस्फोट के साथ ही देखा तो उन्हें गीता के विराट् रूप के दर्शन की स्मृति हो आई और वे जेब से गीता निकालकर एकादश अध्याय का श्लोक गाने लगे जबकि ईसाई होने के नाते बाइबिल का वचन स्मृति में आना चाहिए था पर उन्हें गीता का श्लोक स्मरण आता है—

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः।। 11/12, गीता

आकाश में हजार सूर्यों के एक साथ उदय होने से जो प्रकाश उत्पन्न होवे वह कदाचित् विश्वरूप परमात्मा के तेज सदृश हो।

शीघ्र ही इस ज्योति का रूप विकराल हो गया—मानो समस्त आकाश—पाताल को अपनी दैत्याकार लपटों में आवृत कर लेगी। ओपेनहाइमर को लगा कि मैं काल रूप में परिणत हो गया और उन्हें पुनः गीता का उद्घोष याद आ गया—

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः। 11/32, गीता

लोको का नाश करने वाला प्रवृद्ध महाकाल हू मैं। इस समय लोकों को नष्ट करने को प्रवृत्त हुआ हूं।

अणुबम के इस भयावह काल रूप को देखकर उन्हें ग्लानि हुई कि राजनीतिज्ञ लोग इसका दुरुपयोग करेंगे। अतः इसका उन्होंने विरोध किया। और तुरन्त लार्ड एलोमोस्ट प्रोजक्ट जहां का वह डायरेक्टर था वहां से त्यागपत्र देकर वह रामकृष्ण मिशन में चला गया। गीतापाठ करता रहा और सन् 1963-1964 में उन्होंने शरीर छोड़ा।

इस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक भी गीता के महत्त्व को स्वीकारते हैं, क्योंकि इसमें प्राचीन धार्मिक रूढियों तथा कर्मकाण्ड का लेशमात्र भी नहीं है। वैज्ञानिक ज्ञान की खोज के लिए सूक्ष्म परमाणु से लेकर विशालकाय तारों की ओर उन्मुख

होते हैं, उसकी झलक उन्हें गीता में भी दिखाई देती है। यही कारण है कि अनेक वैज्ञानिक सुबह और शाम गीता के श्लोकों पर मनन और चिन्तन करते हैं तथा कुछ तो रात में उसे बगल में लेकर सोते भी हैं। यही कारण है कि नोबेल पुरस्कार प्राप्त जीवविज्ञानी अलडास हक्सले गीता का अनुवाद करते हैं और गीता को सच्चे अर्थ में 'शाश्वत दर्शन' की संज्ञा दी है। स्वामी प्रणवानन्द की लिखित गीता की भूमिका में हक्सले लिखते हैं— गीता शाश्वत दर्शन के कभी भी रचे गए सबसे स्पष्ट और सबसे सर्वाङ्ग सम्पूर्ण सारांशों में एक है। इसलिए न केवल भारतीयों के लिए, अपितु सम्पूर्ण मानव जाति के लिए इसका स्थाई मूल्य है। सम्भवतः भगवद्गीता शाश्वत दर्शन का सबसे अच्छा सुसंगत आध्यात्मिक विवरण है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक हुम्बोल्ट ने कहा था संसार में जितने भी ग्रंथ हैं, उनमें भगवद्गीता जैसे सूक्ष्म और उन्नत विचार कहीं नहीं मिलते। स्वदेश में गणितज्ञ नारलिकर ने गीता कंठस्थ की है। आज पश्चिम का विज्ञान तीन कारणों से भारतीय तत्त्वज्ञान की ओर आकृष्ट हो रहा है—(1) संसार की व्याख्या विज्ञान के द्वारा असमर्थ पाकर (2) नैतिक कारण जिससे विज्ञान का दुरुपयोग न हो (3) भारतीय तत्त्वदर्शन से परिचित होने से।

ब्रिटेन के वैज्ञानिक डॉ. जॉन बर्डन सेंटरसन हाल्डेन ने 1922 में कैंब्रिज विश्वविद्यालय में शरीर के अंदर होने वाली रासायनिक क्रियाओं पर अनुसंधान कर पूरे संसार में ख्याति प्राप्त की। इस अनुसंधान के बाद उनकी दिलचस्पी आध्यात्मिक विषयों की ओर बढ़ने लगी। उन्होंने सोचा कि अब धर्म और आध्यात्मिक रहस्यों का अध्ययन कर लें। बस फिर क्या था, उन्होंने कुछ ही समय में लग कर अनेक हिन्दू धर्मग्रंथों का अध्ययन कर डाला। सबसे अंत में वह गीता पढ़ने लगे। जैसे-जैसे वह गीता का एकाग्रता से मनन करते गए, वैसे-वैसे उनका मोह भौतिक वस्तुओं से हटता गया। उन्हें यह अहसास होता गया कि भौतिकवादी साधनों से कभी भी मानव को सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता। 1951 में वह अपनी पत्नी के साथ भारत आए। यहां घूमते हुए वह भुवनेश्वर पहुंचे। वहां अनेक धर्म प्रचारक भी मौजूद थे। अचानक ब्रिटेन के एक धर्म प्रचारक ने उनसे पूछा, 'आप एक अंग्रेज होते हुए भी गीता को सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ क्यों मानते हैं?' उस धर्म प्रचारक की बात सुनकर हाल्डेन शांत भाव से बोले, 'गीता निरंतर निष्काम कर्म करते रहने की प्रेरणा देकर आलसी लोगों को भी कर्म से जोड़ती है। वह किसी संप्रदाय या धर्म का नहीं, मानव मात्र के कल्याण का संदेश देती है। इसलिए मुझे गीता ने बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। मैं वैज्ञानिक होकर भी इसे अपने काम के लिए उपयोगी मानता हूं। दूसरे क्षेत्रों के लोगों के लिए भी यह उपयोगी है।' ब्रिटेन के धर्म प्रचारक हाल्डेन की यह बात सुनकर बहुत प्रभावित हुए।

बर्गसाँ—रावलपिंडी में रहने वाला व्यक्ति विदेश गया तो बर्गसाँ से मिलने गया। बर्गसाँ ने भारत से आए हुए व्यक्ति का स्वागत किया और कहा मुझे संस्कृत में गीता का मूल सुनाओ। उसने कहा उसकी पढ़ाई का माध्यम उर्दू था। अतः वह संस्कृत नहीं जानता है इसलिए वह संस्कृत में गीता का मूल नहीं सुना सकता है। अगर आप चाहें तो उसका अनुवाद अंग्रेजी में सुना सकता हूं। तब बर्गसाँ उसे अपने कमरे में ले गया जिसमें एक सोने की पेटिका में रखी हुई थी संस्कृत की मूल गीता। उसने कहा—अनुवादों से तो मेरी लाइब्रेरी भरी पड़ी है। मैं तो संस्कृत में ही गीता का मूल सुनना चाहता हूं। और फिर बर्गसाँ ने कहा अब मुझे समझ में आया आज भारत गुलाम क्यों है? गीता को भुला देने के कारण अन्यथा गीता का देश गुलाम नहीं हो सकता।

सुनीता विलियम्स जो भारत की पुत्री हैं, गुजरात की बेटी हैं, पर अब वह अमेरीका की नागरिक हैं। जब उसने अन्तरिक्ष में वैज्ञानिक शोध के लिए कई माह वहां व्यतीत किया तो वह अपने साथ भगवद्गीता ले जाती है।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अबुल कलाम ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अग्नि की उड़ान' में लिखा है—वे 'गीता' से बहुत प्रभावित हैं। वे निरन्तर विशेषतया कठिन परिस्थिति में गीता का अध्ययन करने पर संतुष्टि लाभ करते हैं और इससे उन्हें समस्या का समाधान प्राप्त हो जाता है।

पंडित नेहरूजी जब आइंस्टीन से मिलने गए तो उन्होंने आश्चर्यचकित होकर देखा उनकी टेबुल पर गीता रखी है, जिसका वे नियमित स्वाध्याय करते हैं।

विज्ञान और प्रविधि के विकास के साथ हो सकता है कि बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण तक सारा संसार अमरीका के प्रभाव क्षेत्र में आ जाए। किन्तु इक्कीसवीं शती में, जब विज्ञान का स्थान अध्यात्म लेगा और तकनीक का स्थान धर्म लेगा तब भारत ही सारी मानव-जाति का आध्यात्मिक गुरु होगा।

—ब्रिटिश इतिहासकार डॉ. अरनाल्ड टोयनबी

गीता का जीवन के विविध क्षेत्रों में अवदान

कुशल प्रशासन बनने में गीता का अवदान

एक बार स्वामी रंगानाथानन्दजी सन् 1949 में हैदराबाद में राज्य के सैन्य-प्रशासक जनरल जे.एन. चौधरी से भेंट करने गए। वहां स्वामीजी ने देखा उनकी मेज पर गीता की एक प्रति रखी है। तब स्वामीजी ने जनरल चौधरी से पूछा क्या आप गीता पढ़ते हैं? तब उन्होंने थके स्वर में उत्तर दिया, 'हां', जब कभी मैं थकान महसूस करता हूं और कुछ शान्ति पाना चाहता हूं तब मैं गीता की कुछ पंक्तियां पढ़ लेता हूं। तब स्वामीजी ने कहा इसका यह उद्देश्य तो नहीं है। इस टिप्पणी पर विस्मित होकर उन्होंने पूछा, 'क्या आपका तात्पर्य यह है कि इस पुस्तक का हमें थोड़ी-सी मानसिक शान्ति देने के अलावा और भी कोई उपयोग है? तब स्वामीजी ने कहा—हां, यह ग्रंथ मात्र मानसिक शान्ति देने के लिए नहीं है, यह लोगों की सेवा करने हेतु आपमें शक्ति संचार करने के लिए है, आपको एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए है। इसमें जीवन तथा कर्म का एक सर्वांगीण दर्शन है।

जनरल चौधरी आश्चर्यचकित रह गए और मुझसे बारम्बार पूछने लगे, तो क्या आपका तात्पर्य यह है कि इस प्रान्त के सैन्य-प्रशासक के रूप में मेरे लिए इसकी कोई प्रासंगिकता है? स्वामीजी ने कहा, ठीक ऐसा ही है। हमें इस बात को समझ लेना होगा कि सभी कर्मठ नर-नारियों, सभी उत्तरदायित्व वहन करने वाले लोगों को जीवन तथा कर्म के एक दर्शन की आवश्यकता होती है। गीता इसे 'योग' रूपी एक सहज शब्द के माध्यम से प्रस्तुत करती है। हमने अब तक इसे समझा नहीं है। गीता के चौथे अध्याय का पहला ही श्लोक लीजिये। श्रीकृष्ण वहां हमें बताते हैं, मैंने यह योग दर्शन उत्तरदायित्व वहन करने वालों को दिया था, ताकि इस दर्शन के द्वारा वे शक्तिमान होकर लोगों की सेवा, सुरक्षा तथा पोषण प्रदान कर सकें। इस ग्रंथ का यही उद्देश्य है। स्वामीजी ने इसी बात पर बारम्बार बल दिया और उन्होंने भी बारम्बार पूछा, 'क्या मैं इस प्रान्त के प्रशासक के रूप में एक अधिक कुशल व्यक्ति बनने के लिए इस पुस्तक से कुछ

सीख सकता हूं? स्वामीजी ने कहा, 'अवश्य, उत्तरदायित्व निभाने वाले सभी नर-नारियों को सर्वजन हिताय कार्य करने की प्रेरणा देना—यही तो इस पुस्तक का उद्देश्य है। यही तो इस पुस्तक का स्वभाव है, यह आपको सुलाने के लिए नहीं है। यह समाज के सभी लोगों की भलाई करने हेतु आपको वह परम मानवीय भाव तथा संकल्प देने के लिए है।

इससे जनरल चौधरी को गीता पर एक सम्यक् यथार्थ दृष्टि मिली, बड़े प्रसन्न हुए।

उद्धृत भगवद्गीता का सार्वजनीन संदेश, ले. स्वामी रंगानाथानन्द, पृष्ठ 2-3

अपराध शमन में गीता का अवदान

Every Saint has past. every sinner has future. प्रत्येक सज्जन का अतीत अच्छा था, तो आज वे साधु हैं, सज्जन हैं, प्रत्येक पापी के पास भविष्य है। यदि वह अपने आज को सुधार लेता है, वह साधु हो जाता है। जब हम अपनी त्रुटियों को स्वीकार कर उचित प्रायश्चित्त कर लेते हैं तो वह त्रुटि न रहकर विकास का साधन बन जाती है, विकास की सीढ़ी बन जाती है।

जब हम गिरते हैं तब भगवान् बार-बार हमें उठने का अवसर देते हैं। क्योंकि मनुष्य अपने मूल स्वरूप में दिव्य है, पर जब उस पर अज्ञान का, गलत मान्यता का, तथा जब गलत संग में पड़ते हैं तब जीवन में अपराध होने लगते हैं।

पर सत्संग के प्रभाव से मानव का मन बदलते ही, हृदय में परिवर्तन होते ही, बुद्धि सुधरते ही मानव पुनः साधु बन जाता है। गीता के चौथे अध्याय में भगवान कहते हैं—

अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि।। 4/36, गीता

यदि तू समस्त पापियों से अधिक पाप करने वाला भी है, तो भी (इस) ज्ञान रूप नाव के द्वारा तू ही सम्पूर्ण पाप (समुद्र) से भलीभांति तर जाएगा।

पुनः भगवान् नौवें अध्याय में कहते हैं—

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।। 9/30, गीता

यदि कोई अत्यन्त दुराचारी (मनुष्य) भी अनन्यचित्त होकर मुझको भजता है, तो वह साधु ही माना जाना चाहिए क्योंकि वह यथार्थ निश्चय करने वाला हो गया है।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। 9/31, गीता

वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है तथा चिरन्तन शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

चम्बल की घाटियों के डाकुओं को अपनी भूल का अहसास होने पर संत विनोबा भावे के सामने आत्मसमर्पण किया। विनोबा भावे ने उन्हें एक-एक प्रति मानस तथा गीता की भेंट में दी।

किरण बेदी ने भी तिहाड़ जेल में बच्चों में अपराध शमन के लिए गीता का सफल प्रयोग किया। पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्दजी महाराज का गीता का प्रवचन मृत्युदण्ड प्राप्त कैदियों के बीच में हुआ। परम पूज्य स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज का प्रवचन जेल में हुआ आदि-आदि। स्वयं मेरा प्रवचन जेल में कैदियों के बीच में हुआ।

चिकित्सा जगत् में गीता की महत्ता

यह एक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है कि मनुष्य जिस वस्तु का विचार करता रहता है वैसा ही बनता जाता है। इसे संस्कृत में कीट-भृंगी न्याय कहते हैं। जाल में फंसा हुआ कीड़ा भृंगी का ध्यान करते-करते भृंगी ही बन जाता है। भगवान् का चिन्तन करने से वह धीरे-धीरे भगवान् ही बनता जाता है और शैतान के चिन्तन से शैतान बन जाता है। भक्ति में भगवान् का निरन्तर ध्यान करने से भागवत् गुण भक्त में अपने आप आने लगते हैं। सेमिटिक परम्परा को छोड़कर प्रायः सभी धर्मों में भगवान् को सर्वश्रेष्ठ गुणों का प्रतीक माना गया है। इसलिए मानवता के गुण विकास के लिए भक्ति और उपासना का बहुत बड़ा महत्त्व है। निराशा का चिन्तन करने से निराशा ही मिलती है और आशावादी चिन्तक को आशा। केवल कल्पना मात्र के विष से भी लोग मरते देखे गए हैं और काल्पनिक चमत्कारी आशीर्वाद से बड़े-बड़े महारोगी स्वस्थ होते हुए देखे गए हैं। बहुत से श्रद्धा उपचारक बिना औषधि केवल मंत्र या विश्वास के बल पर इलाज करते हैं। मन्दिरों, मठों और आश्रमों में अनेक असाध्य रोगी औषधि विज्ञान से निराश होकर पहुंचते हैं। मानव की सीमित शक्ति के ऊपर सर्वशक्तिमान की सत्ता है। जिसको मानव नहीं बचा सकता उसको भगवान् बचा लेगा। और सचमुच इसका बहुत बड़ा चमत्कारी प्रभाव होता है। चाहे उसे भगवान् ठीक करते हैं या मनोवैज्ञानिक की भाषा में उसका मन ही उसे ठीक कर देता है। प्रभाव होता अवश्य है। दार्शनिक दृष्टि से देखें तो मन ही भगवान् की ज्योति है। वैकुण्ठवासी भगवान् सहायता करे या न करे अन्तर्यामी भगवान् तुरन्त ही कर देता है।

जब गांधीजी का अपना सगा पुत्र रामदास मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ था और सभी डॉक्टरों ने निराशाजनक जवाब दे दिया था, उस समय भी गांधीजी का राम पर विश्वास चलायमान नहीं हुआ था। कुछ डॉक्टरों ने कहा कि उसे अण्डा और मांस इत्यादि दिए बिना बचने की एक प्रतिशत भी सम्भावना नहीं है। गांधीजी ने आपद् धर्म का बहाना करके बच्चे के प्राण बचाने के लिए हिंसा को स्वीकार

नहीं किया। सारी रात राम का नाम स्मरण करते रहे और बच्चे के मुंह में गंगाजल डालते रहे। उनकी निष्ठा के चमत्कार से बच्चा सर्वथा निरोग हो गया।

प्रत्येक मानसिक चिकित्सालय में धर्म प्रचार एवं पूजा पाठ के लिए प्रावधान रखा जाता है क्योंकि जहां डॉक्टर हार जाते हैं वहां अध्यात्म अपना प्रभाव दिखाता है। बड़े-बड़े मानसिक चिकित्सकों का कथन है कि मानसिक रोगी का तीन-चौथाई उपचार तो भजन-पूजन, उपासना प्रणाली से ही हो जाता है। मात्र एक-चौथाई उपचार औषधियों से होता है।

भोगवादी देशों में जहां ईश्वर भक्ति एवं उपासना का उचित स्थान नहीं वहां मानसिक रोग एवं आत्महत्या के काण्ड सबसे अधिक होते हैं।

उद्योग, व्यवसाय-प्रबंधन जगत् और गीता

पाश्चात्य अर्थशास्त्र और मार्क्सवाद दोनों ही अर्थशास्त्र के व्यापार में नैतिकता का दखल नहीं स्वीकारते। दोनों तीन मान्यताओं को लेकर चलते हैं— मनुष्य जन्म से स्वार्थी है, जीवन का परम लक्ष्य अर्थ की प्राप्ति है और अर्थ के व्यापार में नैतिकता का दखल नहीं होना चाहिए। लार्ड काइनिस ने 1930 में कहा और एक शताब्दी तक हमें अपने-आपको और अन्यों को भी यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि अच्छाई ही बुराई है और बुराई ही अच्छाई है। क्योंकि बुराई ही परिणामकारक है अच्छाई नहीं। कुछ दिनों तक लोभ और लालच को हम लोग अपना भगवान् मानें। क्योंकि उसीके आधार पर हम गरीबी की अंधेरी सुरंग से बाहर निकलकर प्रकाश का दर्शन कर सकेंगे।

अतः व्यापार का, बाजार का, उद्योग का एक ही सिद्धान्त है मुनाफा, लाभ, लालच। जिसका निष्काम कर्म के साथ कोई मेल नहीं है। 80-90 के दशक तक लालच ही अच्छा है सिद्धान्त वाक्य था। पर अब एक-दो दशकों से स्थिति बदल गई है और कर्म का सिद्धान्त व्यावसायिक जगत् का, औद्योगिक जगत् का सूत्रवाक्य बनता जा रहा है। आज के दौर में गीता धार्मिक ग्रंथ ही नहीं रही, बल्कि कारोबारी महाग्रंथ का रूप ले चुकी है। गीता में मैनेजमेंट फार्मूलों से लेकर लीडरशिप के गुणों और बिजनैस के सूत्रों की भरमार है। यही वजह है कि देश ही नहीं विदेशों के दिग्गज प्रबंधन संस्थान भी गीता ज्ञान को अपनाने लगे हैं।

बहुत से बड़े-बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में, औद्योगिक प्रतिष्ठानों में विधिवत गीता की कक्षाएं लगती हैं ताकि सभी में मन-बुद्धि का संतुलन रहे, परस्पर आत्मीय भाव रहे। सभी प्रतिष्ठान अपने कार्य को, भगवान् का कार्य समझें। जब उसे अपना कार्य या भगवान् का कार्य समझेंगे तब कामचोरी का अवकाश नहीं रहता। उत्पादन और गुणवत्ता दोनों श्रेष्ठ होती है। कामगार आन्दोलन के

कारण उत्पादन में एक घण्टे का भी व्यवधान नहीं होता, यद्यपि कारखानों में अनेक यूनियनें कार्यरत होते हुए भी परस्पर सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। कारखानों में सहनाववतु सहनो भुनक्तु का मंत्र चरितार्थ है। मशीन को नहीं मनुष्य को महत्ता देते हैं। प्रबन्धक स्वयं को सम्पूर्ण का एक घटक मानते हैं। इससे कामगार एवं प्रबंधक का भेद तिरोहित हो जाता है। सामान्य कामगार भी सहजता से प्रबंध निदेशक से संवाद कर सकता है। कामगरों को उचित मेहनताना और बोनस भी प्राप्त होता है। परस्पर में सामूहिक कार्यक्रम एवं भोज भी होते हैं। इस प्रकार एक आत्मिक परिवेश और समष्टि भावना, समष्टि मन बन जाता है। जिसमें लाभ-हानि एवं संकट को साथ-साथ झेलने की एवं उबरने की भावना बन जाती है।

प्रथम जापान में इसका सफल प्रयोग हुआ है और अपने देश के भी कई व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अच्छी सफलता मिल रही है।

आज दुनिया की बड़ी से बड़ी कम्पनियों के सीईओ यानी मुख्य अधिशासी अधिकारी व तमाम वरिष्ठ प्रबंधक भगवद्गीता का व्याख्यान सुनने जमा हो रहे हैं। यहां तक कि कुछ ने तो भगवद्गीता पढ़ाने वालों से ट्यूशन लेना शुरू कर दिया है। जैसे कि जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी के सीईओ जैफ्री आर. इमैल्ट को एक शिक्षक घर पर भगवद्गीता पढ़ाने आता है ताकि वे अपनी कम्पनी में सही और संतुलित निर्णय ले सकें। अगर भगवद्गीता केवल धर्मशास्त्र के रूप में मानी जाती तो ऐसा सम्भव नहीं था कि अपने धर्म के प्रति कट्टर यहूदी और ईसाई उद्योगपति और अधिकारी अपने जीवन और व्यवसाय की समस्याओं का हल ढूंढ़ने के लिए भगवद्गीता का ज्ञान बटोर रहे होते।

इतना ही नहीं, दुनिया के श्रेष्ठतम प्रबंधकीय संस्थान जैसे हारवर्ड बिजनैस स्कूल, कैलोग स्कूल ऑफ बिजनैस, रॉस स्कूल ऑफ बिजनैस, वारटन बिजनैस स्कूल में भगवद्गीता का पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है। जब पूरी दुनिया में विभिन्न धर्मों के मानने वाले साधन सम्पन्न, उच्च पदासीन व ताकतवर लोग भगवद्गीता के ज्ञान को लेने को आतुर हैं और इस ज्ञान से अपने जीवन को सुधार रहे हैं।

गीता को वेद और उपनिषदों का निचोड़ माना जाता है। गीता ज्ञान का खजाना है। गीता को आत्मसात् करने वाला मैनेजर शायद ही कभी नाकामयाबी से घबराता है। वास्तव में गीता में हर वो ज्ञान है जो किसी भी मैनेजर के लिए जरूरी माना जाता है। दुनिया को सबसे बेहतरीन पेशेवर मैनेजर देने वाला संस्थान आई.आई.एम. भी समय-समय पर अपने छात्रों को गीता का कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग का पाठ पढ़ाता है।

दुनिया की कई कॉरपोरेट कम्पनियों में कर्मचारियों का नैतिक बल, नेतृत्व क्षमता, कार्यदक्षता, व्यक्तित्व निखारने के लिए गीता के सूत्रवाक्यों का जमकर

सहारा लिया जा रहा है। भारत में तो दफ्तर की दीवारों पर गीता के प्रेरणादायी सूत्रवाक्य खूब लिखे दिख जाते हैं।

भारत की सबसे बड़ी जीवन बीमा कम्पनी एल.आई.सी. का तो ध्येयवाक्य **योगक्षेमंवहाम्यहम्** ही गीता से उठाया हुआ है। इसी ध्येयवाक्य के साथ एल.आई.सी. आज भी बीमा क्षेत्र का अग्रणी बना हुआ है।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने बहुत ही थोड़े समय में बेहतर कार्यशैली और प्रबंधन के चलते अपनी साख कायम कर ली है। इसके पीछे भी कहीं न कहीं गीता का ज्ञान है। डी.एम.आर.सी. सम्भवत: पहला ऐसा संस्थान है जहां सेवा आरम्भ करने पर कर्मचारी को स्वामी विद्याप्रकाशानंद द्वारा लिखित 'गीता मकरंद' की एक प्रति पढ़ने के लिए दी जाती है। इसके अलावा दिल्ली मेट्रो समय-समय पर मोटिवेशन के वर्कशाप भी आयोजित करती है। इसमें गीता के मर्मज्ञों को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया जाता है। इस कवायद का सकारात्मक असर दिखा है। कर्मचारियों में टीम भावना और डेडलाइन के प्रति समर्पण है। भ्रष्टाचार, तनाव, कामचोरी जैसी कमियां यहां न के बराबर हैं। खुद दिल्ली मेट्रो के कर्ता-धर्ता और मेट्रोमैन के नाम से विख्यात ई. श्रीधरन गीता से गहरे प्रभावित हैं।

निष्काम कर्म कॉरपोरेट जगत् का नया नारा है। पिछले कुछ सालों में गीता में निहित मैनेजमेंट के मंत्रों का ज्ञान कराने वाली कई किताबें लिखी गई हैं। इनमें प्रमुख है—स्वामी सोमेश्वरानन्द की बिजनैस मैनेजमेंट 'द गीता वे', अरुण कुमार की 'मैनेजमेंट लीडरशिप थ्रू भगवद्गीता', स्वामी बोधानन्द की 'द गीता एंड मैनेजमेंट' और ए.के. श्रीवास्तव की 'भगवद्गीता : इकोनॉमिक डवलपमेंट एंड मैनेजमेंट। नेपाली मैनेजमेंट गुरु पूजन रोका ने अपनी किताब 'भगवद्गीता आन इफेक्टिव लीडरशिप' में गीता में निहित नेतृत्व के सिद्धान्तों को आधुनिक मैनेजमेंट के लिए कारगर बताया है।

अभी हाल (2013 ई.) में चीनी मूल के लेखक चार्ल्स चोउ जो सिंगापुर में रहते हैं उन्होंने प्रबन्धन में गीता का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए 'मैनजमेंट ऑफ के सी विज्डम फ्राम द इण्डियन भगवद्गीता एंड द चाइनीज आर्ट आफ वार' नामक पुस्तक लिखी है। इसमें उन्होंने व्यावसायिक प्रबन्ध एवं व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के क्षेत्र में गीता को प्रासंगिक माना है। उनका कहना है कि गीता लाभ और उद्देश्य के बीच भ्रम की स्थिति को दूर करती है तथा कारपोरेट जगत् के लिए आवश्यक पर्यावरण, लचीलेपन और प्रभावलशाली नेतृत्व की तकनीकों और उपकरणों की जानकारी देती है।

उद्धृत पाथेयकण, पृष्ठ 12 ● 16 नवम्बर, 2013

खेल जगत् और गीता

सुनील गावस्कर क्रिकेट जगत् में अपने समय के महान् खिलाड़ी रहे हैं। वे अपनी सफलता का रहस्य गीता के तीन सूत्रों में बताते हैं—Discipline अनुशासन, Devotion भक्ति और Dedication समर्पण।

अभ्यास में प्रमाद नहीं।

ईश्वर में दृढ़ निष्ठा।

अपने में से सर्वोत्तम को अभिव्यक्त होने दो और फल ईश्वर पर छोड़ दो।

संवित् शूटिंग एवं गीता

गीता एवं शास्त्रों के मर्मज्ञ, वैज्ञानिक-संत, बालकों व युवाओं के चिर प्रेरक, सरल-सरस-सौम्य संन्यासी मेरे गुरुदेव परम पूज्य श्री स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज ने वर्ष 2002 में भारत में विश्व के श्रेष्ठतम निशानेबाजों को बीकानेर में तैयार करने के उद्देश्य से आश्रम में संवित् शूटिंग संस्थान की स्थापना की। यह मुख्यत: एकाग्रता का खेल है, जो क्षात्रतेज, शौर्य को भी जगाने वाला है। संवित् शूटिंग संस्थान का ध्येयवाक्य है—

प्रणवो धनु, शरो ह्यात्मा, ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्।। (मुण्डकोपनिषद्, 2.4)

ओंकार ही धनुष है, आत्मा बाण है और परब्रह्म परमेश्वर ही उसका लक्ष्य कहा जाता है। प्रमाद रहित मनुष्य द्वारा ही बींधा जाने योग्य है। अत: बाण की तरह उस लक्ष्य से तन्मय हो जाना चाहिए।

इस खेल में विशेषकर गीता के छठे अध्याय से पर्याप्त सहायता मिल रही है और पूज्यश्री के आशीर्वाद से श्रेष्ठ निशानेबाज तैयार हो रहे हैं। जिनमें आत्मविश्वास, एकाग्रता, धैर्य, वीरता, शौर्य, सत्यनिष्ठा, तप, तितिक्षा तथा सहभागिता की भावना आदि चारित्रिक गुणों का विकास हो रहा है। शूटिंग संस्थान के निशानेबाजों भावना शर्मा ने राष्ट्रीय स्तर की नमन शर्मा ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर की निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में अनेकों पदक जीतकर बीकानेर, मरुनगर की राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर की पहचान बनाई है।

न्यूजर्सी में स्थापित अमेरीका की सेटन हाल यूनिवर्सिटी जिसमें 10,800 छात्र हैं सभी छात्रों के लिए गीता पढ़ना अनिवार्य कर दिया है।

आज रूस के राष्ट्रपति मेदवेदेव ओमकार (ॐ) ध्वनि के साथ-साथ राष्ट्रपति पद की शपथ ले रहे हैं।

त्रिनिदाद और टोबैगो की प्रधानमंत्री कमला प्रसाद बिसेसर 26 जून, 2010

को नोस्ली (पोर्ट ऑफ स्पेन) में एक गरिमामय समारोह में, गीता हाथ में लेकर प्रधानमंत्री पद की शपथ लेती है।

जिस संस्कृत भाषा को मृत भाषा घोषित किया था अंग्रेजों ने, किन्तु उसे अब विश्व के वैज्ञानिकों, भाषाशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने विश्व की श्रेष्ठ भाषा घोषित किया है तथा विश्व के वैज्ञानिकों की भावी भाषा बतलाया है।

विश्व के 35 देशों के 450 विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन होता है। अमेरीका के विश्वप्रसिद्ध अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (नासा) के वैज्ञानिक डा. रिक ब्रिक ने विधिवत शोध कर निष्कर्ष निकाला है कि संस्कृत संगणक (कम्प्यूटर) के लिए सहज और सर्वशुद्ध भाषा है। केवल संस्कृत ही एकमात्र भाषा है जिसकी ध्वनि हमारे मानवीय स्वर यंत्र के अनुसार है। लेखन और उच्चारण में कोई अन्तर नहीं है। मूल भाषा के नियमों के अन्तर्गत ही लाखों नए शब्द बनाने की सामर्थ्य केवल संस्कृत भाषा में ही है। किसी भी नए उपकरण अथवा वैज्ञानिक विधि का छोटा सारगर्भित नाम देने की सामर्थ्य केवल संस्कृत में है। पांच हजार वर्ष पूर्व गीता में प्रयुक्त संस्कृत भाषा तथा वर्तमान में प्रयुक्त संस्कृत भाषा के स्वरूप में किसी प्रकार का अंतर नहीं है। जबकि विश्व की किसी भी भाषा का स्वरूप 100-200 वर्षों के बाद इतना बदल जाता है कि भावी पीढ़ियों को समझने हेतु शब्दकोश तथा भाषा वैज्ञानिकों की सहायता लेनी पड़ती है। विश्व की किसी भी भाषा में लिखे वैज्ञानिक साहित्य को एक हजार वर्ष बाद जब अध्येता पढ़ेगा उसे समझने में कठिनाई होगी, यह कठिनाई संस्कृत भाषा में लिखे साहित्य के साथ होने वाली नहीं है। अनेक समृद्ध क्षेत्रीय भाषाओं के उपरान्त भी बड़े-बड़े भारतीय विद्वानों द्वारा स्थायी प्रकृति का साहित्य संस्कृत भाषा में ही लिखने के कारण इस भाषा का शाश्वत स्वरूप है।

2006 अमेरीका White House में दीपावली मनाई गई जिसमें President बुश को आमंत्रित किया गया और घी के दीये जलाए गए। पूरा White House भगवामय हो गया। लंदन में हाउस ऑफ कामंस में इसे मानव मात्र की सुख-समृद्धि का उत्सव मानकर मनाया जा रहा है। 2013 में पुनः अमरीकी संसद में दीपावली मनाई गई।

12 जुलाई, 2008, संयुक्त राष्ट्र अमेरीका की सीनेट की बैठक का (कांग्रेस के कार्यक्रम का) हवन से शुभारम्भ हुआ। गीता के श्लोक व वेदमंत्रों का पाठ कश्मीरी पंडित राजन जैद ने सम्पन्न कराया।

10 दिसम्बर को अमेरीका की सबसे बड़ी डेमोक्रेटिक पार्टी ने अपने अधिवेशन का शुभारम्भ उसी प्रकार से किया जिस प्रकार White House में गीता के श्लोकों का पाठ, वेदों की ऋचाओं का पाठ व शान्तिमंत्र के गायन से किया।

यूनेस्को ने वैदिक मंत्रोच्चार की पद्धति को अन्तरराष्ट्रीय धरोहर घोषित किया है।

अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, वर्तमान ओबामा हनुमानजी के भक्त हैं। गले में हनुमान का लॉकेट है।

10 सितम्बर, 2008 (हिन्दुस्तान टाइम्स) जिनेवा में Big Bang theory के अध्ययन को लेकर किए जा रहे प्रयोग को लेकर धरती के काफी नीचे सुरंग बनायी। उसमें एक विस्फोट करना था। उसमें पूरे विश्व के वैज्ञानिक लगे हैं, जिसमें भारत के 200 वैज्ञानिक हैं। इस संस्था का नाम सी.ई.आर.एन. है। इसका जो वैज्ञानिकों का अधिवेशन हुआ था उसकी अध्यक्षता नटराज की दो मीटर की बड़ी मूर्ति ने की।

बिल क्लिंटन जब राष्ट्रपति थे तो उनके साथ में उपराष्ट्रपति अलगोर थे। इस समय दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग के बारे में सर्वाधिक इनिशिएटिव लेकर प्रचार करने वाला कोई व्यक्ति है तो वह अलगोर हैं। अलगोर उस समय उपराष्ट्रपति थे और वहां पर पृथ्वी सम्मेलन हुआ था। उस पृथ्वी सम्मेलन के उद्घाटन में अलगोर ने एक वाक्य कहा था कि पिछले तीन सौ सालों से हम लोग गलत मार्ग पर चल रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम पुनर्चिन्तन करें और मार्गदर्शन के लिए पूर्व की ओर मुड़ें। इस समय और इस दिशा में जाना है तो होलिस्टिक थिंकिंग का जो कॉन्सेप्ट, जो मदर अर्थ का कॉन्सेप्ट भारत ने बहुत पहले दिया है, उसे अपनाएं। उस कान्फ्रेंस में अथर्ववेद का जो भूमि सूक्त है वह दुनिया के इकोलोजी के लोगों के लिए मास्टर प्रिन्ट हो सकता है, उसका अंग्रेजी अनुवाद सबको दिया गया। सबने कहा कि इसमें हमने जो कुछ सोचा वह सब कुछ है। उसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है। गीता के तीसरे अध्याय में 10 से 16 श्लोक तक जिस यज्ञ चक्र का वर्णन हुआ है वह भी इस विषय में मार्गदर्शक हो सकता है इस प्रकार जो परिदृश्य खड़ा हुआ है इसमें आदमी को लगता है कि हमें कहीं इधर आना पड़ेगा।

वैश्विक ताप की समस्या अमेरीका और यूरोपीय देशों की जीवनशैली के कारण ही उत्पन्न हुई है। इसके समाधान के लिए अनेक सम्मेलन हुए, लेकिन कहीं से भी इस समस्या का समाधान नहीं निकल पाया। समाधान के लिए आखिरकार सबने भारतीय चिन्तन दर्शन की ओर देखा। दुनिया के अनेक देशों ने भारतीय चिन्तन दर्शन को विभिन्न समस्याओं के समाधान के रूप में स्वीकार किया है।

राजीव गांधी जब प्रधानमंत्री बने और भारत से परिचय कराने के लिए भारत उत्सव का आयोजन मास्को में किया जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा आज दुनिया सर्वनाश की ओर जा

रही है, उसे विनाश से बचाने के लिए अत्यन्त मूल्यवान सिद्धान्त, तत्त्व, जीवन-मूल्य भारत ही दे सकता है। इस अवसर पर उन्होंने गीता के दो श्लोक भी कहे—

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। 2/62, गीता

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। 2/63, गीता

जिसका अर्थ है कि जब मनुष्य का मन मोह में पड़ जाता है तो वह दानव बन जाता है। गुणों की सम्पत्ति नष्ट करने का प्रयास करता है। सबकी हत्या करने का प्रयास करता है। सब कुछ नष्ट हो जाता है। अतः मन को नियंत्रित करो। यदि मन नियंत्रित रहा तो सब कुछ ठीक रहेगा। यह कार्यक्रम दूरदर्शन में दिखाया गया था।

पश्चिम में परिवार जीवन, समाज जीवन समाप्तप्राय हो गया है। इसके बड़े दुष्परिणाम आ रहे हैं। अनैतिक सम्बन्ध और लावारिस बच्चों की फौज विस्फोटक स्थिति में पहुंच रही है। मार्गरिट थैचर इंग्लैण्ड की प्रधानमंत्री, जब वे प्रधानमंत्री पद से मुक्त हुईं तब एक भारतीय परिवार में एक सप्ताह तक रही। उसने कहा कि आने वाले समय में इंग्लैण्ड के समाज को अगर बचना है तो जितनी जल्दी हो सके भारतीय पारिवारिक मूल्यों को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। क्लिंटन से लेकर ओबामा तक बिलियन्स डॉलर्स का बजट पारिवारिक जीवन-मूल्यों को पुनः विकसित करने के लिए प्रचार में लगा दिया है। पहले तोड़ा, अब भुगतने लगे, तो फिर से इधर आ रहे हैं।

इंग्लैण्ड में लंदन के मेयर (महापौर) स्वामीनारायण सम्प्रदाय द्वारा बनाए गए मंदिर को देखने गए। मंदिर में भारतीय और पौराणिक पात्रों पर बनी झांकियों को देखा। उसमें प्रह्लाद और ध्रुवजी की भी झांकी थी। उनके दर्शन करते-करते श्रवण कुमार की झांकी के सामने रुक गए। उसे बड़ा विचित्र लगा। एक युवक है, उसके बलिष्ठ कंधे पर एक विचित्र-सी चीज है, कांवड़ के जैसी। और एक बूढ़ा, एक बूढ़ी उसमें बैठे हैं। उसमें एक जवान और बूढ़ा-बुढ़िया से क्या तालमेल है? क्योंकि वहां तो सम्बन्ध रहता नहीं है। तो उसने पूछा कि क्या है यह? उसे बताया कि एक भारतीय पात्र है। एक युवक था, यह उसके मां-बाप हैं, उनकी इच्छा थी तीर्थयात्रा करने की। उनकी इच्छा पूरी करने के लिए उसने शादी वगैरह नहीं की। पहले यह करूंगा फिर उसके बाद अपना सुख, उनको लेकर सारे भारत में घूमकर यात्रा कराई। वह मेयर कहता है कि क्या यह सम्भव है? कंधे पर लेकर जवान लड़का और जवानी में ऐशो आराम करने के बजाय बूढ़े मां-बाप को ढोकर के ले जा रहा है क्या यह सम्भव है? लौट कर आने के बाद लन्दन की स्कूलों में एक सर्कूलर निकाला कि अपने बच्चों को मंदिर देखने के लिए भेजो कि चरित्र क्या होता है, जीवनमूल्य

क्या होता है। इसकी तो हमें जरूरत है? इस प्रकार आज पाश्चात्य जगत् भारतीय पारिवारिक मूल्यों, जीवनमूल्यों, विवाह पद्धति की ओर आकृष्ट हो रहा है।

आज अमेरीका विचारों से हिन्दू होता जा रहा है। ऐसे सर्वे प्रकाश में आ रहे हैं। एक लेख में ऋग्वेद की उस ऋचा का उल्लेख किया गया है जिसमें कहा गया है कि सत्य एक है और विद्वान् इसे कई प्रकार से कहते हैं। इसी तरह हिन्दू मानते हैं कि ईश्वर की ओर जाने के कई रास्ते हो सकते हैं। ईसाइयत और कुरान भी इसमें शामिल है। ऐसा नहीं कि कोई भी रास्ता दूसरे से श्रेष्ठ है। अधिकतर पारम्परिक और रूढिवादी ईसाइयों को इस तरह से सोचने के बारे में नहीं सिखाया जाता है। लेकिन अमरीकी अब पुरानी सोच को छोड़ रहे हैं। 30 फीसदी अमरीकी खुद को धार्मिक के बजाय आध्यात्मिक बताते हैं।

आज वे कैमिकल के स्थान पर हरित को, तुलसी, आंवला, हलदी, ग्वारपाठा आदि को स्वीकार रहे हैं। योग और आयुर्वेद को स्वीकार कर रहे हैं।

लातविया में रघुरामजी गए थे तो वार्तालाप में कहा युवकों को एकत्रित करोगे तो मैं गीता के बारे में बतलाऊंगा। तो उन्होंने कहा, बताने की कोई जरूरत नहीं है। तो उन्हें लगा कि गीता से विरोध होगा शायद इसलिए बोले—क्यों? बोले वो ऐसा है हमारे यहां पर स्कूल के पाठ्यक्रम में गीता है।

इस प्रकार आज दुनिया गीता, योग, आयुर्वेद, अध्यात्म, जीवन-मूल्य, पारिवारिक मूल्य, पवित्रता, शाकाहारी भोजन, हिन्दू त्योहार आदि की तरफ निरन्तर आकृष्ट होती जा रही है।

जीवन के हर क्षेत्र में गीता की महती भूमिका देखकर ही तथा भारतीय संस्कृति का सार होने से परम पूज्य गुरुदेव स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज ने गीता लिखित गीता ज्ञान परीक्षा सन् 1995 में प्रारम्भ की ताकि बच्चे प्रारम्भ से ही गीता से जुड़ जाए। गीता से जुड़ते ही वह पूरी भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, पूर्वजों, महापुरुषों, भगवान कृष्ण, परम्परा व इतिहास से जुड़ जाता है। उसे जीवन के प्रारम्भ से ही पूरे जीवन का नक्शा और जीवन का वास्तविक लक्ष्य मिल जाता है। बच्चों के कारण उनके अभिभावक एवं आचार्य भी गीता से जुड़ जाते हैं। इस प्रकार परिवार एवं विद्यालय भी गीता से जुड़ जाते हैं। सरकार तो धर्मनिरपेक्षता के कारण गीता की शिक्षा देती नहीं है। इसलिए परम पूज्य गुरुदेव जैसे अनेक संत इस कार्य को कर रहे हैं। जैसे सांभरलेक में योगी रमणनाथजी महाराज। आदि-आदि। आज गीता ज्ञान परीक्षा एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले चुका है। 2014 ई. में 57,570 तथा 2015 ई. में 55,440 छात्रों की इसमें भागीदारी रही। धीरे-धीरे इसमें और कई आयाम यथा भाषण प्रतियोगिता, लेख प्रतियोगिता, वयस्क (महिला-पुरुष) गीता ज्ञान परीक्षा तथा श्लोक स्मरण परीक्षा जुड़ गये हैं।

गीता के प्रति निष्ठा के दो प्रेरणास्पद प्रसंग

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे शब्द से भगवद्गीता प्रारम्भ होती है। गीता के आदि में धर्म शब्द का उच्चारण करने से गीता-शास्त्र का मंगल भी सम्पन्न हो गया।

एक है इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई होल्कर—प्रमुख विद्वानों से गीता की गौरव गरिमा सुनकर महारानी ने राज दरबार में गीता कथा की व्यवस्था की। राज दरबार, विद्वानों और पंडितों की महती सभा में राज पंडित ने कथा प्रारम्भ की। प्रथम श्लोक का चौथाई पद 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' सुनते ही महारानी ने पंडितजी को रोक दिया और कथा बंद करने को कहा। सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए और पंडितजी घबरा गए। किस अपराध पर कथा रोकी गई, किसी के कुछ समझ में नहीं आया।

महारानी अहिल्या बाई ने पंडितजी को सम्बोधित करते हुए कहा, 'आपने गीता माहात्म्य को पढ़ते हुए कहा था कि गीता का एक, आधा, या चौथाई शब्द ही आवागमन के चक्र से मुक्त कर ईश्वर साक्षात्कार कराने की शक्ति रखता है, तब अब आगे पढ़ने से क्या लाभ? आपने जो एक पद पढ़ा है उसे मैंने भी समझा है। 'क्षेत्रे-क्षेत्रे धर्म कुरु' जहां रहो, जिस परिस्थिति में रहो, जैसे भी रहो धर्म का ही आचरण करो। मेरे सम्पूर्ण जीवन के लिए गीता का संदेश, प्रेरणास्पद वाक्य, आचरण करने के लिए पर्याप्त है। अब मैं आगे सुनकर और क्या करूंगी?' अपने कर्मक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाना है।

अमेरीका के लब्धप्रतिष्ठ दार्शनिक, विद्वान् बिन्डेल बिल्की ने क्षेत्रे-क्षेत्रे धर्म कुरु, पद की क्या ही प्रभावोत्पादक व्याख्या की है—

Do all the good you can.
To all the people you can.
In all the places you can.
As long as you ever can.

अर्थात् सदैव जितना भी तुम कर सको सभी स्थानों पर सभी का पूरा भला करो।

भारत के परतंत्र रहने पर एक अंग्रेज दार्शनिक ने क्या ही मार्मिक बात कही थी—

It is a wonder that a nation which prosseses a book like gita, continues to be a slave. आश्चर्य की बात है कि एक राष्ट्र जिसके पास गीता जैसी पुस्तक है, गुलाम बना हुआ है।

भक्त सम्राट् श्री चैतन्यदेव महाप्रभु जब दक्षिण भारत की यात्रा पर थे तब उन्होंने एक दिन एक मनुष्य को गीता पढ़ते हुए देखा। थोड़ी ही दूरी पर एक दूसरा मनुष्य गीता को सुन-सुनकर अविरल अश्रुधारा बहा रहा था। श्री चैतन्यदेवजी ने उस मनुष्य से पूछा कि क्या आप गीता समझ रहे हैं? उत्तर दिया—नहीं, मैं इसको कुछ भी नहीं समझता। प्रश्न हुआ फिर इस प्रकार से रो क्यों रहे हैं? उत्तर था मैं तो गीता सुनते समय यही देख रहा हूं कि रथ में बैठे हुए अर्जुन के सामने भगवान् श्रीकृष्ण उपदेश दे रहे हैं। मैं इसे देखकर ही रो रहा हूं। यह है गीता के प्रति दृढ़निष्ठा एवं भक्ति।

गीता मेरे लिए शाश्वत मार्गदर्शिका है। मेरे लिए तो गीता ही संसार के सर्व धर्म-ग्रन्थों की कुंजी है। संसार के सब धर्म-ग्रन्थों में जो गहरे से गहरे रहस्य भरे हुए हैं, उनको यह मेरे लिए खोलकर रख देती है।

वे अन्यत्र कहते हैं, 'मैं खुल्लमखुल्ला कबूल करता हूँ कि कुरान, बाइबिल तथा दुनिया के अन्यान्य धर्मों के प्रति मेरा आदर भाव होते हुए भी मेरे हृदय पर उनका इतना असर नहीं हुआ जितना की श्रीकृष्ण की गीता और तुलसीदास की रामायण का होता है।'

—महात्मा गांधी

× × ×

पाश्चात्य लोगों के व्यंग्यवाणी का उत्तर देती हुई भगिनी निवेदिता कहा करती थी, '....यदि यही रचना किसी यूरोपीय कलाकार ने की होती तो वे आप ही आप इसकी श्रेष्ठता का दावा करते....।'

वर्तमान चारित्रिक संकट के निरसन में गीता का मार्गदर्शन

आज सर्व स्तर पर देश में चरित्र का संकट है। आज राष्ट्रपति से लेकर चपरासी पर्यन्त सभी चरित्र से पतित हो गए हैं। सभी अपने स्वार्थ के अनुकूल भ्रष्टता चाहते हैं। पर वही जब अन्य विभाग में जाता है और वहां के भ्रष्टाचार के कारण असुविधा होती है तब वह उसका आलोचक बन जाता है। इस प्रकार प्रत्येक अपने को बाद देकर दूसरे का आलोचक बना हुआ है। कोई भी अपने में सुधार नहीं चाहता। अपने में जो त्रुटि है वह तो उसकी विवशता, अनिवार्यता है। पर अपने विभाग को बाद देकर अन्य सभी विभाग में सुधार चाहता है। इसी प्रकार आज परिवार टूट रहा है। परिवार के जीवनमूल्य नष्ट हो रहे हैं।

आज मानो लोक जीवन के बाजार में हर व्यक्ति बिकाऊ है। मंत्री, प्रशासक, नेता, शिक्षक, सैनिक, विधायक, संसदसदस्य सभी बिकाऊ हैं। सभी का अलग-अलग मूल्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो सभी खरीदे जा सकते हैं। धन, पद, प्रतिष्ठा के चक्कर में प्रत्येक देशहित को मानो दांव पर लगा सकता है। कथनी-करनी के बीच खाई दिखाई पड़ रही है। विश्वास, श्रद्धा, आस्थाएं लुप्त हो गई हैं। क्या इन परिस्थितियों में देश रामराज्य का दर्शन कर सकेगा? क्या पुनः गौरव मण्डित हो सकेगा? देशवासी सुखी होंगे? अत्यन्त निराशाजनक चित्र है। आखिर यह दुर्दशा क्यों?

भारत ज्ञान की दृष्टि से जगद्गुरु, धन एवं वैभव की दृष्टि से सोने की चिड़िया रहा। एवं सामरिक दृष्टि से अजेय तथा संगठन की दृष्टि से अभेद्य था। इस देश को स्वयं वेद भगवान् सारे संसार को श्रेष्ठ, आर्य बनाने का आदेश देते हैं। इस देश के चरित्र से, आचरण से, विश्व के सभी देशों को अपने-अपने कर्तव्य का ज्ञान प्राप्त करने का आह्वान स्वयं भगवान् मनु करते हैं। इस देश में विश्व के श्रेष्ठ मेधावी छात्र, मनीषी साधक शिक्षा ग्रहण करने आते थे और अपने को कृतार्थ समझते थे। इस देश के चरित्र की प्रशंसा सभी विदेशी यात्रियों ने की है। मैक्समूलर की एक पुस्तक है India : what can it teach us उसमें एक

अध्याय ही हिन्दुओं के उदात्त चरित्र पर है। जिस देश के विषय में यह ख्याति थी कि इस देश से बढ़कर कोई देश नहीं, इस धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं, इस जाति से बढ़कर कोई जाति नहीं, इस देश की भाषा से, संस्कृति से बढ़कर कोई भाषा एवं संस्कृति नहीं, जिसकी वाणी धर्म की वाणी है, जिसका सारा जीवन सत्य के लिए समर्पित होता है, जिस जाति के विषय में ख्याति है कि आर्य कभी दास नहीं होते, वह देश आज इस दुर्दशा को कैसे प्राप्त हो गया? इसका चित्र इतना भयावह, दु:खद, निराशाजनक क्यों? जिस देश में एक दिन के वास के लिए मुहम्मद के चाचा सारे जीवन का पुण्य चढ़ाकर भी अपने में कृत-कृत्यता की अनुभूति करते थे, वह देश आज पतित कैसे हो गया! विस्मय की बात लगती है।

इसका कारण 1000 वर्षों की गुलामी, जिसके कारण हम अपने स्व से च्युत हो गए हैं, अपनी संस्कृति का विस्मरण कर बैठे हैं। अपने जीवनमूल्य के प्रति अश्रद्धा का निर्माण हो गया। भौतिकता की ऊपरी चमक-दमक से चौंधिया गए हैं। फलतः पश्चिम का अन्धानुकरण करने, पश्चिम की जूठी पत्तल चाटने में ही गर्व की अनुभूति कर रहे हैं। रही-सही कसर अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था ने, अंग्रेजी के मानस पुत्रों कृत शिक्षा ने अपने से काटकर हमें भित्ति (नींव) हीन कर दिया है।

इसका परिणाम यह हो रहा है कि आज हम अपने दिव्य स्वरूप, आत्म स्वरूप को भूलकर अपने को शरीर सर्वस्व समझ बैठे हैं। उसी के हर प्रकार के पोषण में लगे हुए हैं। शरीर को हम तरह-तरह के व्यंजन खिलाते हैं, अच्छे से अच्छे कपड़ों से संवारते हैं, विविध साबुनों से नहलाते हैं, विभिन्न सुगंधयुक्त तेल एवं पाउडरों का लेप चढ़ाते हैं, इसके रहने के लिए विशाल भवन बनाते हैं, रहने के स्थान को नित्य परिष्कार करते हैं। हमारा शरीर नष्ट न हो जाए, उसे कष्ट न होवे इसका प्रयास रहता है। हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति के मूल में शरीर मर न जाए अतः इसकी रक्षा के लिए सारी व्यवस्था, सारे उपाय करते हैं। परिवार, समाज, राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्रसंघ, पुलिस की व्यवस्था, सेना की व्यवस्था शरीर की सुरक्षा एवं सेवा के लिए है। शरीर के भोगों की सुरक्षा के लिए है।

इस प्रकार मानो मानव का तन ही सब कुछ है। शरीर और शरीर का भोग इन्हीं की साधना में जीवन लगाओ। इससे परे कुछ नहीं है। यह भारत का चिंतन नहीं है। शरीर और शरीर के भोग दोनों भौतिक सम्पदा हैं। दोनों नश्वर हैं। दोनों अल्पकालिक हैं। जिस जिह्वा को कुछ स्वादिष्ट वस्तुएं खाने की इच्छा होती है, जो जिह्वा रसगुल्ले के लिए ललचाती है, वह एक दिन नहीं थी। एक दिन है। पुनः एक दिन नहीं रहेगी। रसगुल्ला भी एक दिन नहीं था, एक दिन है। पुनः एक दिन नहीं रहेगा। मर जाने वाली जिह्वा, मर जाने वाले रसगुल्ले, मर्त्य जवानी, मर्त्य रसगुल्ले को लेकर कब तक भोगती रहेगी, कब तक आनन्द लेती रहेगी। उसका

आनन्द सब मर जाएगा। इसलिए कुछ इससे परे का सोचना चाहिए। इससे परे क्या है? केवल भोग-विलास का कीड़ा बनने के लिए, विलासी कुत्ता बनने के लिए हम इस संसार में नहीं आए हैं। इससे परे कुछ जीवन का लक्ष्य है। वह क्या है? इस पर भारत ने विचार किया है, पश्चिम ने विचार नहीं किया है। भारत ने तन से परे भी जीवन है इसका विचार किया पर, पश्चिम ने नहीं किया है।

पश्चिम ने कहा—**तन को पुष्ट पोषण दो।** वे तन के पुष्ट, मन के दुष्ट, बुद्धि के बेईमान, और आत्मा के अंधे हैं। ऐसे व्यक्ति पश्चिम में निर्माण हुए हैं। भारत ने कहा कि तन के पुष्ट, मन के तुष्ट, बुद्धि के संतुष्ट और आत्मा के ज्योतिष्मान बनो। हमने इस तरह के मानव का विचार किया है। भूख लगने पर तन को दो टुकड़े अवश्य दो, पर तन से बहुत ज्यादा बलिष्ठ मन है। भौतिक जगत् में प्रकाश की गति बहुत तीव्र है। प्रति सेकण्ड में एक लाख 86 हजार मील है। इस क्रम से सूर्य की रश्मि को पृथ्वी तक पहुंचने में आठ मिनट और कुछ सेकंड का समय लगता है। मन क्षण में सूर्यलोक, क्षण में चन्द्रलोक में पहुंच जाता है, इस प्रकार मन कितना बलिष्ठ है, उसको क्या खुराक देते हैं। शरीर को हम नित्य भोजन देते हैं। नित्य नहलाते हैं। फिर भी कुछ समय बाद पुनः गंदा हो जाता है। इस तुलना से हम विचार करें मन को क्या खुराक दे रहे हैं। मन को हम कुछ खिलाते नहीं। मन युगों से भूखा है। जैसे पाले हुए कुत्ते को रोटी नहीं देंगे तो वह रसोई में मुंह मारेगा। रसोई से ताड़ना करने पर वह नाली में मुंह मारेगा। विष्ठा-मल आदि खाएगा। यह कुत्ते की स्वाभाविक वृत्ति है। उसे रोटी नहीं देंगे तो वह मल में मुंह मारेगा।

इसी प्रकार हम मन को अच्छे संस्कार नहीं देंगे तो वह असत् संस्कारों को ग्रहण करेगा। इस कारण मन बहुत बिगड़ गया है।

हम चिल्लाते हैं—रोटी, कपड़ा और मकान। रोटी, कपड़ा और मकान। रोटी दो, रोटी दो-रोटी दो। पेट को जैसे-तैसे रोटी का जुगाड़ हो जाए मिल जाए। तो क्या हम मानते हैं तन से अधिक बलवान तो मन है? मन को क्या देते हैं? अर्जुन को क्या हुआ? तन का बलवान। संसार का शिरोमणि योद्धा। मन में तनिक मोह आ गया। हाथ से गांडीव गिरा। सारी त्वचा जल रही है। खड़ा नहीं हो सकता। भगवान्! मन चक्कर खा रहा है। क्या हो गया? तन का शूर शिरोमणि। सबसे बड़ा योद्धा अपने युग का। दस-दस हजार हाथियों के बल वाले लोग उसके सामने टिक नहीं सकते थे। इतना बलवान पर मन में तनिक मोह आया तो हाथ से गांडीव गिरा जा रहा है। किसी क्षत्रिय के लिए उसके हाथ से हथियार गिर जाए इससे बड़ी लानत क्या हो सकती है। वह गिर रहा है। वह सम्हाल नहीं सकता तब कौन बलवान? तन से मन हजारों गुणा अधिक बलवान है और मन को हम कोई खुराक ही नहीं देते। मन हमारा भूखा पड़ा है। पिता अपने पाले हुए बेटे को जिसको सारी उम्र खिला-

पिला रहे हैं उसको दो-चार दिन खाना न देवे तो गली-कूचे में निकल जाता है और अपने माता-पिता के विरुद्ध, अपने दादा के विरुद्ध गाली बकने लगता है। पड़ोसियों से, घर के दुश्मनों से मिल जाता है, मुंबई भाग जाता है या कहीं और चला जाता है। उम्र भर का शत्रु बन जाता है। खिलाया तो उम्र भर था। दो-चार दिन भोजन नहीं दिया, विद्रोही बन गया। मन तो पहले से ही विद्रोही! मन तो पहले से ही चंचल है। मन बहुत विद्रोही है, चंचल है। कबीर साहब कहते हैं—

बाजीगर का बांदरा ऐसा मनुज हो साथ
नाना नाच नचायके राखत अपने हाथ।

यह बाजीगर का बंदर है। और कलंदर समझता है मैं बंदर को नचाता हूं। बंदर जानता है कि मैं ही कलंदर बनने जा रहा हूं। क्योंकि जहां-जहां बंदर नाच करता है, कलंदर साथ-साथ घूमता है। आज राजबाग तो कल काठगोला, अभी स्टेशन पर तो थोड़ी देर बाद बाजार में, आज यहां है तो कल वहां है। जहां-जहां बंदर जाता है वहां-वहां कलंदर साथ जाता है। कलंदर स्वयं नाच कर दिखाता है कि बंदर-बंदरिया ऐसा नाच नाचो। तो बंदर-बंदरिया ऐसा नाचो, खेलो, देखने वालों से पैसा ले लो। बंदर नाच रहा है उसके साथ-साथ कलंदर को नाचना पड़ता है। एक चक्रधरपुर के बूढ़े महात्मा थे। वे कहते हैं जो लोग कहते फिरते हैं रामायण में रावण ने सीता का हरण कर लिया। अरे, मूर्खो! रावण ने सीता का हरण कैसे किया? रावण ने सीता का हरण नहीं किया। अरे कह दो उसको कि सीता ने ही रावण का हरण किया। सो कैसे, महाराज जी! वे कहते हैं देखो जी, रावण है त्रिलोक-विजयी। उसको कोई मार ही नहीं सकता। इन्द्र, वरुण, यम को खाट से बांध रखा था। सब देवता कम्पायमान होते थे। देव, गंधर्व, राक्षस, किन्नर कोई उसको मार नहीं सकता था। उसको यह वर प्राप्त था। ब्रह्माजी भी कहते थे क्या करें हम खुद बंध गए, वर देने के बाद। उसको मारने का कोई उपाय ही नहीं है। उस रावण का प्राण हरण कर लिया सीता ने, राज्य हरण कर लिया सीता ने, कुल हरण कर लिया सीता ने, तेज नाश कर दिया सीता ने, बुद्धिनाश कर दिया सीता ने। सच्ची बात यह है कि सीता ने ही रावण का हरण किया था। भौतिक दृष्टि से लगता है कि रावण ने सीता का हरण किया था। वह तो उसका सर्वनाश करने के लिए चिनगारी बनकर उसके घर में जाकर बैठी थी।

तो क्या कलंदर बंदर को नचाता है या बंदर कलंदर को नचाता घूमता रहता है। तो बाजीगर के साथ ऐसा बंदर है। हमारे पास जो मन है वह ऐसा ही जीव है ऐसा ही बंदर है, जो नाना नाच नचाय के, 84 लाख योनियों तक नाच नचाता है मनरूपी बंदर और अपनी रस्सी अपने ही हाथ में रखता है। छोड़ता नहीं है। तो मन जो स्वभाव से चंचल है, स्वभाव से विद्रोही है, एक क्षण में कब धोखा दे जाएगा

पता भी नहीं लगता है। मन को यदि उचित-आहार नहीं देंगे तो मन क्या खुराफात करेगा। इस मन को खुराक दो जी।

मन का आहार क्या है? मन का आहार है—संस्कार। मन को अच्छे संस्कार दो जी। तन को आहार दो, मन को संस्कार दो। संस्कार का क्या मतलब है?

संस्कारः परिष्कारः मानवमानसशोधकः

संस्कार मानव मन का परिष्कार करने की वे क्रियाएं हैं जो मनुष्य के मन का शोधन कर देती हैं। मनुष्य के मन का पवित्रीकरण कर देती हैं। मनुष्य के मन को संस्कारित कर देती हैं, परिमार्जन कर देती है। तो मानव मन का परिष्कार एवं शोधन करने वाले जितने भाव या कार्य हैं, वे सब संस्कार कहलाते हैं। उन्हीं संस्कारों की दिव्य परम्परा का नाम संस्कृति है।

प्रत्येक मानव का जन्म परिवार में होता है। इसलिए संस्कारों की शृंखला भी परिवार से ही प्रारम्भ होती है। पिता ने पुत्र को सिखाया, पुत्र ने पौत्र को सिखाया, पौत्र ने प्रपौत्र को। महाराजा अग्रसेन ने अपने 18 पुत्रों को सिखाया। उन्होंने अपने पुत्रों को सिखाया, उन्होंने भी अपने पुत्रों को सिखाया। ऐसा करते-करते आज तक यह परम्परा चली आ रही है। मनु ने इक्ष्वाकु को, इक्ष्वाकु ने हरिश्चन्द्र को, हरिश्चन्द्र ने मान्धाता को, मान्धता ने दशरथ को, दशरथ ने राम को। ऐसा करते-करते यह परम्परा आज तक चली आ रही है। इस प्रकार संस्कारों की परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उत्तराधिकार क्रम में स्वाभाविक रूप में स्वतः प्राप्त होती रहती है। जो मनुष्य के मन का शोधन करने वाली क्रियायें हैं वे संस्कार कहलाती हैं और उस संस्कारों की दिव्य परम्परा का नाम संस्कृति है।

संस्कार क्या है और संस्कृति क्या है? हर जीव को भूख लगती है। किसको भूख नहीं लगती? हर जीव भोजन ढूंढ़ रहा है। एक छोटी-सी चींटी चली और चीनी का कणभर लेकर आई कि घर में बच्चों को खिलाएगी। उत्सव आ रहा है बच्चों को खीर बनाकर खिलाएगी। इसलिए चीनी का कण उठाकर जा रही है। रास्ते में एक शरारती बच्चा मिल गया। उसने रास्ते में उठाकर एक बालटी पानी डाल दिया। एक बालटी पानी रास्ते में डालने से तो उसके लिए मानो नदी में बाढ़ आ गई। सात समुद्र में तूफान आ गया। चींटी उस पानी में बह नहीं गई। यदि बह गई तो कहना ही कुछ नहीं है। यदि चींटी बह नहीं गयी तो सात समुद्र का खूब लम्बा चक्कर लगाकर अपने बिल में पहुंच जाती है। तो उस चींटी को भूख लगी है, उसके बच्चों को भूख लगी है। उसको अनाज के दाने की आवश्यकता है। वह साहूजी की दूकान पर आ गयी और एक दाना ले जा रही है। तो उसके अन्दर भोजन ढूंढ़ने की प्रवृत्ति है। उसको लिए चली जा रही है। एक बहुत छोटा जीव है। बाधा आने पर बाधा को पार करके चली जा रही है।

एक अमीबा है। इतना छोटा जीव है। उसको एककोशी जीव कहते हैं। यदि पैंसिल बनाते समय आपकी अंगुली ब्लेड से कट जाए। उसमें एक बूंद रक्त निकल जाए तो उस एक बूंद रक्त में 33 करोड़ अमीबा आ सकते हैं। सूई की बारीक नोक पर 500 अमीबा समा जाते हैं। उसको एक गिलास पानी में मैदे का चूरा और कांच का महीन चूरा मिलाकर दे देवें तो देखेंगे कि वह अनाज को खाता जाएगा और कांच के कण को छोड़ता जाएगा। इसका प्रमाण यह है कि उस गिलास के जल में आयोडिन की बूंद डालें और यदि मैदे के कण बचे रहेंगे तो पानी नीला हो जाएगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि अमीबा भी भोजन ढूंढ़ रहा है और अन्न को आत्मसात् करता हुआ चलता है।

हम भी आगरा से या जोधपुर से चले। मारवाड़ से या राजस्थान से चले या कहीं ओर से चले। भोजन के लिए एक लोटा और गमछा लेकर निकल पड़े कि चलो, असम जाएंगे, मिजोरम जाएंगे, बांग्लादेश जाएंगे, बर्मा जाएंगे। दुर्गम से दुर्गम स्थानों पर भी चल पड़े। इतनी दूर-दूर तक किसलिए जाते हैं? इतनी दूर-दूर व्यापार क्यों करते हैं? भोजन की प्रवृत्ति है। भोजन ढूंढ़ने के लिए। अतः अमीबा से लेकर मनुष्य तक सबमें भोजन ढूंढ़ने की प्रवृत्ति है। इसलिए इसको कहते हैं प्रकृति। अतः प्रत्येक जीव जो जन्मा है वह भोजन ढूंढ़ रहा है। इसमें प्रत्येक मनुष्य और पशु समान हैं। पर भोजन कैसे ढूंढ़ना, इसमें भेद है। लेकिन भोजन किस तरह से ढूंढ़ना, भोजन कैसे कमाना, कैसे साधनों से भोजन कमाना, भोजन न मिले तो कैसे संयम रखना, भोजन का सम्मानजनक साधन खोजना। कुत्ते को भूख लगी है। उसे भोजन न मिला तो रसोई में मुंह मारेगा, वहां डण्डे मिलें तो वह नाली में मुंह मारेगा। हमें भी भूख लगी है। मनुष्य को भी भूख लगी है। पर मनुष्य को भोजन नहीं मिला तो क्या दूसरे का खेत काटेगा? या जेब काटेगा या डकैती करेगा या फिर कुत्ते की तरह मल पर मुंह मारेगा? नहीं, मनुष्य तो मल नहीं खा सकता। वह भूख को वश में रखने का प्रयास करेगा। उस पर संयम करेगा, सहन करेगा। भोजन ढूंढ़ने का सम्मानजनक साधन खोजेगा। और यदि भोजन मिला तो पशुओं के समान जैसे-तैसे खा लेगा या भोजन करने का तरीका अपनाएगा। भोजन जहां मिला, जैसा मिला, कूकर-सूकर की तरह नहीं खाएगा वरन् भोजन करने में तरीका अपनाएगा, शिष्टता बरतेगा, सभ्यता बरतेगा। वह ध्यान रखेगा कि भोजन पवित्र हो, अपनी मेहनत का हो, पवित्र विधि से पवित्र स्थान पर, पवित्र भाव से तैयार होवे। पवित्र अवस्था में पहले भगवान् को निवेदन कर अतिथि देव को खिलाकर उसे संतुष्ट कर फिर स्वयं ग्रहण करेगा, तब जाकर पशु प्रवृत्ति पर अंकुश या विजय हुई।

स्वयं भोजन करना प्रकृति है। दूसरों को खिलाकर अपने लिए न बचे तो संतोष मान लेना संस्कृति है। घर में माता सबको खिलाकर अपने लिए नहीं बचे

तो संतोष मान लेती है, आनन्द मान लेती है कि तुम सभी के मुख से मैंने ही खाया है। स्वामी रामतीर्थ कहते हैं जिस दिन मां स्वार्थी बन जाएगी उसी दिन सारी मानवता मर जाएगी। मां यह सोचे नन्हे शिशु को भोजन का क्या अधिकार है? क्यों मैं अपने तन को निचोड़-निचोड़ इसको खिलाऊं, मुझे क्या पड़ी है कि मैं अपने तन का दूध पिलाऊं। भूखे को खिलाना एवं स्वयं भूखा रह जाना संस्कृति है। दूसरे को खिलाकर आनन्द मानना संस्कृति है एवं भोजन छीनना, भोजन के लिए छीना-झपटी करना यह सब प्रकृति है। और दूसरे को भोजन कराना यह सब संस्कृति है। भूख की तृप्ति के लिए भोजन ढूंढ़ रहा है। भोजन ढूंढ़ने में बाधा पड़े तो संघर्ष कर रहा है। भोजन को कोई छीनने की चेष्टा करे तो उसके साथ घूँसा चला रहा है। युद्ध कर रहा है, तलवार चला रहा है, छुरा चला रहा है, खून कर रहा है। यह है प्रकृति।

और संस्कृति क्या है—

व्यष्टि से समष्टि में समा जाना
जन-जन की आत्मा बन जाना।

सबके सुख में अपना सुख मानना
सबके कर्म में अपना कर्म मानना।

व्यष्टि का समष्टि के लिए, अपने से श्रेष्ठ इकाई के लिए उत्सर्ग करना ही संस्कृति है।

तुम साढ़े तीन हाथ के मांस के लोथड़े के लिए उत्पन्न नहीं हुए हो। अपनी पांच इन्द्रियों की तृप्ति के लिए या जिह्वा के चटलास के लिए नहीं पैदा हुए। तुम विश्व के मंगल के लिए, समाज के हित के लिए, राष्ट्र के हित के लिए, मानवता के महानतम मंगल के लिए पैदा हुए हो। इसलिए जितना बन सके उत्सर्ग करो अपने समाज के कल्याण के लिए। जितना उत्सर्ग करता जाता है उतना-उतना ऊंचा उठता जाता है। विनोबा छोटे थे, घर पर एक भिखारी आया। मां कहती है जा विन्ना भिखारी को एक रोटी दे आ। मां प्यार से विन्ना कहती थी। विनोबा ने कहा—मां! यह हट्टा-कट्टा मुस्टण्डा, कुछ करता नहीं। भूखा बनकर भिखारी बनकर मांगने के लिए आ गया है। उसको क्या अधिकार है मांगने का। मैं उसे नहीं दूंगा। स्वयं कमाता क्यों नहीं। स्वयं कमाए-खाए। मां ने तनिक प्यार से तनिक गम्भीर होकर कहा—विन्ना! तू कहता है इसे मांगने का क्या अधिकार है? तू कहता है स्वयं कमाए-खाए। विन्ना! तब तू बता तुझे मेरे घर पर खाने का अधिकार किसने दिया। कौन-सा अधिकार पत्र लेकर आया कि मेरे घर में खा रहा है। तू कौन सा कमा कर ला रहा है, फिर भी खा रहा है। जा इसको रोटी दे। और

विन्ना के समझ में आया-ओ हो, मैं तो भूल में था। समाज किसी और ही महान् तत्त्व पर टिका हुआ है।

आज कम्युनिस्ट नारा लगाते हैं जो कमाएगा सो खाएगा। कमाने वाला खाएगा। अरे कामरेड, तेरे घर में नन्हा बच्चा पैदा हुआ है। जो कमाएगा सो खाएगा तो वह जब तक न कमाए तब तक उसे मत खिलाना। कमाएगा सो खाएगा। तो वह जब तक न कमाए तब तक उसे मत खिलाना। जब तक वह कमाएगा तब तक तो मर जाएगा। वह कहां से कमाएगा। मां सोचे, मुझे क्या पड़ी है मैं उसे काहे खिलाऊं। उसका क्या अधिकार है? कौन-सा अधिकार पत्र लेकर आया है खाने के लिए? क्यों मैं अपने तन का दूध पिलाऊं। मैं अपने जीवन को निचोड़-निचोड़ कर दूध क्यूं पिलाती रहूं। मां स्वार्थी बन जाए तो जिस दिन मां स्वार्थी बन जाएगी उस दिन सारी मानवता मर जाएगी। एक व्यक्ति भी नहीं बचेगा। इसलिए कमाने वाला खाएगा, यह नहीं। कामरेड की पत्नी ने कहा, मुझे भोजन दो। कमाने वाला खाएगा, कमाती नहीं हो, दिन भर घर पर बैठी रहती है। उसे मत खिलाओ। विधवा बहन है उसे मत खिलाओ, बच्चे को मत खिलाओ। बूढ़े मां-बाप हैं उन्हें मत खिलाओ। कमाने वाला खाएगा यह दृष्टान्त नहीं है। कमाने वाला खिलाएगा। सारे समाज को खिलाएगा। खिलाकर सुख मानेगा। प्रसन्न होगा कि धन्य है मेरी कुछ कमाई समाज के अधिक से अधिक लोगों का कल्याण कर सकी। यह जो भावना है उसकी कमाई धन्य है। इसलिए तन को आहार दो, मन को संस्कार दो। रोज मन को अच्छे संस्कार दो। प्रतिज्ञा करो बंधु मन को अच्छा संस्कार देंगे। मन को भूखा नहीं मारेंगे। मन भूख से तड़प जाएगा, विद्रोही बन जाएगा। यह मालिक का सर्वनाश कर डालेगा, हमारा भी सर्वनाश कर डालेगा। हमारी वह दुर्गति करा देगा। मन का मन पहले ही विद्रोही बना हुआ है। बहुत चंचल भी है, बंदर ही है, उस बंदर को बहुत सम्हाल कर रखो, साध कर रखो, उसको रोज अच्छा संस्कार देकर रखो। तो मन को शुद्ध संस्कार दो, अन्यथा मन अपना तो सर्वनाश करेगा, गलत पथ पर चलकर अपने मालिक को भी गड्ढ़े में गिराएगा। अपनी आत्मा को पतन के गर्त में गिराएगा और बार-बार 84 लाख योनियों में भटकाएगा। अत: मन को अच्छे संस्कार दो और बुद्धि को शुद्ध विचार दो।

बुद्धि हमारी कंगाल है। बुद्धि को हम विचार ही नहीं देते। रोज-रोज धंधा पड़ गया कपड़ा मापने का, सामान तौलने का, बही खाता लिखने का, ऑफिस चलाने का। इससे फुरसत ही नहीं मिलती कि बुद्धि को अच्छा विचार दिया जाए। बुद्धि बेचारी कंगाल है। बुद्धि क्या कहेगी इस मूर्ख के पास क्यों आ गई। यह मूर्ख मुझे कुछ भोजन ही नहीं देता है। तड़पाकर मार दिया मेरे (बुद्धि) को। इसलिए रोज बुद्धि को अच्छे विचार दो।

बुद्धि ही इहलोक के रहस्य खोलने वाली है। आज के ज्ञान-विज्ञान का प्रकाश बुद्धि का ही चमत्कार है। मन से भी बहुत अधिक शक्तिशाली बुद्धि है, जहां मन की भी गति नहीं, पहुंच नहीं, वहां बुद्धि ही कारगर होती है। इहलोक और परलोक को जोड़ने वाली कड़ी भी बुद्धि ही है। अतः बुद्धि को चमकाओ। इसलिए गायत्री मंत्र में भगवान् भास्कर से बुद्धि की शुद्धता, उज्ज्वलता और ज्ञान के लिए प्रार्थना की गई है। इसलिए भारत का प्रत्येक व्यक्ति प्रात:काल उदीयमान सूर्य को जलांजलि देता है। गायत्री मंत्र गाता है और प्रार्थना करता है—हे अनन्त प्रकाशक सूर्य, हे जगत् के आलोककर्ता, हे सहस्ररश्मि सूर्य, हे अनन्त विश्व के प्रकाशक, हे भुवनभास्कर सवितादेव, हे ज्योतिस्वरूप परमेश्वर! हमें ज्ञान दो। हम अनन्त कल्याणकारी तेज का ध्यान करते हैं।

रोज ज्योति का पान करने वाला, रोज ज्योति का स्नान करने वाला व्यक्ति कितना धन्य पुरुष है। जिसकी बुद्धि रोज ज्योति के सरोवर में स्नान करती है, ज्योति का पान करती है, ज्योति में नहाती है तो स्वयं ज्योति ही हो जाती है। शुद्ध हो जाती है। उसकी बुद्धि पराये धन, स्त्री को देखकर डगमगाती नहीं।

मैली बुद्धि, अशुद्ध बुद्धि का ईमान पराये धन, वैभव, स्त्री को देखकर डोल जाता है। बुद्धि के मल से ही पापकार्य में प्रवृत्ति होती है। आज संसार में जितने भी अपराध हैं वह बुद्धि की अशुद्धता के कारण ही हैं। बुद्धि की मंदता, भ्रष्टता और नष्टता के कारण ही सारे संसार में पापकार्य होते हैं। अरस्तू ने मनुष्य की परिभाषा की Man is a rational animal. पशु से मनुष्य को पृथक् करने वाला एक गुण बुद्धि को बताया है। यह अधूरी परिभाषा है। तभी तो मनुष्य तर्कशक्ति का दुरुपयोग करके झूठ को सच और सच को झूठ के रूप में सिद्ध करके पापों एवं अपराधों को प्रश्रय देता है। इसलिए मनुष्य को पशु से पृथक् करने वाले तीन विशेष गुण भारत के ऋषियों ने स्वीकारे हैं—(1) Rationality (2) Morality (3) Spirituality. Animality must be controlled by mentality and mentality by rationality and rationality by morality and morality by spirituality. जो बुद्धि की चालाकी को ही मनुष्यता का मानदण्ड मानते हैं, उसके दो स्तर हैं—एक हैं चतुर चालाक जो दूसरों से ठगे नहीं जा सकते। दूसरे हैं धूर्त जो अपनी बुद्धि की अतिशय चालाकी से दूसरे को ठगते रहते हैं। बीसवीं शताब्दी या आधुनिक पाश्चात्य शिक्षा सभ्यधूर्त पैदा कर रही है। ऊंची से ऊंची शिक्षा पाकर जैसे वकालत की ऊंची से ऊंची शिक्षा पाकर अपराधियों को संरक्षण दे रहा है वकालत धर्म की दुहाई देकर।

लक्ष्मण ने राम से प्रश्न किया—विश्रवा ऋषि का पुत्र होकर, फिर ब्राह्मण, वेदपाठी का मन सोने की लंका देखकर डोल गया, सुन्दर स्त्री को देखकर मन

डोल गया। यह एक ऋषि पुत्र ब्राह्मण एवं वेदपाठी होते हुए भी कैसे सम्भव हुआ? सोने की लंका देखकर, पुष्पक विमान देखकर रावण का मन ललचा गया। असुरों का मन ललचा गया। सोने की लंका कुबेर की थी।

हम लक्ष्मी पूजा में चांदी का सिक्का रखकर पूजा करते हैं। कुबेर की पूजा सोना रखकर करते हैं क्योंकि सोने का अधिपति कुबेर है। वह दक्षिण दिशा का लोकपाल भी है।

सोने की लंका का मालिक कुबेर के होते हुए भी उसे देखकर माल्यवान् का मन डोल गया। कुबेर पर चढ़ाई कर दी। कुबेर ने अपनी रक्षार्थ विष्णु को पुकारा। विष्णु ने सुदर्शन चक्र से माल्यवान् की गर्दन उड़ा दी। तब माल्यवान् का पुत्र माली आया। उसकी भी वही गति की विष्णु ने। तब माली का भाई सुमाली आया। सुमाली पर अस्त्र प्रहार करने के लिए भगवान् विष्णु ने जैसे ही शस्त्र उठाया वैसे ही सुमाली भाग खड़ा हुआ। लंका से सीधे पश्चिम की ओर अफ्रीका का प्रथम देश है सोमालीलैण्ड, वहां पहुंच गया। वहां अपनी बहन कैकसी से सोने की लंका जीतने में मदद मांगी। बहन कैकसी ने कहा, मैं औरत की जात क्या कर सकती हूं! तुम अपने बाप और भाई को मरवाकर कायर की तरह भागकर आ गए और मुझसे कहते हो लंका जीतो। सुमाली ने कहा हम युद्ध से लंका नहीं जीत सकते। हम विष्णु के सुदर्शन चक्र का ताप नहीं सह सकते। पर युक्ति से, उत्तराधिकार के नियम से जीत सकते हैं। ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य है, पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा और विश्रवा के पुत्र हैं कुबेर। कुबेर के पिता विश्रवा अभी जीवित हैं। तुम उनके पीछे छाया की तरह लगकर उनको अपनी सेवा से संतुष्ट कर उनसे संतान प्राप्त कर लो तो वह संतान उत्तराधिकार के नियम से लंका की अधिकारी बन जाएगी।

कैकसी विश्रवा के पीछे छाया की तरह पड़ गई। विश्रवा जहां भी जायें, पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण वह भी पीछे-पीछे जाए। पूजा की सामग्री, पुष्प, लकड़ी सारी व्यवस्था कर देवे। 12 वर्ष पश्चात् प्रयागराज में विश्रवा ऋषि ने पूछ ही लिया तुम छाया की तरह क्यों पीछे पड़ी हो? यज्ञ के लिए समिधायें आदि लाने का सेवा कार्य क्यों करती हो, मेरे पीछे क्यों पड़ी हो? छाया की तरह मेरे पीछे-पीछे घूमती हो। तेरा-मेरा क्या सम्बन्ध है? तो कैकसी ने आंखों में अश्रु भरकर कहा कि आप यह सम्बन्ध माने न माने, पर मैंने आपको मन ही मन पति रूप में वरण कर लिया है। आपका पिण्ड छोड़ने वाली नहीं हूं। विश्रवा को दया आ गई। उस राक्षस कन्या से विश्रवा ऋषि के तीन पुत्र पैदा हुए। एक हुआ सतोगुणी पुत्र विभीषण, एक रजोगुणी पुत्र रावण और एक तमोगुणी पुत्र कुम्भकर्ण। तब कैकसी

ने पुत्रों को कहा सोने की लंका पाना चाहते हो तो तपस्या करो। पुरुषार्थ करो। प्रयत्न के द्वारा कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

तीनों ने तप करके वर प्राप्त किया। रावण ने विभीषण से पूछा तुमने क्या वर मांगा। उसने कहा मेरी बुद्धि अधर्म में न लगे यह वर मांगा। तब रावण ने धिक्कारा कि हम राक्षस कुल के असुर हैं। असुरों का काम ही अधर्म करना है। असुरों का जन्म ही अधर्म के लिए हुआ है। फिर हम धर्म से थोड़े ही लंका प्राप्त कर सकते हैं। तुम मेरे लिए बेकार हो। फिर कुम्भकर्ण से पूछा तुमने भी तपस्या की है। उसने कहा—मैं मांगना तो चाहता था इन्द्रासन पर थोड़ा नशे में होने के कारण इन्द्रासन के स्थान पर निद्रासन मांग लिया। तब रावण ने कहा तुम भी बेकार हो।

फिर हम देखते हैं रावण की ललचाई दृष्टि सोने की लंका पर जाती है और अपने भाई कुबेर को वहां से खदेड़ देता है। फिर सीता माता पर नजर जाती है तो उस पर ललचा जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं रावण ब्राह्मण, ऋषिपुत्र एवं वेदपाठी होते हुए भी बुद्धि का मलिन था।

अतः तन को शुद्ध आहार दो
मन को शुद्ध संस्कार दो
और बुद्धि को शुद्ध विचार दो।

बुद्धि को नित्य पवित्र विचारों से धोओ। उसे नित्य प्रार्थना, उपासना, ध्यान, धारणा, भक्ति के अमृतजल में स्नान कराओ। इस प्रकार आत्मा को ज्योति की प्रार्थना से ज्योतिष्मान बनाओ। इन सब उपायों से मन-बुद्धि का परिष्कार करो। जप, तप, भक्ति, कर्मयोग, ध्यान, प्राणायाम आदि सारी साधनायें सब मन-बुद्धि की शुद्धता के लिए है। इन सबसे मन-बुद्धि शुद्ध हो जाएगी। शुद्ध मन-बुद्धि ही परमात्मा है। शुद्ध मन शुद्ध बुद्धि में आत्मज्ञान, आत्मप्रकाश, स्वप्रकाश, ब्रह्मप्रकाश, ईश्वरीय ज्ञान प्रकाशित होता है। इस प्रकार तन को शुद्ध आहार, मन को शुभ संस्कार एवं बुद्धि को शुभ विचार देकर आत्मा को प्रकाशित कर अपने जीवन के साथ ही साथ देश व समाज के जीवन को धन्य-धन्य कर दो। पहले अपने अन्दर आत्मा का प्रकाश होता है फिर बाहर दृष्टि जाने पर सर्वत्र परमात्मा ही परमात्मा का दर्शन होता है। तुलसीदासजी ने कहा—

सीयराम मय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

तब कोई पराया बचता ही नहीं, कोई गैर बचता ही नहीं। तब किसके प्रति अन्याय करोगे, किसको ठगोगे या लूटोगे या अत्याचार करोगे। मनुष्य का स्वभाव है अपने प्रति कोई अत्याचार नहीं करता। इस प्रकार अपने जीवन में एवं राष्ट्र जीवन में राम राज्य की स्थापना हो जाती है।

यही मानव जीवन की सार्थकता है। अन्यथा मानव जीवन व्यर्थ है। समाज एवं संसार के लिए बोझ है, भार है। इससे पशु जीवन अच्छा जो प्रकृति से नियंत्रित होता है और संसार का भार तो नहीं बनता, बोझ तो नहीं बनता और न समाज में आतंक का कारण बनता है। क्योंकि वह प्रकृति से नियंत्रित है उसका जीवन स्थिर जीवन है। जबकि मनुष्य बहुत अर्थों में स्वतंत्र है और इसलिए उसका जीवन स्थिर नहीं है। वह चाहे तो अपना सर्वोच्च विकास कर सकता है और वह चाहे तो सर्वोच्च पतन भी कर सकता है।

आज व्यक्तिगत जीवन में, सामाजिक जीवन में, राष्ट्रीय जीवन में समस्या इसलिए निर्माण हुई क्योंकि आधुनिक समय में शरीर से परे मन, बुद्धि एवं आत्मा का विचार ही नहीं करते। हम अपने वास्तविक स्वरूप शुद्ध, बुद्ध आत्मस्वरूप को भुला देते हैं और शरीर को ही सर्वस्व समझकर उसके पोषण में उसके सुख भोग में लग जाते हैं। तभी व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन एवं राष्ट्रीय जीवन में समस्या उत्पन्न होती है और व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक जीवन एवं राष्ट्रीय जीवन का अध:पतन होता है।

प्राचीन भारत शरीर से परे मन, बुद्धि एवं आत्मा का विचार करके उसके अनुसार स्वयं के जीवन का निर्माण करने के कारण ही ज्ञान की दृष्टि से जगद्गुरु एवं धन की दृष्टि से सोने की चिड़िया और सारे विश्व को मार्गदर्शन देने में समर्थ हुआ और सारे विश्व ने भी हमारा मार्गदर्शन पाकर अपने को धन्य-धन्य अनुभव किया था। अत: अपने देश को गौरवान्वित करने के लिए पुन: इसी मार्ग पर चलना होगा और वर्तमान में भी जो-जो इस पथ पर चला है जैसे स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, रमण महर्षि आदि ने पुन: भारत को विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित किया। अत: हम भी इस पथ के पथिक बनकर पुन: स्वयं के जीवन एवं राष्ट्र के जीवन का निर्माण कर स्वयं के जीवन को गौरवान्वित कर राष्ट्र जीवन को भी गौरवान्वित कर सकेंगे।

मेरी दृढ़ मान्यता है कि हमारी संस्कृति के पास जितने समृद्ध भण्डार पड़े हैं उतने किसी के पास नहीं हैं। हमने अपनी अनादि संस्कृति को पहचाना ही नहीं है। हम अगर संस्कृति के अनुरूप नहीं जीये तो एक समाज के रूप में हम आत्महत्या की ओर अग्रसर होंगे।

—गांधीजी

गीता का विदेशों में प्रभाव

गीता विश्व के अध्यात्म रत्नों की वह अलौकिक रत्न मंजूषा है जिसमें एक विचार रत्न की पावन प्रभा पर विश्व का धार्मिक एवं दार्शनिक वाङ्मय न्योछावर हो जाय। गीता के विषय में स्वयं गीतोपदेश में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—

गीता मे 'हृदयंपार्थ' गीता मे 'शास्त्रमुत्तमम्'

अर्थात् हे पार्थ! गीता मेरा सर्वोत्तम शास्त्र है, इतना ही नहीं यह मेरा साक्षात् हृदय ही है।

कुरुक्षेत्र की रणस्थली में अर्जुन के धर्मयुद्ध से लेकर आधुनिक काल में लोकमान्य तिलक, खुदीराम बोस, सुभाषचन्द्र बोस आदि के स्वातंत्र्य युद्ध तक, भगवान् वेद व्यास के वेदांत दर्शन से लेकर योगीराज अरविन्द के योग दर्शन तक, शंकराचार्य जैसे भारतीय महामनीषी से लेकर आल्डुअस हक्सले (Alduas Haxley) जैसे पाश्चात्य विचारक तक गीता के शाश्वत संदेश ने सभी कर्म वीरों, धर्म संस्थापकों एवं विचार सृष्टाओं को चमत्कृत किया है। भारतवासियों की गीता भक्ति तो स्वाभाविक एवं सर्वविदित ही है किन्तु विधर्मियों एवं विदेशियों की गीता के प्रति अलौकिक निष्ठा गीता की सार्वभौमिकता का अकाट्य प्रमाण है।

लंका, बर्मा, थाईदेश, कम्बुज, लवदेश, मलाया, सिंगापुर आदि देशों में सर्वत्र भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर तथा गीता के सत्तर भाषाओं में अनुवाद प्रचारित हैं। कम्बुज में संसार का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर है अंकुटबार।

प्रसिद्ध दर्शन विद्वान श्री कैखुशस जे. दस्तूर का कथन है—गीता केवल हिन्दुओं का ही नहीं अपितु संसार की जातियों की धर्म पुस्तक है। गीता की एक-एक पंक्ति, एक-एक शब्द पवित्र विचारों से सुरक्षित है। आध्यात्मिकता इसमें एक छोर से दूसरे छोर तक स्वर्ण सूत्र की तरह ओत-प्रोत है। गीता को यदि दिव्य ज्ञान की खान कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

प्रख्यात फारसी चिन्तक प्रोफेसर फिरोज कावस जी दावर ने लिखा है—यह भी दिखता है कि अन्ततोगत्वा विज्ञान धर्म का बाधक न होकर साधक ही होगा और धर्मोन्माद के स्थान पर वास्तविक विश्वधर्म की प्रतिष्ठा होगी जिसमें सर्वधर्म समान रूप से योग देंगे। उस समय मानव मात्र के लिये जब एक अखिल विश्व धर्म की

प्राण प्रतिष्ठा होने लगेगी तब हमें एक मात्र गीता का ही सहारा रह जाएगा क्योंकि यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि विश्व धर्म के मौलिक प्राण तत्त्वों का जितना सुन्दर समावेश गीता में है उतना किसी भी अन्य धर्म के किसी भी धर्म ग्रंथ में नहीं है।

सम्राट् अकबर के काल में प्रसिद्ध फारसी विद्वान फैजी ने गीता का अनुवाद किया। लाहौर के ख्वाजा दिलमुहम्मद ने गीता का उर्दू पद्य में अनुवाद करते हुए लिखा—

मुसीबत से सबको बचाती है गीता
पायमे सदाकत सुनाती है गीता
जो गिरते हैं गलती से इस सरजमीं पर
उठाकर फलक पर बिठाती है गीता।

चार्ल्स विल्किज ने गीता का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद किया जिसकी भूमिका में गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने लिखा—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के ध्वस्त हो जाने के उपरान्त भी भारतीय दर्शन के अमर गायक पूजे जाते रहेंगे। इस गीता से अमरीका का इमर्सन तथा उनके गुरु तुल्य मित्र थोरो बड़े प्रभावित हुए। थोरो कहता है—मैं प्रतिदिन प्रातःकाल गीता के अमृतकुण्ड में स्नान करता हूँ। इमर्सन जब इंग्लैण्ड में कार्लायल से मिलने गया तो दोनों ने परस्पर एक-दूसरे को गीता भेंट की।

इंदोनीजिया की स्वाधीनता के अवसर पर लोगों ने हाथों में गीता लेकर स्वाधीनता की रक्षा की शपथ ली थी तथा राष्ट्रपति सुकर्ण ने कहा—हममें अर्जुन का बल और कृष्ण की बुद्धि है।

जापान में शिन्तो धर्म पर भी गीता का प्रभाव है। विगत महायुद्ध में जापान का एक पनडुब्बी चालक जब युद्ध में बलिदान हेतु जा रहा था तो एक भारतीय नेता के पूछने पर उसने जेब से गीता की पोथी निकाल कर दिखाई और बताया—यह अमरता का रक्षा कवच है। जब तक हम इसे जानते हैं, हम मृत्यु नाम की किसी वस्तु को जानते नहीं।

चीन के कन्फ्यूशियस धर्म एवं ताओ धर्म पर भी गीता के सत्-विवेक तथा शासक की कार्यक्षमता के समन्वय का संदेश है। चीन में प्रथम शती में महायान बौद्ध धर्म के साथ गीता भी पहुँची तथा चीनी भाषा में अनूदित हुई।

जर्मन दार्शनिक शोपनहावर तथा काण्ट के दर्शन पर गीता के कर्तव्यवाद या निष्काम कर्मयोग की स्पष्ट छाप है। अमरीका के क्रिस्टोफर ईश्रवुड को गीता के तत्त्वज्ञान ने आत्महत्या से बचाया तथा हक्सले ने गीता को सच्चे अर्थ में 'शाश्वत दर्शन' की संज्ञा दी। यह एक अत्यंत विस्मयकारी तथ्य है कि 16 जुलाई 1945 को (जल) अमरीका के न्यू मैक्सिको रेगिस्तान में प्रथम अणुबम का परीक्षण

किया जा रहा था तो आविष्कारक राबर्ट ओपेनहीमर ने ज्यों ही आकाश में अनन्त सूर्यों के प्रकाश के समान प्रचण्ड अग्नि ज्वालाओं को बम के विस्फोट के साथ ही देखा तो उन्हें गीता के विराट रूप दर्शन की स्मृति हो आई और वे जेब से गीता निकालकर एकादश अध्याय का श्लोक गाने लगे—

दिवि सूर्य-सहस्रस्य, भवेद्-युग-पदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्-भासस्-तस्य महात्मनः।11/12

कालोऽस्मि लोकक्षय कृत्प्रवृद्धो
लोकान् समाहर्तु-मिह प्रवृत्तः।11/32

गीता की विविध क्षेत्रों में प्रतिष्ठा

विश्वमनीषा का श्रेष्ठ सम्पद् श्रीमद्भगवत्गीता भारतीय शाश्वत संस्कृति का निर्यास (रस, नवनीत)। जगत् के सारस्वत समाज को भारत का श्रेष्ठ दान यह सद्ग्रंथ। बहुदिन पहले प्रतीचच्भूखण्डे अंग्रेज मनीषी कार्लाइल मार्किन मनीषी इमर्सन के साथ साक्षात् के समय गीता उपहार के माध्यम से परस्पर सौहार्द को सुदृढ़ करते हैं। विश्व के समुन्नतषटत्रिंशत भाषा में इस ग्रंथ का प्रायः तीन सहस्र संस्करण हुआ है। विश्व के इतिहास में यथार्थ गण साहित्य यह गीता है। पण्डित-मूर्ख, धनी-दरिद्र, स्त्री-पुरुष, शिक्षक-सैनिक, कर्मी-व्यवसायी, छात्र-श्रमिक, त्यागी-भोगी सकल के पास इस ग्रंथ का आवेदन (या वक्तव्य) है। निर्जन गुहावासी, निष्किन्चन तपस्वी से राजप्रासादवासी-धनी, सर्व कर्म-त्यागी साधु से लेकर सदा कर्मनिष्ठ राजनीतिक नेता पर्यन्त सभी जीवन का पाथेय इस गीता से प्राप्त करते हैं। गीता मानव समाज का ज्ञान-कल्पतरु। इसलिए युग-युग से गीता के ऊपर रचित हुआ है असंख्य भाष्य। मनीषी द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर गीता को बोलते हैं भारत के कुटीर का बिना तेल का प्रदीप। महात्मा गांधी के मत में गीता है शान्ति एवं शक्तिप्रदायनी माता। अध्यात्म जगत् में गीता की साधना सुविदित है। किन्तु देश के राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम एवं आन्तर्जातिक मैत्री साधना में गीता की अनन्य असाधारण भूमिका अविस्मरणीय है। गीता के निष्काम कर्मयोग, आत्म समर्पण योग आत्मतत्त्व एवं स्थितप्रज्ञत्व के आदर्श के द्वारा भारत के स्वाधीनता संग्राम में मुक्तियोद्धाओं को उद्बुद्ध किया था। भारत का प्रायः सकल विप्लव का अवश्य पाठ्यग्रंथ था यह गीता। पुनः अहिंस्र संग्रामीगण को भी गीता की वाणी से मिली

है आदर्श की प्रेरणा। सहिंस्र एवं अहिंस्र भारत के मुक्तिसंग्राम के उभय पथ के पथिकों के पथ का पार्थक्य रहने से भी लक्ष्य एक, वैसी पाथेय भी एक और वह था श्रीमद्भगवत्गीता? तभी विप्लवी योगी ऋषि अरविन्द, चरमपंथी नेता लोकमान्य तिलक, पुनः अहिंसा संग्रामी महात्मा गांधी, भूदान आन्दोलन के प्रवर्तक निरीह विनोबा भावे गीता का प्रवचन के लिये समुत्सुक रचना की है। स्व-स्व आदर्श के आलोक में गीता का विशाल भाष्य। बाल्यावस्था से गीताध्यायी—महासंग्रामी नेताजी सुभाषचन्द्र कांग्रेस के नेता के हिसाब से कारागार में सहकर्मी तरुण गणों को नित्य गीता पाठ के लिये प्रवर्तना देते हैं। पुनः आजाद हिन्द फौज के महानायक रूप में रणक्षेत्र में बमवर्षण के बीच में पाकेट में एक छोटी गीता आलेख्यधृता माता कालिका एवं तुलसी मालिका। खुदीराम, कन्हाईलाल, विनय-बादल-दिनेश, प्रफुल्ल प्रभृति दधीचि के दल में एवं जेल में गीता का नित्यपाठ करते थे। अवेस्ता, बाइबिल, कुरान, त्रिपिटक आदि इस प्रकार प्रत्यक्षरूप से देश के राष्ट्रीय मुक्तिसंग्राम में मरणपण सैनिकों को प्रबुद्ध किया या नहीं, जानता नहीं। लेकिन इतना बोलता हूँ कि गीता सिर्फ धर्म ग्रंथ नहीं है—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा चतुवर्ग तथा सामग्रिक जीवन पथ का समयसारणी तथा टाइम-टेबुल सकल पथ के यात्रियों का अपरिहार्य ग्रंथ। सिर्फ व्यक्तियों या राष्ट्र विशेष का नहीं, समग्र विश्व का संकट निरसन के लिए अपरिहार्य ग्रंथ है। विश्व शांति एवं विश्व कल्याण की दृष्टि से राष्ट्रसंघ (U.N.O.) की प्रतिष्ठा। उसके उद्देश्य को लेकर राष्ट्रसंघ के प्राक्तन सेक्रेटरी जेनरल स्वर्गत दयाग् हयामारशिल्ड् बोलते हैं—फलाकांक्षा करके कर्म करने की अपेक्षा फलाशा त्याग कर कर्म करना बहुत अच्छा है। यह उपदेश सभी युग में सभी दर्शन की चूडान्त कथा है। राष्ट्रसंघ के प्रबल प्रचेष्टा से हम लोग यदि गीता का यह उपदेश अनुसरण कर चल सके तभी हम लोग सुखी होंगे।

The Bhagavad Gita echoes on experience of all ages and all philosophies when it says-work with anxiety about results is far inferior to work without such anxiety, an calm self-surrender. These words expressed deep faith and we will be happy if we can make that faith ours in all our efforts.

जर्मनी के आणविक वैज्ञानिक ओपेनहाइमर ने गीता का श्लोक पाठ करके लब्ध आणविक गवेषणा की घोषणा की। नोबेल पुरस्कार प्राप्त जीव विज्ञानी आल्डुअस हक्सले ने गीता का अनुवाद किया है और स्वदेशी गणितज्ञ नारलीकर ने गीता कंठस्थ की है। प्रत्येक मनुष्य जीवन संग्राम में, रणक्लान्त सैनिक, अर्जुन के समान विषाद ग्रस्त। विषाद से मुक्ति सभी का काम्य है। अर्जुन को उपलक्ष करके शाश्वतकाल के निखिल मानव को विषाद के हाथ से मुक्ति तथा मोक्ष के लिए योग मार्ग का भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में प्रदर्शन किया है।

आओ! शिष्य बनें

भारत विश्वगुरु था। इसकी परा-अपरा विद्या को प्राप्त करने धरती के कोने-कोने से जिज्ञासु-मुमुक्षु इस पुण्य-भूमि में शिष्य-भाव से आते थे। इसी भूमि से ज्ञान-दीप ले त्यागी-तपस्वी-विद्वान् साधक, आचार्य विदेशों में जाते और ज्ञान-प्रकाश से वहाँ की संस्कृति के अँधियारे को दूर करते थे। इन ज्ञान-वितरकों के प्रेरक ऋषि थे, आत्मज्ञान ही इनका बल था, प्रभुप्रेम ही इनकी गति थी।

कालान्तर में भीषण युद्ध हुए—गृहयुद्ध भी व बाह्य आक्रमण भी। फलतः भारत की क्षात्र-शक्ति निर्बल हुई, बुद्धि-शक्ति अरक्षित हुई, अर्थ-तन्त्र ध्वस्त हुआ, लोक-जीवन दमित व अस्त-व्यस्त हुआ। ऐसे जर्जरित राष्ट्र का परतन्त्र होना स्वाभाविक था। भारत का स्थूल कलेवर पराजित हुआ था, मन व आत्मा नहीं। इसके स्थूल कलेवर में भी स्वातन्त्र्य-रक्त अल्पांश में प्रवाहित होता रहा था। सत्संग-स्वाध्याय, पर्व-परिवार, तीर्थ-तीर्थाटन आदि सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा यह भारतीय संस्कृति प्राणन करती रही, मरी नहीं। किन्तु भीषण अत्याचारों के कारण इसका आत्मगीत दिशा-दिशा में मुखरित नहीं हुआ। कुछेक विभूतियों ने आविर्भूत होकर इसके आत्म-दर्शन का उद्‌घोष किया, किन्तु उसका संचार इसके सर्वांग में न हो सका। दीर्घ परतन्त्रता के पश्चात् प्राप्त तथाकथित स्वतन्त्रता भी दिखावे की सिद्ध हुई। इसकी आत्मा अभी भी मुक्त साँसों के लिये छटपटाती है। इसके पूत अभी भी याचक हैं, उच्छिष्टभोजी हैं, अन्धानुकरण में रत हैं। इस आन्तरिक परतन्त्रता से मुक्त होना ही होगा, क्योंकि इस संस्कृति का स्वधर्म ही आत्मोन्मुखी है, ईश्वरोन्मुखी है। इसके स्वभाव में चारों वर्णों का सामरस्य है। अपने स्वभाव की विरुद्ध दिशा में बहना इसके लिये भयावह है। किन्तु यह अपनी स्वदिशा में गतिमान कैसे हो? कैसे यह अपने विश्वगुरु पद को प्राप्त करे?

यह संस्कृति अपने गौरवपूर्ण पद को प्राप्त कर सके—इसके लिये प्रत्येक भारतीय को अपने स्वधर्म को पहचानना होगा। उसको लेकर उसे अपनी संस्कृति से एक लय में रहते हुए स्वकर्म करना होगा। उस स्वकर्म से उसे जगद्‌गुरु की शिष्यभाव से अर्चना करनी होगी। यों शिष्यभाव की अनगिन धाराएँ मिल कर एक प्रबल पवित्र प्रवाह बनेगा और तब फिर यह संस्कृति विश्वगुरु रूपिणी गंगा होगी, सृष्टि-मूल के गोमुख को पूर्णानन्द उदधि से जोड़ने वाली, मानव मात्र को तारने वाली भागीरथी होगी।

आओ! शिष्य बनें।

स्वात्म-संस्कृति के उन्नयन के लिये भगीरथ-प्रयास करें।

—परम पूज्य गुरुदेव स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज